Postal Regn No./C.G/RYP DN/48/2022-24

website- www.dvpnews.in

रायपुर (छ.ग.) एवं झांसी (उ.प्र.) से एक साथ प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी पत्र

दैनिक विश्व परिवार

● अंक : 154 ● वर्ष : 12 ● रायपुर, शुक्रवार 06 दिसम्बर 2024 ● पृष्ठ : 08 ● मूल्य : 3 रूपए ● संस्थापक : कीर्तिशेष- श्री कैलाश चन्द्र जैन

सुविचार

धर्म वह माना जाता है जिसके द्वारा पाप का नाश हो।

What destroys sin is religion.

आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

देवेंद्र फडणवीस ने ली महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री पद की शपथ, एकनाथ शिंदे और अजित पवार बने उपमुख्यमंत्री

मुंबई (आरएनएस)। भाजपा नेता देवेंद्र फडणवीस ने महाराष्ट्र के नए मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ले ली है। इसी के साथ वे तीसरी बार राज्य के मुख्यमंत्री बन गए हैं। फडणवीस के साथ शिवसेना के एकनाथ शिंदे और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के अजित पवार ने उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली है। अजित छठी बार उपमुख्यमंत्री बन गए हैं।इन तीनों के अलावा आज किसी को भी मंत्री पद की शपथ नहीं दिलाई गई।

मुंबई के आजाद मैदान में हुए समारोह में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, भाजपा अध्यक्ष जेपी नड्डा के अलावा बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार, आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू समेत 2,000 वीआईपी शामिल हुए।इसके अलावा सभी बड़े उद्योगपति, फिल्मी सितारे, साधु-संत और लाडकी बहना योजना के लाभार्थी भी आमंत्रित किए गए।पार्टी कार्यकर्ताओं समेत करीब 40,000 अन्य लोगों ने भी शिरकत की। फडणवीस पढ़ाई के दौरान ही अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद में शामिल हो गए थे।केवल 22 साल की उम्र में फडणवीस नागपुर नगर पालिका के सबसे युवा पार्षद बन गए थे। 1997 में 27 साल के फडणवीस नागपुर के सबसे युवा महापौर बने।1999 में उन्होंने पहला विधानसभा चुनाव जीता था। उसके बाद से लगातार 5 बार वे विधानसभा पहुंचे हैं।2014 में वे पहली बार, 2019 में दूसरी बार और अब तीसरी बार मुख्यमंत्री बने हैं।

शपथ ग्रहण से पहले फडणवीस कई मंदिरों में दर्शन करने पहुंचे। सबसे पहले वे प्रसिद्ध सिद्धिविनायक मंदिर पहुंचे और बप्पा के दर्शन किए। मंदिर प्रशासन ने फडणवीस को सिद्धिविनायक की मूर्ति भी उपहार में दी।इसके बाद फडणवीस कुछ लोगों के साथ मुंबा देवी मंदिर पहुंचे और दर्शन किए।शपथ से पहले फडणवीस ने गाय की पूजा भी की। इसके लिए उनके आवास पर 2 गायें भी लाई गईं।

शिवसेना नेता संजय शिरसाट ने कहा, एकनाथ शिंदे शपथ लेने के बाद गृह मंत्री अमित शाह से मिलेंगे और गृह मंत्रालय और अन्य विभागों पर चर्चा होगी।बता दें कि शिंदे कथित तौर पर गृह मंत्रालय को लेकर अड़े हुए हैं। शपथ ग्रहण से कुछ देर पहले तक उनकी नाराजगी की खबरें थीं।विभागों के बंटवारे को लेकर फडणवीस ने भी उनसे मुलाकात की थी।माना जा रहा है कि शाह से मुलाकात में मंत्रालयों पर सहमति बन सकती है।

महाराष्ट्र विधानसभा चुनावी नतीजों में शिवसेना, भाजपा और अजित पवार के नेतृत्व वाली एनसीपी के महायुति गठबंधन ने 235 सीटें जीती हैं।भाजपा को 132, शिवसेना को 57 और एनसीपी को 41 सीटें मिली हैं। गठबंधन में शामिल छोटी पार्टियों ने भी 5 सीटों पर जीत हासिल की है।वहीं, विपक्षी महाविकास अघाड़ी में शिवसेना (उद्धव ठाकरे) को 20, कांग्रेस को 16 और एनसीपी (शरद पवार) को 10 सीटें मिली हैं।

इसरो की अंतरिक्ष में बड़ी छलांग, लॉन्च किया ईएसए का प्रोबा-3 मिशन

नई दिल्ली (आरएनएस)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने गुरुवार को यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) के प्रोबा-3 मिशन लॉन्च कर दिया है।आंध्र प्रदेश के श्रीहरिकोटा से इस विशेष अंतरिक्ष मिशन को इसरो के पोलर सैटलाइट लॉन्च व्हीकल (पीएसएलवी) की मदद से शाम 04:04 बजे लॉन्च किया गया है। प्रोबा-3 मिशन का उद्देश्य सूर्य के कोरोना का अध्ययन करना है। इस मिशन को बीते दिन ही लॉन्च किया जाना था, लेकिन तकनीकी समस्या आने के कारण इसे एक दिन टाल दिया गया। प्रोबा-3 मिशन में कोरोनाग्राफ और ऑकुल्टर नामक 2 सैटेलाइट्स शामिल हैं। इनमें से एक सैटेलाइट सूर्य के कोरोना का अध्ययन करेगा, जबकि दूसरा सैटेलाइट कोरोनाग्राफ की सहायता से सूर्य के बाहरी वातावरण का स्पष्ट रूप से अध्ययन करने में मदद करेगा। इन दोनों सैटेलाइट्स के बीच केवल 150 मीटर की दूरी होगी, जो इस मिशन की विशेषता है। यह सटीक उड़ान तकनीक को प्रदर्शित करेगा।

प्रधानमंत्री मोदी और भूटान नरेश की बैठक, भारत-नेपाल द्विपक्षीय संबंधों पर की चर्चा

नई दिल्ली (आरएनएस)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भूटान के आर्थिक विकास के लिए भारत की मजबूत प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने गुरुवार को नई दिल्ली में भूटान नरेश जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक के साथ बैठक के दौरान पड़ोसी देश को उसकी 13वीं पंचवर्षीय योजना अवधि के लिए भारत के डेवलपमेंट सपोर्ट को दोगुना करने पर प्रकाश डाला।

भूटान नरेश के साथ अपनी बैठक के बाद प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर लिखा, भारत में भूटान के महाराज और महारानी का स्वागत करते हुए मुझे बहुत खुशी हो रही है। भूटान की प्रगति और क्षेत्रीय विकास के लिए महामहिम जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक के दृष्टिकोण की मैं सराहना करता हूं। हम भारत और भूटान के बीच अद्वितीय और स्थायी साझेदारी को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

प्रधानमंत्री कार्यालय ने विस्तृत जानकारी देते हुए बताया कि पीएम मोदी और भूटान नरेश ने द्विपक्षीय रिश्तों की शानदार स्थिति पर संतोष व्यक्त किया, जिसमें डेवलपमेंट सपोर्ट, स्वच्छ ऊर्जा साझेदारी, व्यापार और निवेश, अंतरिक्ष-टेक्नोलॉजी सहयोग और लोगों के बीच संबंध शामिल हैं।

प्रधानमंत्री कार्यालय के बयान के मुताबिक नेताओं ने दोनों देशों के बीच आर्थिक संपर्क बढ़ाने में हुई प्रगति की समीक्षा की। इसमें बताया गया कि भूटान नरेश ने भूटान के प्रति दृढ़ समर्थन के लिए प्रधानमंत्री और भारत की जनता के प्रति आभार व्यक्त किया। प्रधानमंत्री कार्यालय ने कहा, बैठक में भारत और भूटान के बीच नियमित उच्च स्तरीय आदान-प्रदान की परंपरा को रेखांकित किया गया, जो आपसी विश्वास, सहयोग और गहन समझ की भावना को दर्शाता है, जो दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय संबंधों का आधार है।

जिग्मे खेसर नामग्याल वांगचुक और भूटान की रानी जेटसन पेमा वांगचुक का स्वागत करते हुए, पीएम मोदी ने मार्च 2024 में अपनी राजकीय यात्रा के दौरान भूटान की सरकार और लोगों की असाधारण गर्मजोशी से भरी मेजबानी को भी याद किया। चर्चा के बाद प्रधानमंत्री ने नेपाल के महाराजा और महारानी के सम्मान में दोपहर के भोजन का आयोजन किया।

मुख्यमंत्री साय ने देवेंद्र फडणवीस को दी महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने पर हार्दिक बधाई

रायपुर (विश्व परिवार)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री के रूप में शपथ लेने पर श्री देवेंद्र फडणवीस को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दी। उन्होंने इसके साथ ही उपमुख्यमंत्री श्री एकनाथ शिंदे और श्री अजीत पवार को भी बधाई दी। उन्होंने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के कुशल मार्गदर्शन और मुख्यमंत्री श्री देवेंद्र फडणवीस तथा उपमुख्यमंत्री द्वय श्री एकनाथ शिंदे और श्री अजीत पवार के दूरदर्शी नेतृत्व में महाराष्ट्र की विकास यात्रा अनवरत जारी रहेगी। डबल इंजन की सरकार दोगुनी ऊर्जा से महाराष्ट्र की प्रगति को नई ऊंचाई पर ले कर जाएगी।

हेमंत सरकार का कैबिनेट विस्तार : 11 मंत्रियों ने ली शपथ, छह नए चेहरे

रांची (आरएनएस)। झारखंड की हेमंत सोरेन सरकार का गुरुवार को कैबिनेट विस्तार हुआ जिसमें 11 मंत्रियों ने शपथ ली। राज्यपाल संतोष गंगवार ने राजभवन में आयोजित समारोह में सभी नवनियुक्त मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई।

इन मंत्रियों में झारखंड मुक्ति मोर्चा से दीपक बिरुआ, रामदास सोरेन, हफीजुल हसन, सुदिव्य कुमार सोनू, योगेंद्र महतो और चमरा लिंडा शामिल हैं। कांग्रेस से दीपिका पांडेय सिंह, इरफान अंसारी, राधाकृष्ण किशोर और शिल्पी नेहा तिर्की को मंत्री बनाया गया है जबकि राष्ट्रीय जनता दल से संजय प्रसाद यादव को कैबिनेट में जगह दी गई है। इन मंत्रियों से पहले राज्यपाल ने झामुमो के वरिष्ठ विधायक स्टीफन मरांडी को विधानसभा के प्रोटेम स्पीकर के तौर पर शपथ दिलाई गई। राजभवन के अशोक उद्यान में आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में सीएम हेमंत सोरेन, कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव और झारखंड प्रभारी गुलाम अहमद मीर, राष्ट्रीय जनता दल के राष्ट्रीय महासचिव जयप्रकाश नारायण यादव सहित कई महत्वपूर्ण लोग उपस्थित रहे।

पारदर्शिता, निष्पक्षता और बेहतर प्रबंधन से कराएं स्थानीय निर्वाचन : कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह

कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने ली स्थानीय निर्वाचन की समीक्षा बैठक

रायपुर (विश्व परिवार)। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ. गौरव सिंह ने आज कलेक्टोरेट परिसर स्थित रेडक्रास सभाकक्ष में नगर पालिका एवं त्रिस्तरीय पंचायत के आम निर्वाचन 2024-25 की तैयारियों की समीक्षा बैठक ली। निर्वाचन कार्य के लिए रिटर्निंग ऑफिसर, सहायक रिटर्निंग ऑफिसर, नोडल एवं सहायक नोडल अधिकारियों की नियुक्ति की गई है। बैठक में रिटर्निंग ऑफिसर, सहायक रिटर्निंग ऑफिसर, नगरीय निकाय के लिए नोडल एवं सहायक नोडल अधिकारी शामिल हुए। कलेक्टर डॉ. सिंह ने स्थानीय निर्वाचन की समीक्षा के दौरान कहा कि नगरीय निकाय एवं त्रिस्तरीय पंचायत आम निर्वाचन में सावधानियां बरतने के साथ गंभीरता बरतना बहुत ही आवश्यक है। कलेक्टर ने कहा कि रिटर्निंग एवं सहायक रिटर्निंग ऑफिसर दायित्व का निर्वहन बेहतर तरीके से करें। निर्वाचन संबंधी प्रशिक्षण बेहतर तरीके से लें। कलेक्टर डॉ. सिंह ने कहा कि निर्वाचन ड्यूटी के दौरान प्रत्येक अधिकारी, कर्मचारी पारदर्शिता एवं निष्पक्षता के साथ निर्वाचन कराएं। कलेक्टर डॉ. सिंह ने कहा कि निर्वाचन ड्यूटी में संलग्न अधिकारी बूथ का निरीक्षण करें। मतदान केंद्र में बिजली, पानी एवं बुनियादी सुविधाएं सुनिश्चित की जाएं। कलेक्टर डॉ. सिंह ने कहा कि निर्वाचन कार्य के दौरान प्रत्येक अधिकारी एवं कर्मचारी सरलता एवं सहज व्यवहार रखें। इस अवसर पर नगर निगम आयुक्त श्री अबिनाश मिश्रा, जिला पंचायत सीईओ श्री विश्वदीप, अपर कलेक्टर श्री कीर्तिमान सिंह राठौर, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री उमाशंकर बंदे समेत रिटर्निंग ऑफिसर, सहायक रिटर्निंग ऑफिसर, नोडल एवं सहायक नोडल अधिकारी उपस्थित थे।

हाई-टेक रेल-कम-रोड निरीक्षण वाहन और अत्याधुनिक रेलवे ट्रैक हेल्थ मैनेजमेंट सिस्टम से भारत में सुरक्षित हो रही रेल यात्रा : रेल मंत्री

दिल्ली (विश्व परिवार)। रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने आज नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पर इंटीग्रेटेड ट्रैक मॉनिटरिंग सिस्टम (ITMS) और रोड सह रेल निरीक्षण वाहन (RCRIV) का अवलोकन किया। यह अत्याधुनिक प्रणाली भारतीय रेलवे की ट्रैक सुरक्षा और संचालन की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है।

उन्होंने इस मौके पर पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा, कि RCRIV ने हमारे ट्रैकमैन, गैंगमैन, कीमैन और पीडब्ल्यूआई (स्थायी पथ निरीक्षक) के कार्य करने के तरीके में बड़े बदलाव किए हैं। इन बदलावों से न केवल सुरक्षा में सुधार होगा बल्कि उनके कामकाज और जीवन की गुणवत्ता भी बेहतर होगी। आने वाले पांच वर्षों में सभी रेल ज़ोन में इस नई प्रणाली को लागू करने का लक्ष्य है। यह विशेष रूप से ट्रैक निरीक्षण और रखरखाव के आधुनिकीकरण में रेलवे विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बनेगा। यह तकनीकी प्रणाली न केवल ट्रेक की निगरानी और माप करने में मदद करेगी, बल्कि रेलवे संचालन को भी और अधिक सुरक्षित और प्रभावी बनाएगी। उन्होंने बताया कि यह प्रणाली प्रत्येक रेलवे जोन में उपलब्ध कराई जाएगी। रेलवे का लक्ष्य है कि हर चार महीने में होने वाले इस रखरखाव को अब हर दो महीने में किया जाए। यह नवीन टेक्नोलॉजी भारतीय रेल से हर रोज यात्रा करनेवाले लगभग 2.3 करोड़ यात्रियों की सुरक्षा में बढ़ोतरी करेगी।

सांसद बृजमोहन ने जनजातीय समुदायों के हितों की पैरवी की

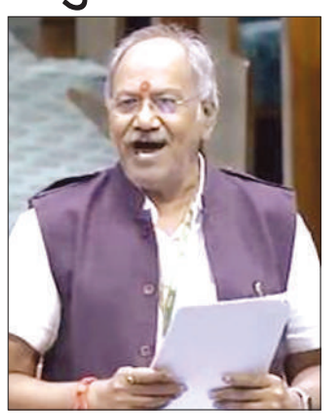

नई दिल्ली (विश्व परिवार)। सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने छत्तीसगढ़ के वन क्षेत्र निवासी अनुसूचित जनजाति समुदायों के अधिकारों को लेकर लोकसभा में महत्वपूर्ण मुद्दा उठाया। उन्होंने वन अधिकार अधिनियम (एफआरए) 2006 के तहत जनजातीय समुदायों को उनके अधिकार देने की प्रगति और लंबित मामलों पर प्रश्न किया।

जिस पर जनजातीय कार्य राज्यमंत्री श्री दुर्गादास उइके ने बताया कि वन अधिकार अधिनियम 2006 के प्रावधानों के तहत अनुसूचित जनजाति और अन्य परंपरागत वन निवासियों के अधिकारों को मान्यता देने का कार्य राज्य सरकारों की जिम्मेदारी है। छत्तीसगढ़ राज्य सरकार से प्राप्त जानकारी के अनुसार, 30 सितंबर 2024 तक राज्य में 4,22,101 व्यक्तिगत अधिकार पत्र और 47,685 सामुदायिक अधिकार पत्र को मान्यता दी जा चुकी है।

मंत्री ने यह भी बताया कि मंत्रालय को मासिक प्रगति रिपोर्ट (एमपीआर) के माध्यम से राज्य सरकारों से अद्यतन जानकारी प्राप्त होती रहती है। छत्तीसगढ़ में अधिनियम के तहत कार्यान्वयन की प्रक्रिया निरंतर प्रगति पर है।

सांसद श्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि अनुसूचित जनजाति समुदायों के अधिकारों की सुरक्षा और उनके सशक्तिकरण के लिए यह अधिनियम महत्वपूर्ण है। उन्होंने राज्य सरकार से लंबित मामलों में तेजी से निर्णय लेने का आग्रह किया, ताकि वंचित समुदायों को उनके अधिकार शीघ्र प्रदान किए जा सकें।

श्री अग्रवाल ने कहा कि छत्तीसगढ़ की जनजातीय आबादी का सामाजिक और आर्थिक उत्थान उनके अधिकारों के सम्मान और उन्हें सशक्त बनाने से ही संभव है। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकार से इस दिशा में ठोस कदम उठाने की अपील की है।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/दुर्ग-भिलाई/बलौदाबाजार
रायपुर, शुक्रवार 06 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com
2

संक्षिप्त समाचार

सतपति इन्फोटेक के छात्र-छात्राओं ने दमेरा भ्रमण कर पर्यावरण को स्वच्छ रखने के उद्देश्य से आसपास की सफाई

जशपुर नगर (विश्व परिवार)। सतपति इन्फोटेक की ओर से नगर से नजदीक दमेरा भ्रमण व वनभोज का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उदेश्य छात्र-छात्राओं के बौद्धिक विकास व जिले के पर्यटन से वाकिफ् करना था। इसमें अध्ययनरत छात्र-छात्राएं सभी साथ पर्यटन स्थल में मंगलवार कों पहुंचे। वहां वनभोज के तहत स्वादिष्ट भोजन व नास्ते का प्रबंध था। नास्ते के बाद सभी भ्रमण के लिए निकले। इस दौरान सभी ने दमेरा की हसीन वादियों व झरनों के नजारे कों आँखों में बसा लिया। वहीं दमेरा के आसपास प्लास्टिक आदि कचरे की सफाई कर पर्यटन हित में योगदान दिया। इसके बाद सभी ने सामूहिक बैठकर सामूहिक स्वादिष्ट भोजन का लुप्स उठाया। इस कार्यक्रम कों खास और यादगार बनाने के लिए ग्रुप फोटो ली गई। सतपति इन्फोटेक के संस्थापक आशीष सतपति ने बताया सतपति के द्वारा संस्था के सभी बच्चों को दमेरा जलप्रपात शैक्षणिक भ्रमण के लिए ले जाया गया। जहां सभी बच्चों ने मिलकर वनभोज किया। जहां बच्चों ने पर्यावरण को स्वच्छ रखने के उद्देश्य से आसपास की सफाई की। इस दौरान प्रिया गुप्ता, बलवंती, कमला, सिद्धि, रीमा, सुषमा, बसंत, संतोष, ऑगस्टिन, पवन, आराधना, अंकिता, कुलवंत, वेदांत, अंकित, आरती, आशीष, ज्योति, कुरदुला आलोक, निवेदिता, तारावती, प्रियंका मौजूद रहें।

निगम भिलाई सीमा क्षेत्र में पशुवध गृह एवं मांस विक्रय दुकानें बंद रहेगी

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। छत्तीसगढ़ शासन पर्यावरण एवं नगरीय विकास विभाग के आदेशानुसार नगर पालिक निगम, भिलाई सीमा के अन्तर्गत संचालित पशुवध गृह एवं समस्त मांस विक्रय की दुकानें दिसम्बर माह के 2 तिथियों में बंद रहेगी। शासन से जारी आदेश के तहत संत तारण तरण जयंती 07 दिसम्बर दिन शनिवाद एवं गुरू घांसीदास जयंती 18 दिसम्बर दिन बुधवार को समस्त पशुवध गृह जीव हत्या एवं समस्त मांस बिक्री केन्द्र को बंद रखा जाएगा उक्त आदेश का कड़ाई से पालन कराने शासन द्वारा आदेश जारी किया गया है।

नगर निगम भिलाई के अभियंता एवं कर्मचारी हुए पदोन्नत

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर पालिक निगम भिलाई के महापौर परिषद के अधिकारिता के अधीन गठित पदोन्नत समिति के बैठक दिनांक 01.07.2024 के परिपेक्ष्य में महापौर परिषद द्वारा पारित संकल्प के अनुसार पदोन्नती के पुष्टि के परिपालन में श्री सुनील कुमार जैन सहायक अभियंता को कार्यपालन अभियंता एवं के.के.गुप्ता सहायक अभियंता से कार्यपालन अभियंता तथा श्रीमती रीता चतुर्वेदी को सहायक ग्रेड-02 से सहायक कार्यालय अधीक्षक/सहायक ग्रेड-01 के पद पर आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय द्वारा पदोन्नत किया गया। आज दिनांक 05.12.2024 को आयुक्त द्वारा उपरोक्त अधिकारी/कर्मचारियो को पदोन्नती पत्र प्रदान किया गया। इस कार्य हेतु नगर निगम के कर्मचारी संघ के पदाधिकारियो ने आयुक्त को धन्यवाद देते हुए अधिकारी/कर्मचारियो को बधाई दिए।

शहीद वीर नारायण सिंह बलिदान दिवस समारोह की तैयारी का कलेक्टर ने लिया जायजा, समय सीमा में सभी तैयारी पूर्ण करने के निर्देश

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। शहीद वीर नारायण सिंह की शहादत दिवस पर 8 से 10 दिसम्बर तक आयोजित होने वाले कार्यक्रम की तैयारी का जायजा लेने कलेक्टर श्री दीपक सोनी गुरुवार को वीरभूमि सोनाखान पहुँचे। उन्होने कार्यक्रम की तैयारी अंतर्गत हेलीपेड़, मुख्य मंच, पंडाल, एवं शहीद स्मारक स्थल की सभी तैयारियां समय पर पूरा करने के निर्देश दिए।

कलेक्टर ने सांस्कृतिक कार्यक्रम के लिए स्थल एवं कलाकारो का चयन, विभागीय स्टॉल लगाने अधिकारियों को निर्देशित किया। उन्होंने बाहर से आने वाले सामाजिकजनों के ठरने एवं भोजन की व्यवस्था के निर्देश दिए। कहा कि स्टॉल में विभागीय योजनाओं के प्रचार -प्रसार के साथ ही लोगों के समस्याओं से सम्बंधित आवेदन लेकर निराकरण भी करें। उन्होंने सफल कार्यक्रम आयोजन हेतु सामाजिकजनों एवं पंचायत प्रतिनिधियों को बेहतर समन्वय बनाकर प्रशासन का सहयोग करने कहा।

हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी जिले के गौरव के रूप में शहादत दिवस पर बड़ा कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। शहीद वीर नारायण सिंह शहादत दिवस के अवसर पर मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय के सोनाखान में विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण करेंगे।

इस दौरान डीएफओ श्री मयंक अग्रवाल, सीईओ जिला पंचायत सुश्री दिव्या अग्रवाल, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अभिषेक सिंह, एसडीएम आर. आर. दुबे, शहीद वीर नारायण सिंह के वंशज राजेंद्र दीवान सहित विभिन्न विभागों के जिला अधिकारी मौजूद थे।

पशु चिकित्सा दल द्वारा काजी हाउस में पशुधन का इलाज जारी

भिलाईनगर (विश्व परिवार)। नगर निगम भिलाई क्षेत्र में दो काजी हाउस संचालित हो रहे हैं। एक डी मार्ट के पास, दूसरा कोसा नाला में दोनों में सैकड़ो आवारा पशुधन रखे गए हैं। डी मार्ट में बछड़े, सांड इत्यादि पकड़ के रखा गया है एवं कोसानाला में गाय भैंसों को रखा गया है। पशुओं के चारे, पानी, इलाज की व्यवस्था निगम प्रशासन द्वारा किया जा रहा है।

बहुत से दुर्घटना से ग्रसित जानवर आपस में लड़कर घायल, बीमारी अवस्था में है, उन्हे लाकर भारती कर दिया जाता है। घायल व बीमार पशुओं को इलाज के लिए आयुक्त राजीव कुमार पाण्डेय द्वारा उपसंचालक पशु चिकित्सा विभाग को पत्र लिखकर चिकित्सा दल उपलब्ध कराने की मांग की थी। उसी अंतर्गत संचालक पशु चिकित्सा विभाग द्वारा तीन सदस्य डॉक्टरों की टीम गठित की गई है। जो दोनों काजी हाउस में जानवरों का इलाज कर रहे हैं। बीमारी से यदि जानवरों की मृत्यु होगी तो उसका भी पोस्टमार्टम किया जाएगा। जिससे यह ज्ञात हो सके जानवरों की मृत्यु किस कारण से हुई है। पशुओं के चारे के लिए ग्रामीण क्षेत्र से पर्याप्त मात्रा में पैरा, कुट्टी मंगाया गया है। पीने के पानी की व्यवस्था के लिए बोर चालू किया गया है। हरे चारे की व्यवस्था की गई है। जिससे पशुओं को किसी प्रकार का तकलीफ ना हो।

चिकित्सा दल को प्रत्येक दिन आकर के शहरी काजी हाउस में जानवरों का इलाज करने का निर्देश मिला हुआ है। वे अपने दायित्वों का संपादित कर रहे हैं, इलाज के दौरान बताया गया कि बहुत से लोग खाने की सामग्री के साथ झिल्ली फेंक देते हैं। जानवर उसे खा लेते हैं इससे उनका पेट फूल जाता है। बीमार हो जाते हैं, नाक से पानी गिरने लगता है उनका इलाज मुश्किल हो जाता है। नगर निगम भिलाई द्वारा नागरिकों से अपील की जाती है कि खाने की सामग्री को झिल्ली पत्री में रखकर मत फेके, जानवरों पर दया करें।

आंगनबाड़ी सहायिका भर्ती के लिए दावा-आपत्ति 16 दिसम्बर तक

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। एकीकृत बाल विकास परियोजना लवन अंतर्गत आंगनबाड़ी केन्द्र तिल्दा-3 में आंगनबाड़ी सहायिका के रिक्त पद पर भर्ती हेतु दावा आपत्ति आमंत्रित किया गया है। मूल्यांकन समिति के अनुमोदन पश्चात् दावा आपत्ति 5 दिसम्बर से 16 दिसम्बर 2024 तक अभ्यर्थी कार्यालय एकीकृत बाल विकास परियोजना लवन में कार्यालयीन समय प्रात: 10.30 बजे से सायं 5.30 बजे तक आवेदन जमा कर सकते है। समयावधि समाप्त होने के पश्चात् आवेदन पर विचार नहीं किया जाएगा।

पैरा से बनाएं जा रहे है आकर्षक कलाकृतियां, 45 महिलाओं ने पैरा आर्ट में लिया हिस्सा

वन विभाग द्वारा बारनवापारा अभ्यारण्य एवं आसपास की महिला स्वसहयता समूहों एवं अन्य ग्रामीणों को दिया रोजगार मूलक प्रशिक्षण

बलौदाबाजार (विश्व परिवार)। वनमण्डलाधिकारी बलौदाबाजार मयंक अग्रवाल के निर्देशन एवं बारनवापारा अभ्यारण्य अधीक्षक आनंद कुदरया के मार्गदर्शन में बारनवापारा अभ्यारण्य एवं आस-पास के महिला स्व सहायता समूहों को रोजगार मूलक प्रशिक्षण हेतु पैरा आर्ट संबधित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें सहेली सोशल वेलफेयर फाउन्डेशन के द्वारा ग्राम बार एवं रवान तथा आस-पास के ग्रामों के लगभग 45 महिलाओं को पैरा आर्ट में पैरा को छिलकर अनेक प्रकार की कलाकृति निर्माण का प्रशिक्षण दिया गया। जिससे उन्हे स्वरोजगार प्राप्त होगा और आर्थिक स्थिति में सुधार की दिशा में सार्थक पहल होगा। पैरा आर्ट में एवं अन्य कलाकृति से महिला स्व सहायता समूह एवं बालिकाओं/ग्रामीणों द्वारा कम लागत में अधिक लाभ प्राप्त होगा तथा तैयार किये गये सामग्रियों को बारनवापारा अभ्यारण्य में स्थित सॉवेनियर शॉपों में विक्रय हेतु रखा जावेगा तथा प्राप्त राशियों को संबंधित महिला स्व सहयाता समूहों में वितरण किया जावेगा।

एन.एस.एस व स्काउट गाइड का सात दिवसीय शिविर आत्मानंद विद्यालय नारायणपुर में सम्पन्न

स्वयंसेवकों ने सामाजिक कुरीतियों से ग्रामीणों कों किया जागरूक

प्राचार्य अगुस्टिना तिग्गा ने एन एस एस व स्काउट गाईड पर डाला प्रकाश

जशपुर/नारायणपुर (विश्व परिवार)। राष्ट्रीय सेवा योजना के विशेष शिविर व भारत स्काउट गाइड का सात दिवसीय प्रथम सोपान ग्राम सेन्दरीमुंडा में समारोह शिविर संपन्न हुआ। यह शिविर स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यम विद्यालय नारायणपुर में आयोजित था।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि सरपंच नारायणपुर मुक्तिलता प्रधान ने देश और समाज के चौमुखी विकास की बात कही गई। कार्यक्रम अध्यक्ष प्राचार्य स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिंदी माध्यम विद्यालय नारायणपुर अगुस्टिना तिग्गा के द्वारा राष्ट्रीय सेवा योजना एवं भारत स्काउट एवं गाइड के संचालन से विद्यार्थियों में हो रहे सर्वांगीण विकास पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन कार्यक्रम अधिकारी उत्तम कुमार यादव स्वयंसेवीका सजंना बाई के द्वारा किया गया। विशिष्ट अतिथि संतोषी बन्दे के द्वारा कहा गया एन.एस.एस में संचालित गतिविधियों से समाज का विकास निश्चित रूप से होता है।

स्वयंसेवकों ने गांवों में किए सामाजिक कार्य- स्वयंसेवक आशुतोष भगत, सपना चौहान के द्वारा शिविर प्रतिवेदन का पठन किया गया तथा स्वयंसेवकों के द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत की गई। विशिष्ट अतिथि संजय कुमार बंग उप सरपंच के द्वारा शिविर के दिनचर्या का पालन जीवन में सफलता दिलाती है, इन शब्दों से छात्रों को प्रोत्साहित किया। शिविर में नशा मुक्ति, दहेज प्रथा, मतदाता जागरूकता रैली, नुक्कड़ नाटक, डिजीटल साक्षरता, युवाभारत, सोखता गढा का निर्माण, सड़क समतलीकरण, स्वच्छता पखवाड़ा, गाजर घास उन्मूलन, प्रकृति संरक्षण, सांस्कृतिक कार्यक्रम, हाइक, टोली संचालन विभिन्न स्काउट गाइड की गतिविधियां विगत 7 दिनों में संपन्न की गई। कार्यक्रम में अजय कोरी, हेमंत प्रजापति, हसीबुद्दीन राइन, प्रधान पाठक प्राथमिक शाला एवं माध्यमिक शाला सेन्दरीमुंडा के शिक्षक समेत अन्य शामिल रहें।

अग्निवीर भर्ती हेतु 9 एवं 11 दिसम्बर को होगी जिले के आवेदकों की दक्षता परीक्षा

बलौदाबाजार। भारतीय थलसेना में अग्निवीर भर्ती के लिए शारीरिक दक्षता परीक्षा का आयोजन 4 दिसम्बर से 12 दिसम्बर 2024 तक रायगढ़ स्टेडियम में आयोजित किया जा रहा है। बलौदाबाजार-भाटापारा जिले के आवेदकों के लिए 9 एवं 11 दिसम्बर 2024 को आयोजित किया जाएगा। जिला रोजगार अधिकारी ने बताया है कि विगत माह अप्रैल 2024 में आयोजित लिखित परीक्षा में उत्तीर्ण हुए अभ्यार्थियों के लिये जिला प्रशासन बलौदाबाजार द्वारा रायगढ़ स्टेडियम तक पहुंचने के लिए नि:शुल्क बस सेवा उपलब्ध किया गया है।

अब बारिश का पानी नहीं टपकेगा, दामाद और नाती के ठहरने की चिंता हुई दूर

मुख्यमंत्री ने खाते में ट्रांसफर की राशि, पूरा हुआ निर्माण

रायपुर (विश्व परिवार)। एक वक्त था जब घर पर बारिश का पानी टपकता था, आंधी-तूफान आने पर छप्पर वाले घर पर रहने से चिंता सताती थी। दामाद और नाती आते थे, तो पक्के मकान और ठहरने की जगह नहीं होने पर दूसरे जगह में ठहराना पड़ता था, लेकिन अब सारी चिंताएं एक पल में दूर हो गई, जब मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय ने सरकार गठन के बाद राशि खाते में ट्रांसफर की तब। किश्त की राशि खाते में पहुंची और निर्माण कार्य पूरा कर लिया गया। यह कहना है आरंग ब्लॉक के खमतराई गांव की निवासी श्रीमती राधा बाई साहू का। श्रीमती राधा बाई साहू कहती है कि प्रधानमंत्री आवास योजना के लिए आवेदन की। जिस दिन स्वीकृति मिली, उस दिन बहुत खुशी मिली। वे कहती हैं कि एक उम्मीद और एक सपना संजोए थे कि खुद का पक्का मकान कभी बनाना है, लेकिन प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने प्रधानमंत्री आवास योजना लेकर आए और हर गरीबों को अपना घर बनाने का सपना पूरा होने लगा है।

न्यायालय नजूल अधिकारी कबीरधाम (छ.ग.)

// ईश्तहार//

रा.प्र.क्र .ई.पं.जी. 202411082200031 / अ - 6 / वर्ष 2024 - 25

आवेदिका **कृति सिंह पति योगेश्वर राज सिंह** साकिन कवर्धा जिला कबीरधाम द्वारा नजूल नगर कवर्धा स्थित शीट **क्रं.-17 भू-खण्ड क्रं. 329/1 क्षेत्रफल 1035.40** व.मी. जो नजूल संधारण खसरा में **खडगराज सिंह आ. यशवंत राज सिंह** के नाम पर दर्ज है। उक्त भू-खण्ड के मूल धारक द्वारा आवेदिका के पक्ष में **क्षेत्रफल 573.65** व.मी. का पंजीकृत बयनामा **दिनांक 21.11. 2024** निष्पादित किये जाने से अपना नाम नजूल अभिलेख में दर्ज किये जाने हेतु आवेदन प्रस्तुत किया है।

अतएव नामांतरण के संबंध में जिस किसी व्यक्ति एवं संस्था को उजर अथवा आपत्ति हो वे इस न्यायालय में **दिनांक 27/12/24** तक स्वयं अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से आपत्ति पेश कर सकते है। नियत तिथि के पश्चात प्राप्त आपत्ति पर मान्य नहीं किया जायेगा।

आज दिनांक 27/11/24 को इस न्यायालय के पद मुद्रा एवं हस्ताक्षर से जारी किया गया है।

मुहर

नजूल अधिकारी,
कबीरधाम

CHHATTISHGARH STATE POWER DISTRIBUTION COMPANY LTD.

OFFICE OF THE EXECUTIVE DIRECTOR (RCR) GUDHIYARI, RAIPUR, PH.NO. 0771-2574703 & FAX NO.2593403

No. 10-01/Wk-II/Tender No. 12/3801 — Raipur, Date 03.12.2024

NOTICE INVITING FOR e-TENDERING

Online bids are invited through CSPCL e-bidding system (SAP SRM) from eligible Contractors for the following works:

Tender No/ Rfx No.	Name of work	Type of Contractor	Total value of tender (in Rs.)	Cost of Tender form(in Rs.)	Date of Submission / Opening
Tender No.12/3801 Date 03.12.2024 RFX No . 8100040569	For 33KV line extension in 33KV Mahesh feeder to balance the load of 33KV RIC feeder Under (O&M) Dn. CSPDCL, Urla.	Class-I/II	**25,65,304.00**	5000/- (Including GST)	26.12.2024 02:00 / 02:30 PM

Details of Tenders, Technical Specification, Terms & Conditions pre-qualification requirement etc. are available on our website www.cspdcl.co.in and ebidding.cspcl.co.in. Tender documents can be downloaded from CSPDCL's official website mentioned above. The cost of required tender fees shall be deposited trough demand draft drawn in favor of Sr. A.O.-I CSPDCL Raipur and shall be submitted in hard copy before due date and time, the scanned copy of the DD of Tender fees should be uploaded in the e-bidding portal.

The notice for extension of due date of tender submission, opening /corrigendum/amendment, if any to the tender document will not be published in newspapers. It will only be displayed on CSPDCL's official website as mentioned above and office Notice Board.

SAVE ELECTRICITY

EXECUTIVE DIRECTOR (RCR)
CSPDCL, RAIPUR

SAMVAD- 42323/ 3

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, शंकर नगर रायपुर
(छ.ग.), फोन नं.- 0771-4903223
Email Id: eocghbzone02@gmail.com

आम-सूचना

सर्व-साधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसढ़ गृह निर्माण मंडल द्वारा **शंकर नगर सरहद फेस II** रायपुर में निर्मित सामान्य आवास योजनांतर्गत **ई.डब्ल्यू.एस. फ्लैट क्रमांक-603, ब्लॉक-01, छटवां तल, श्रीमती परी भोजवानी पति श्री भारत भोजवानी** के नाम पर एकमुश्त आधार पर आबंटित है। आबंटी द्वारा समस्त राशि जमा कर फ्लैट कि सेलडीड **दिनांक 02.01.2018** को पंजीकृत करने उपरांत फ्लैट का आधिपत्य प्राप्त कर लिया गया है। वर्तमान में आबंटी **श्रीमती परी भोजवानी पति श्री भारत भोजवानी, निवासी जी-18, अवंति विहार एटीएम चौक, तेलीबांधा रविग्राम रायपुर (छ.ग.)** के द्वारा उक्त फ्लैट को **क्रेता श्री प्रमोद कारवानी पिता श्री अशोक कुमार कारवानी, निवासी-वार्ड नं.-44, गुरु घासीदास, तेलीबांधा रविग्राम रायपुर (छ.ग.)** को विक्रय करने के लिये अनापत्ति प्रमाण पत्र (एन.ओ.सी.) प्राप्त करने हेतु इस कार्यालय में अपना आवेदन प्रस्तुत किया गया है।

अत: उक्त फ्लैट के विक्रय के संबंध में किसी व्यक्ति शासकीय/ अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय बैंक अथवा वित्तिय संस्था, को कोई आपत्ति हो तो सूचना प्रकाशन दिनांक के 15 दिवस के अंदर लिखित आपत्ति मय दस्तावेज अधोहस्ताक्षरकर्ता के कार्यालय में प्रस्तुत करें। अन्यथा बाद में प्राप्त होने वाली आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-02, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय सम्पदा अधिकारी, छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल, सम्पदा प्रबंधन प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर
(छ.ग.)फोन नं.-0771-2991574
Email Id: eocghbzone03@gmail.com

आम-सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल द्वारा कालोनी बोरियाकला, जिला रायपुर, में स्थित दीनदयाल आवास योजनांतर्गत निर्मित फ्लैट **क्र. एल.आई.जी-761, ब्लॉक-48 द्वितीय तल श्री ज्ञानेश कुमार यादव पिता श्री अमरीश लाल यादव निवासी: मरार पारा वार्ड क्रमांक 09, बारना धमतरी (छ.ग.)** के नाम पर इस कार्यालय के आबंटन आदेश **क्र. 7967 दिनांक 21.07.2014** के माध्यम से एकमुश्त आधार पर आंबटित है। आबंटी द्वारा भवन का पूर्ण मूल्य जमा कर दिनांक 18.06. 2015 को सेलडीड निष्पादित कराने के उपरांत पत्र **क्रमांक 8179 दिनांक 10.07. 2015** को आधिपत्य आदेश जारी किया गया है। मूल आंबटी **श्री ज्ञानेश कुमार यादव पिता श्री अमरीश लाल यादव,** उक्त फ्लैट को विक्रय अनुमति हेतु आवेदन पत्र, विक्रय इकरारनामा की छायाप्रति एवं आवश्यक दस्तावेज प्रस्तुत किया गया है। प्रस्तुत दस्तावेज के आधार पर उक्त फ्लैट को **क्रेता श्रीमती टोकेश्वरी ताण्डी पति श्री सुनील ताण्डी निवासी:- म.नं.-1006, ब्लॉक-63, गोल चौक बोरियाकला हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी रायपुर (छ.ग.)** के पक्ष में विक्रय हेतु अनुमति प्रदान किया जाना है।

अत: किसी भी व्यक्ति, शासकीय/अर्द्धशासकीय संस्था, निकाय, बैंक अथवा वित्तीय संस्था इत्यादि को उक्त भूखण्ड/भवन/फ्लैट के विक्रय करने हेतु अनुमति प्रदान करने में किसी भी प्रकार की कोई आपत्ति हो तो इस कार्यालय में स्वयं उपस्थित होकर लिखित रूप से प्रमाणित दस्तावेज सहित इस आम सूचना प्रकाशन के 15 दिवस के अन्दर आपत्ति प्रस्तुत करें, अन्यथा नियत समयावधि पश्चात् आपत्ति मान्य नहीं की जावेगी।

सम्पदा अधिकारी,
छत्तीसगढ़ गृह निर्माण मण्डल,
प्रक्षेत्र-03, सेजबहार, रायपुर छ.ग.

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./16233/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 05-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16233
वार्ड का नाम- 13- राजीव गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 13 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR222D00064** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR. KASHI RAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O TIJULAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री तामेश्वर कुमार साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता - श्री काशीराम साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्रं.-2)
शहीद समारक भवन, फाफाडीह, रायपुर
Email ID - rmczone2@gmail.com

पत्र क्रं./16236/न.पा.नि./जोन क्रं.-2/2024
रायपुर दिनांक : 05-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16236
वार्ड का नाम- 13- राजीव गांधी वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि 13 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी-आई.डी.- **RPR222D0064A** जो कि निगम अभिलेख में श्री/श्रीमती **MR. KASHI RAM SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **S/O TIJULAL** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **श्री भूपेन्द्र कुमार साहू** पिता/पति, श्री/श्रीमती **पिता - श्री काशी राम साहू** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत दानपत्र**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, तो प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नही की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

सूचना जारी करें
श्री आर.के. डोंगरे
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक- (2)
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पालिक निगम, रायपुर (जोन क्र.-8)
मोहबा बाजार, रायपुर
E-mail ID - rmczone8@gmail.com

पत्र क्र. /16298/ न.पा.नि./जोन क्र.-8/2024
रायपुर, दिनांक 05-12-2024

इश्तिहार

नामांतरण प्र.क्र. 16298
वार्ड का नाम- 01 - वीर सावरकर नगर वार्ड

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि वार्ड 01 स्थित भवन/भूमि जिसका प्रॉपर्टी आई.डी. **RPR801L00630** जो की निगम अभिलेख श्री/श्रीमती **PHEKURAM VERMA** पिता/पति, श्री/श्रीमती **RAMCHARAN VERMA** के नाम से दर्ज है, जिसको श्री/श्रीमती **RENUKA SAHU** पिता/पति, श्री/श्रीमती **DEV KUMAR SAHU** ने मृत्यु प्रमाण पत्र, सह पत्र, शपथ पत्र, दान पत्र, हिब्बानामा, रजिस्ट्री विलेख के अनुसार/ **पंजीकृत विक्रय विलेख**/ वंशानुक्रम/अन्य अभिलेख द्वारा प्राप्त नगर पालिक निगम अधिनियम 1956 की धारा 167 के तहत द्वारा आवेदन किया है। यदि कोई व्यक्ति/संस्था उपरोक्त स्वामित्व परिवर्तन में हक या दावा रखते हैं, प्रकाशन के 30 दिन के भीतर प्रकरण क्रमांक सहित लिखित में अपना दावा/प्रस्तुत करें। निर्धारित समयावधि पश्चात प्राप्त दावा/आपत्ति पर किसी प्रकार की सुनवाई नहीं की जाएगी। जिसके लिए यह कार्यालय जिम्मेदार नहीं होगा।

-सूचना जारी करें-
श्री आदित्य कुमार हालदार
(जोन कमिश्नर)
जोन क्रमांक-8
नगर पालिक निगम, रायपुर (छ.ग.)

कार्यालय नगर पंचायत इंदौरी, जिला-कबीरधाम (छ.ग.)

Email ID:- cmoindori@gmail.com

क्रमांक 284/न.पं/लो.नि.वि./2024-25 — इंदौरी, दिनांक 05.12.2024

ई-प्रोक्योरमेन्ट द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना

एकीकृत पंजीयन प्रणाली अंतर्गत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से निम्न कार्य हेतु ई-निविदा (Online) दिनांक 20.12.2024 समय शाम 05:30 बजे तक तथा Physical Document Submission Last Date 23.12.24 समय शाम 05 : 30 बजे तक आमंत्रित की जाती है -

No.	System Tender No.	Description	Cost (In Lacks)
1	162414	वार्ड क्र. 02 शा.पू.मा.शाला से हीरा साहू के घर होते हुए नया बाजार तक आर.सी.सी. नाली निर्माण कार्य	25.66
2	162415	वार्ड क्र . 10 व 11 मेन रोड हाईस्कूल से विजय चन्द्रवंशी, मित्रसेन चन्द्रवंशी के घर तक सी.सी. रोड एवं आर.सी.सी. नाली निर्माण कार्य	38.70

टीप : उपरोक्त निर्माण कार्यों के निविदा की सामान्य शर्ते, आवश्यक शुल्क / धरोहर राशि की विस्तृत जानकारी, निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी हेतु ई-प्रोक्योरमेन्ट पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in पर देखी जा सकती है एवं डाउनलोड किया जा सकता है।

मुख्य नगरपालिका अधिकारी
नगर पंचायत इंदौरी

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बिलासपुर संभाग

रायपुर, शुक्रवार 06 दिसंबर 2024

जिले के प्रभारी सचिव ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए की समीक्षा बैठक

शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं की जन जन तक पहुंचाने का निर्देश

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)- आज जिले के प्रभारी सचिव श्री भूवनेश यादव द्वारा वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिले के विभागीय कार्यों की समीक्षा बैठक ली गई। जिसमें कलेक्टर श्री एस.जयवर्धन, एस पी श्री प्रशांत कुमार ठाकुर, डीएफओ श्री पंकज कमल, जिला पंचायत सीईओ श्रीमती कमलेश नंदिनी साहू, अपर कलेक्टर श्रीमती नयनतारा सिंह तोमर व जिले के सर्व विभाग प्रमुख उपस्थित थे।

कलेक्टर द्वारा जिले के बारे में संक्षिप्त परिचय देते हुए राजस्व व अन्य विभागों की जानकारी प्रभारी सचिव के समक्ष प्रस्तुत की गई। प्रभारी सचिव द्वारा विभागवार क्रियान्वित की जा रही योजनाओं की जानकारी लेते हुए शासन के मंशानुरूप जिले के सत्त विकास के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिए गये। उन्होंने शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन व जिले के विकास कार्य पर विस्तृत चर्चा की।

बैठक में जिले को नशा मुक्त बनाने के लिए नार्को कॉर्डिनेशन (एनकोर्ड) की टीम, समाज कल्याण, पुलिस, स्वास्थ्य व अन्य संबंधित विभागों को वृहद स्तर परनशा मुक्ति अभियान चलाने के निर्देश दिए गये। उन्होंने इस अभियान में मुख्य रूप से नषे के दुष्प्रभाव को जन जन तक पहुंचाते हुए, इससे दूर रहने के लिए प्रेरित करने की बात कही। इसके साथ ही उन्होंने पुलिस विभाग की कार्यवाही के दौरान पकड़े गये मादक पदार्थ को नियमित रूप से नियमानुसार नष्ट करने की कार्यवाही के निर्देश दिये।

उन्होंने राजस्व विभाग के प्रकरणों को समय सीमा पर निराकरण करने हेतु योजनाबद्ध तरीके से कैलेंडर आधारित शिविर लगाने के निर्देश दिये। इसके साथ ही राजस्व अमले पर सभी स्तर के अधिकारी एवं कर्मचारी के नियमित मॉनिटरिंग की बात कही ताकि राजस्व प्रकरण का निराकरण

प्रभारी सचिव ने जिले के कानून और व्यवस्था को बहाल रखने हेतु स्थानीय स्तर पर होने वाली घटनाओं पर पैनी नजर रखनी की बात कही। उन्होंने कहा घटनाओं के संभावित परिणाम पर विचार करने और एक बेहतर रणनीति तैयार करने के लिए नियमित रूप से जिले के कलेक्टर व एसपी संबंधित अधीनस्थ अधिकारी एवं कर्मचारी के साथ बैठक करें और अपने सूचना तंत्र को मजबूत रखें । इसके साथ ही हिस्ट्रीशीटर व नामचीन बदमाशों की लगातार मॉनिटरिंग के निर्देश भी दिये गए।

पंचायत एवं ग्रामीण विभाग की समीक्षा के दौरान प्रभारी सचिव ने स्व सहायता समूह की दीदियों को उद्यमिता की ओर अग्रसर करने एवं नवाचार करने पर जोर दिया ताकि समूह से जुड़ी महिलाएं अपनी गतिविधियों से रोजगार प्राप्त कर आर्थिक स्तर पर संबल बन सके। इसके लिए उन्होंने एक्सपर्ट के माध्यम से समूह की दीदियों को प्रशिक्षण प्रदान करवाने एवं उनके गतिविधियों के लिए मार्केट उपलब्ध कराने के निर्देश दिये ताकि देश की आधी आबादी में हिस्सेदार महिलाओं की सक्रिय भागीदारी से जिले के विकास की नई दिशा मिले और देश की जीडीपी में उनका बहुमूल्य योगदान हो।

संक्षिप्त समाचार

पुलिस ने अवैध कोयला ईट भट्ठा से 2 टन कोयला सहित दो आरोपियों को धर दबोचा

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार) वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार ठाकुर ने अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने के सख्त निर्देश थाना-चौकी प्रभारियों को दी है जिसके बाद पुलिस सक्रियता के साथ कार्यवाही करने में लगी गई है। इसी परिप्रेक्ष्य में आज 4 दिसंबर को थाना रामानुजनगर पुलिस को मुखबीर से सूचना मिली कि ग्राम तिवरागुड़ी चोरकीपानी के प्रियांशु गुप्ता के ईट भट्ठा में अवैध रूप से आमगांव साल्ही खदान से कोयला चोरी कर ईट भट्ठा में खपाने हेतु रखा है। एसडीओपी प्रेमनगर नरेन्द्र सिंह पुजारी के मार्गदर्शन में पुलिस टीम मौके पर पहुंच रेड कार्यवाही कर प्रियांशु गुप्ता पिता विमल किशोर गुप्ता उम्र 22 वर्ष ग्राम तिवरागुड़ी व शरद रात्रे पिता स्व. दुलारे रात्रे उम्र 40 वर्ष ग्राम टेहुलाडीह, थाना तखतपुर जिला बिलासपुर के कब्जे से अवैध कोयला 2 टन कीमत 14700 रूपये का जप्त किया है। मामले में धारा 35(3) बीएनएसएस के तहत कार्यवाही करते हुए दोनों आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी रामानुजनगर राजेन्द्र साहू व उनकी टीम सक्रिय रही।

द्वारिका नगर में विकासखंड स्तरीय आयोजित पशु मेला में 51 पशुधन ने लिया हिस्सा

सूरजपुर ब्यूरो (दैनिक विश्व परिवार)- पशुधन विकास विभाग द्वारा आज ग्राम पंचायत द्वारिकानगर में पशु मेला पशु प्रदर्शनी प्रतियोगिता एवं पशु स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया गया। मेला के माध्यम से पशुपालकों को नस्ल संवर्धन, पशुधन स्वास्थ्य एवं रोग नियंत्रण, पशुपालन हेतु केसीसी, यूरिया पैरा उपचार, अजोला उत्पादन, टीकाकरण के संबंध में जानकारी विभागीय अमले द्वारा विस्तार पूर्वक बताया गया। मेला में आयोजित पशु प्रदर्शनी में विभिन्न श्रेणियो के 51 पशुधन ने भाग लिया, जिसमें विभाग के विशेषज्ञों द्वारा जजिंग किया गया एवं पशुपालकों को श्रेणीवार पुरस्कृत किया गया। मेला में महेश्वर पैकर, ओमप्रसाद, श्री बाबूलाल राजवाड़े, मोतीलाल सिंह, सुरजन सिंह, भास्कर सिंह, रामलखन गुप्ता, अनिल राजवाडे, प्राचार्य वेटरिनरी पॉलीटेक्निक कॉलेज सूरजपुर डॉ. ओ.पी. पैकरा, एवं पशुधन विकास विभाग से डॉ. विवेक प्रसाद गुप्ता, डॉ. सुधीर जयसवाल, डॉक्टर गोविंद साहू, डॉ. प्रशांत व सहायक पशु चिकित्सा क्षेत्र अधिकारी जयलाल पैकरा, जे.पी. लाल सिन्हा, विभीषण सिंह, खूबसूरत सिंह, मो नदीम आदि उपस्थित थे।

बी एम एस के तत्वावधान में राष्ट्रव्यापी श्रमिक संपर्क अभियान

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-भटगांव भारतीय मजदूर संघ के तत्वावधान में राष्ट्रव्यापी श्रमिक संपर्क अभियान के दिनाँक05/12/2024 को ग्राम पोड़ी,और दूरती बाजार में गिग,स्ट्रीट वेंडर,दिहाड़ी मजदूर व अन्य कामगार,खेतिहर मजदूरों से मिलकर उन्हें भारतीय मजदूर संघ का श्रमिकों के प्रति समर्पण विगत 70 वर्षों में क्या रहा ,से अवगत करा पत्रक वितरण किया गया। कार्यक्रम के दौरान सालिक राम,जिला मंत्री भारतीय मजदूर संघ उमेश रजवाड़े मानिक चंद श्री गोपाल अन्य कार्यकर्ता व पदाधिकारी उपस्थित रहे।

पीड़िया में हाथियों के दल ने फसलों को पहुंचाया नुकसान

कोरबा(विश्व परिवार)। वनमंडल कोरबा के करतला रेंज में हाथियों का उत्पात लगातार जारी है। यहां 50 सदस्यीय हाथियों का दल विचरण कर रहा है। यह दल दो दिनों तक पीडिया में एक साथ थे लेकिन बीती रात दल में से कुछ हाथी अलग होकर बोतली के जंगल में पहुंच गई है। हाथियों ने बोतली जाने से पहले पीडिया गांव में दो दर्जन से अधिक किसानों के धान की फसल को रौंद दिया। इतना ही नहीं एक ग्रामीण के झोपड़ी को भी तोड़ दिया है। हाथियों के द्वारा लगातार नुकसान पहुंचाए जाने से क्षेत्र के ग्रामीण काफी दुखी हैं क्योंकि खेतों में लगाया गया धान पककर तैयार हो गया है और किसान उसे काटकर धान खरीदी केंद्रों में बेचने की तैयारी कर रहे हैं। ऐसे में हाथियों द्वारा फसल को चैपट कर देने से उन्हें निराशा हाथ लग रही है। बताया जाता है कि हाथियों का यह दल एक सप्ताह से क्षेत्र में डेरा जमाए हुए हैं तथा प्रतिदिन खेतों में पहुंचकर फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। बीती रात कुछ हाथी बोतली गांव पहुंच गए लेकिन बड़ी संख्या में हाथी अभी भी पीडिया में मंडरा रहे हैं जिनके द्वारा फसल को नुकसान किए जाने की संभावना है। उधर पसरखेत रेंज में दो दिनों तक विचरण करने के बाद एक दर्जन हाथियों ने चचिया जंगल के कक्ष क्रमांक पी-1133 में दस्तक दे दी है। हाथियों के अचानक आने से ग्रामीण दहशत में हैं। जहां कोरबा वनमंडल में हाथियों की दहशत बरकरार है वहीं कटघोरा वनमंडल में हाथियों की एक बार फिर वापसी हो गई है। कोरिया सीमा तक जाने के बाद वहां ग्रामीणों द्वारा खदेड़े जाने पर हाथियों का दल वापस पसान रेंज लौट गया है। बीती रात इस दल ने रेंज के सिर्री व समलाई नामक गांव में पहुंचकर पहले खेतों में रखे धान के करपे का भक्षण किया तत्पश्चात् खलिहानों में पहुंचकर धान की खरही को नुकसान पहुंचाने की कोशिश की लेकिन ड्यूटी में तैनात वन विभाग के अधिकारियों व कर्मचारियों ने खदेड़ दिया जिससे वे वापस जंगल जाने को मजबूर हो गए।

डिजिटल अरेस्ट फ्राड मामले में लोगों को सावधान कर रही पुलिस

कोरबा(विश्व परिवार)। डिजिटल साइबर फ्रॉड के मामलों ने आम लोगों के साथ-साथ पुलिस की परेशानियां बढ़ाई हैं। लगातार विभिन्न क्षेत्रों से इस प्रकार के मामले सामने आ रहे हैं जिनमें पता चल रहा है कि अलग-अलग प्रकार से फर्जी फोन कॉल करने के साथ लोगों को निशाने पर लिया गया और उनसे मोटी रकम हासिल कर ली गई। ब्लैकमेल का शिकार होने के चक्कर में लोगों ने अपनी पसीने की कमाई साइबर फ्रॉड के हवाले कर दी। कोरबा जिले में पुलिस ने इस प्रकार के फर्जीवाड़ा को रोकने और लोगों को बचाने के लिए अभियान शुरू किया है। पुलिस ने इस अभियान को क्रियान्वित करने के लिए वीडियो क्लिप तैयार की है और जिसे अलग-अलग प्लेटफार्म पर वायरल किया गया है ताकि यह अधिकतम लोगों की जानकारी में आए। वे उसे देखें और पता करें कि साइबर डिजिटल फ्रॉड क्या होता है और इससे कैसे बचा जा सकता है। इस वीडियो मैं पुलिस ने दिखाने की कोशिश की है कि डिजिटल अरेस्ट नाम का नया फर्ज किस प्रकार से मार्केट में छाया हुआ है और धोखाधड़ी करने वाली गैंग कौन सा तरीका अपनाती है। लोगों को बताया जा रहा है कि स्कैम को संचालित करने वाला वर्ग फर्जी पुलिस, सीबीआई अथवा कस्टम ऑफिसर के नाम से कॉल करता हैं। कई तरह से गलत जानकारी देकर लोगों के परिजनों को डरने की कोशिश होती है और जो इसे सच मान लेता है वह तरीका शिकार हो जाता है। जबकि कुछ मामलों में जानकार लोगों ने गिरोह को तगड़ा जवाब देने के साथ उसे नदारत होने के लिए मजबूर किया है।

शराब पीकर वाहन चलाते 13 चालकों पर कार्यवाही

बलौदाबाजार-भाटापारा(विश्व परिवार)। जिला बलौदाबाजार-भाटापारा पुलिस द्वारा ऑपरेशन विश्वास के तहत जिले में सड़क दुर्घटनाओ की रोकथाम हेतु शराब पीकर वाहन चलाने वाले चालकों की चेकिंग कर लगातार कार्यवाही किया जा रहा है। इसी क्रम मे दिनांक 03.12.2024 को जिले में शराब पीकर वाहन चलाने वाले, वाहन चालकों के विरुद्ध पुलिस द्वारा विशेष चेकिंग अभियान चलाया गया है। इस दौरान संपूर्ण अभियान में पुलिस की अलग-अलग टीमों द्वारा एक साथ भारी वाहन, चारपहिया वाहन एवं दोपहिया वाहन चालकों की चेकिंग की गई। पुलिस द्वारा चेकिंग अभियान में ब्रेथ एनलाइजर के माध्यम से परीक्षण कर 13 वाहन चालकों को शराब पीकर वाहन चालन करते हुए पकड़ा गया है, जिनके विरुद्ध कार्यवाही कर उनके वाहन जप्त किया गया है। उक्त जप्त सभी 13 वाहनों को विधिवत कार्यवाही करते हुए न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। जिला बलौदाबाजार-भाटापारा यातायात पुलिस द्वारा शराब पीकर वाहन चलाने वाले लोगों के ऊपर सख्ती से लगातार कार्यवाही की जा रही हैं। पुलिस आम नागरिकों से अपील करती हैं कि आप सभी यातायात के नियमो का पालन करें किसी भी स्थिति में शराब पीकर वाहन न चलावे।

निरीक्षण के दौरान राजस्व अमले ने 12 क्विंटल पुराना धान किया जब्त

गोपाल सिंह विद्रोही

सूरजपुर ब्यूरो(दैनिक विश्व परिवार)-धान खरीदी केंद्र शिवप्रसादनगर तहसील भैयाथान का निरीक्षण तहसीलदार द्वारा किया गया। मौके पर नायब तहसीलदार, राजस्व निरीक्षक, पटवारी एवं खाद्य निरीक्षक भी उपस्थित थे। निरीक्षण के दौरान धान खरीदी केंद्र में 30 बोरा लगभग 12 क्विंटल पुराना धान की जब्त किया गया। टीम के द्वारा प्रकरण बनाकर अग्रिम कार्यवाही हेतु प्रस्तुत किया गया है, जिसमें मंडी अधिनियम के तहत आगे की कार्यवाही सुनिश्चित की जायेगी।

ईश्वर जायसवाल के किराना दुकान में 214 बोरी धान जप्त-बतरा तहसील भटगांव में ईश्वर प्रसाद जायसवाल आ. बिन्देश्वर के जायसवाल किराना स्टोर का निरीक्षण तहसीलदार भटगांव, राजस्व निरीक्षण भटगांव, हल्का पटवारी बतरा द्वारा किया गया। उक्त किराना दूकान में अवैध रूप से भण्डारित किये गए कुल 214 बोरी धान अनुमानित वजन 85.60 क्विंटल धान को जप्त कर मंडी अधिनियम के तहत कार्यवाही किया जा रहा हैं। दूकान संचालक के पास धान भण्डारण से संबंधित वैध दस्तावेज नहीं पाया गया।

उम्मीद की किरण बनी मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना

योजना का लाभ लेकर जॉयना ने दी ब्रेस्ट कैंसर को मात

कोरबा(विश्व परिवार)। आज से करीब 14 माह पहले जब मुझे पता चला कि मुझे असाध्य बीमारी कैंसरहै, तो ऐसा लगा कि मानो मेरे पैरों के नीचे से जमीन ही खिसक गई हो। फिर कैंसर से जिंदगी की जद्दोजहद शुरू हो गई। इस बड़ी बीमारी से लड़ने के लिए साहस तो मेरे पास था, लेकिन पैसों की कमी मेरे इलाज की राह में रोड़ा बन रहा था। ऐसी विकट परिस्थिति में मुख्यमंत्री विषेष स्वास्थ्य सहायता योजना से मिला लाभ मेरे और मेरे परिवार के लिए अंधेरे में उम्मीद की किरण बन कर आई है। इससे मेरा बेहतर इलाज हो पाया और आज मैं पूरी तरह स्वस्थ जीवन व्यतीत कर रही हूं। यह कहना है ब्रेस्ट कैंसर जैसे गंभीर बीमारी को मात देने वाली 46 वर्षीय श्रीमती जॉयना मसीह का। कोरबा शहर के पोड़ीबहार निवासी जॉयना मसीह को एक दिन अचानक महसूस हुआ कि उनके सीने में दाईं तरफ एक गांठ हैं। उन्होंने गांठ की जांच कराई तो पता चला उन्हें ब्रेस्ट कैंसर है। जॉयना के पास पैसों की कमी थी और कैंसर का इलाज महंगा था। उनके रिश्तेदार ने बताया कि मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना से कैंसर रोग के इलाज के लिए आर्थिक रूप से मदद मिल सकती है। यह सुनकर उनकी आंखों में उम्मीद की किरण चमक उठी। उनके परिजनों ने मुख्यमंत्री विशेष सहायता योजना से इलाज हेतु आर्थिक मदद के लिए स्वास्थ्य विभाग के पहुना कार्यालय रायपुर में आवेदन दिया। चिकित्सकीय परीक्षण एवं चिकित्सकों द्वारा तैयार रिपोर्ट के अनुसार स्वास्थ्य विभाग द्वारा उनके आयुष्मान कार्ड में 90 हजार रुपए जमा किए गए और आयुष्मान कार्ड में पहले से ही 45 हजार रुपए जमा थे। जॉयना ने बताया कि कैंसर के इलाज के लिए उनकी 08 बार कीमो थैरेपी की गई, साथ ही उनका ऑपरेशन भी किया गया। उनके पति, मां और बहन ने उनके इलाज में कोई कमी नहीं की। परिजनों द्वारा अपनी सालों से जमा की हुई पूंजी व पैतृक संपत्ति का भी इलाज में उपयोग किया, परन्तु बेहतर उपचार के लिए पैसों की कमी सामने आ ही गई। ऐसे हालात में मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना से मिले 01 लाख 35 हजार रुपए से बेहतर उपचार के साथ ही 21 दिन तक रेडिएषन किया गया। उचित उपचार के बाद वह अब स्वस्थ हैं और अपने सभी दैनिक कार्य सामान्य तरीके से कर रहीं हैं। जॉयना का कहना है कि मुख्यमंत्री विशेष स्वास्थ्य सहायता योजना से हुई मदद और इलाज से वह कैंसर जैसे गंभीर बीमारी से जंग जीती है, अब वह पूरी तरह स्वस्थ है।

पिकअप वाहन और कार की भिड़ंत, तीन की मौत

सूरजपुर(विश्व परिवार)। सूरजपुर जिले में बुधवार सुबह हुए एक भीषण सड़क हादसे में कार सवार तीन युवकों की मौत हो गई वहीं दो लोग गंभीर रूप से घायल हो गये। मिली जानकारी के अनुसार बुधवार सुबह जिले के प्रतापपुर थाना इलाके के अंबिकापुर मार्ग पर गोटगांवा में एक सब्जी से लोड पिकअप वाहन तथा कार में आमने-सामने की जोरदार भिड़ंत हो गई। इस हादसें में कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई और कार में सवार तीन युवकों की मौके पर ही मौत हो गई वहीं इस घटना में अन्य दो लोग गंभीर रूप से घायल हुए है। हादसे की सूचना मिलते ही रेस्क्यू टीम के साथ पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने सबसे पहले घायलों को पास के स्थानीय अस्पताल में पहुंचाया गया जहां प्राथमिक उपचार के बाद घायलों को अंबिकापुर रेफर कर दिया गया। बताया जाता है कि कार सवार तीनों मृतक वाड्रफनगर के रहने वाले थे। फिलहाल, पुलिस इस मामले की जांच कर रही है।

संपादकीय

पुलिस और जेल व्यवस्था

मुख्य मुद्दा यह है कि ये समस्या पैदा ही क्यों हुई है। स्पष्टत॰ इसकी जड़ें आपराधिक न्याय प्रक्रिया पर अमल से जुड़ी है। प्रश्न है कि क्या पुलिस और जेल व्यवस्था में बुनियादी सुधार के बिना कोई ठोस व्यावहारिक समाधान निकल सकता है? एलान सचमुच बड़ा है। आशा है कि इसके पीछे इरादा भी नेक होगा। इसके बावजूद जिस भावना से घोषणा हुई है, उसके जमीन पर उतर सकने को लेकर कुछ सवाल मौजूद हैं। एलान यह है कि ऐसे विचाराधीन कैदियों को रिहा किया जाएगा, जो अपनी संभावित सजा का एक तिहाई हिस्सा काट चुके हैं। गृह मंत्री अमित शाह ने धीमी न्याय प्रक्रिया से निपटने के लिए नई पहल की घोषणा की। उन्होंने दो-टूक कहा कि छोटे अपराधों के आरोप में बंद ऐसे कैदियों को जमानत दी जाएगी, जिन्होंने अपनी संभावित सजा का एक-तिहाई हिस्सा काट लिया है। इसके पहले राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने पिछले वर्ष संविधान दिवस पर अपने भाषण में जेलों में बढ़ती भीड़ की ओर ध्यान खींचा था। उन्होंने न्याय की ऊंची लागत की समस्या का जिक्र करते हुए शासन की तीनों शाखाओंङ्क कार्यपालिका, न्यायपालिका और विधायिकाङ्क से इसका समाधान खोजने की अपील की थी। बहरहाल, कुछ व्यावहारिक सवाल हैं। मुख्य मुद्दा यह है कि ये समस्या पैदा ही क्यों हुई है। स्पष्टत॰ इसकी जड़ें आपराधिक न्याय प्रक्रिया पर अमल से जुड़ी है। प्रश्न है कि क्या पुलिस और जेल व्यवस्था में बुनियादी सुधार के बिना कोई ठोस व्यावहारिक समाधान निकल सकता है? फिर मसले का संबंध न्यायपालिका से भी जुड़ता है। न्यायपालिका में जजों की भारी कमी और जमानत के मौजूदा धन-आधारित मॉडल का विकल्प ढूंढे बिना उपरोक्त नेक इरादे को अमली जामा पहना सकना कठिन हो सकता है। दरअसल, आधुनिक न्याय व्यवस्था में जैसाकि कहा जाता है, बेल नियम और जेल अपवाद होना चाहिए। यानी जमानत मिलना सभी मामलों में सामान्य नियम होना चाहिए। मगर कई ऐसे मामले हैं, जिनमें राजनीतिक मकसदों से व्यक्तियों पर गंभीर इल्जाम मढ़ दिए जाते हैं। वर्तमान सरकार के कार्यकाल में यह चलन ज्यादा ही बढ़ गया है। ऐसे मामलों का क्या समाधान होगा? यानी समस्या का एक सूत्र सरकार के अपने नजरिए में भी है। कुल नतीजा जेलों में भारी भीड़ है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार 2024 की शुरुआत तक 1,34,799 लोग सुनवाई के इंतजार में जेलों में बंद थे, जिनमें से 11,448 पांच साल से ज्यादा समय से बिना सजा के जेल में हैं।

भारतीय संविधान में कलात्मकता

गजेंद्र सिंह शेखावत, केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री, भारत सरकार

हमारा भारत देश संस्कृति और ऐतिहासिक विरासत का एक जीता जागता अनुभव है। इसके इतिहास को सरल शब्दों में व्यक्त करना अत्यंत कठिन है। इससे भी अधिक कठिन है पांच हजार से अधिक वर्षों की सभ्यता के इतिहास को एक दस्तावेज़ के रूप में व्यक्त करना, जो देश की स्वतंत्रता के समय एक नए स्वतंत्र हुए राष्ट्र के भाग्य का मार्गदर्शन करने वाला हो। लेकिन आचार्य नंदलाल बोस केवल एक कलाकार नहीं थे और भारत के संविधान पर चित्रण उनके लिये केवल एक और कार्य नहीं था। संविधान में चित्रण के लिए उनकी दृष्टि हड़प्पा सभ्यता के समय से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तक भारत की यात्रा का वर्णन करती है। यह सभी चित्रण संविधान के अंतिम पृष्ठ पर सूचीबद्ध हैं और उन्हें बारह ऐतिहासिक काल में वर्गीकृत किया गया है: मोहनजोदड़ो काल, वैदिक काल, महाकाव्य काल, महाजनपद और नंद काल, मौर्य काल, गुप्त काल, मध्यकालीन काल, मुस्लिम काल, ब्रिटिश काल, भारत का स्वतंत्रता आंदोलन, स्वतंत्रता के लिए क्रांतिकारी आंदोलन और प्राकृतिक विशेषताएँ। संविधान की शुरुआत हमारे राष्ट्रीय प्रतीक के चित्रण से होती है। नंदलाल बोस इस बात को लेकर बहुत स्पष्ट थे कि प्रतीक में शेर बिल्कुल असली शेरों की तरह दिखें, उनकी चाल और चेहरे के हाव-भाव सही हों और आयु के हिसाब से उनमें बदलाव हो। राष्ट्रीय प्रतीक के डिजाइनर दीनानाथ भार्गव, जो उस समय कला भवन में एक युवा छात्र थे, इस कलाकृति को चित्रित करने से पहले शेरों के हाव-भाव, शारीरिक भाषा और तौर-तरीकों का अध्ययन करने के लिए महीनों तक कोलकाता चिड़ियाघर गए। प्रस्तावना पृष्ठ और कई अन्य पृष्ठों को बेहर राममनोहर सिन्हा ने डिजाइन किया था। नंदलाल बोस ने बिना किसी बदलाव के प्रस्तावना हेतु सिन्हा जी की बनाई कलाकृति का समर्थन किया। इस पृष्ठ पर निचले दाएं कोने में देवनागरी में सिन्हा का संक्षिप्त हस्ताक्षर राम है। संविधान की प्रस्तावना एक हाथ से लिखा हुआ लेख है जो आयताकार बॉर्डर से घिरा हुआ है। बॉर्डर के चार कोनों में चार पशुओं को दर्शाया गया है। दर्शाए गए चार जानवर भारत के राष्ट्रीय प्रतीक के आधार से लिए गए हैं। बॉर्डर की कलाकृति में कमल की आकृति प्रमुखता से दिखाई देती है। कमल की आकृति बॉर्डर कलाकृति में प्रमुखता से दिखाई देती है। संविधान का प्रत्येक भाग एक चित्र से आरंभ होता है और अलग-अलग पृष्ठों पर अलग-अलग बॉर्डर डिज़ाइन दर्शाए गए हैं। कलाकारों के हस्ताक्षर चित्र पर और बॉर्डर के पास दिखाई देते हैं जो इस प्रोजेक्ट में सभी के सहयोग को दर्शाता है। अनेक पृष्ठों पर कई हस्ताक्षर हैं जो बंगाली, हिंदी, तमिल और अंग्रेजी में दिखाई देते हैं। भारत के संविधान के भाग 19 में विविध विषयों से संबंधित एक चित्र है जिसमें नेताजी सैन्य पोशाक में अपने सैनिकों से घिरे हुए सलामी दे रहे हैं। नंदलाल बोस के हस्ताक्षर चित्रण पर दिखाई देते हैं और ए. पेरुमल के हस्ताक्षर पृष्ठ के बाएं निचले कोने पर दिखाई देते हैं। वे कला को लोगों तक ले जाने वाले कलाकार के रूप में प्रसिद्ध हुए। वे शांतिनिकेतन के गाँवों में जाते और संथाल घरों की दीवारों को जानवरों, पक्षियों और पेड़ों वाली प्रकृति की थीम से सजाते। वे शांतिनिकेतन के कला भवन में चार दशकों से अधिक समय तक नंदलाल बोस जैसे महान कलाकारों के साथ रहे और काम किया, उन्हें स्नेह से 'पेरुमलदा' कहा जाता था। संविधान का भाग ङ्कढ्ढ, जो प्रथम अनुसूची के भाग॰ में राज्यों से संबंधित है, वह ध्यान में बैठे भगवान महावीर की समृद्ध रंगीन चित्र से शुरू होता है, जिसमें वे अपनी आँखें बंद करके और हथेलियाँ एक दूसरे पर टिकाकर बैठे हुए हैं। भगवान महावीर के दोनों ओर एक-एक पेड़ हैं और फ्रेम में एक मोर भी दिखाई दे रहा है जो प्रकृति में सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व को दर्शाता है। यह मूल संविधान के कुछ रंगीन चित्रों में से एक है। रंगीन चित्रों में जमुना सेन और नंदलाल बोस के हस्ताक्षर हैं। इस पृष्ठ पर बॉर्डर डिज़ाइन में राजनीति नामक कलाकार के हस्ताक्षर भी हैं। भारतीय संविधान का भाग 15 चुनावों पर केंद्रित है। इस पृष्ठ पर दिए गए चित्रों में भारत के दो वीर सपूत छत्रपति शिवाजी महाराज और गुरु गोविंद सिंह को दिखाया गया है। इस पृष्ठ पर दिए गए चित्र धीरेंद्र कृष्ण देब बर्मन द्वारा बनाए गए हैं, जो त्रिपुरा राजघराने के सदस्य थे और रवींद्रनाथ टैगोर और नंदलाल बोस के साथ उनके घनिष्ठ संबंध थे। बॉर्डर डिज़ाइन पर कृपाल सिंह शेखावत के हस्ताक्षर हैं, जो भारत के एक प्रसिद्ध कलाकार और मिट्टी के बर्तन बनाने वाले

थे, जिन्हें जयपुर की प्रतिष्ठित ब्लू पॉटरी की कला को पुनर्जीवित करने के लिए जाना जाता है। शांतिनिकेतन में ललित कला संस्थान कला भवन ने भारत और दुनिया के सभी कोनों से छात्रों और कलाकारों को आकर्षित किया, इस प्रकार विभिन्न प्रभावों को समाहित करते हुए उत्कृष्टता की निरंतर खोज करते हुए एक इकोसिस्टम निर्मित किया और अंत में, एक अनूठी भारतीय शैली और कला निर्मित की। इस पर काम करने वाले कई कलाकारों ने अपने करियर में महान ऊंचाइयों को हासिल किया, लेकिन इस परियोजना के समय शांतिनिकेतन के छात्र और सहयोगी ही थे जो अपने श्रद्धेय 'मास्टर मोशाय' नंदलाल बोस के सपने को जीवंत करने के लिए प्रयत्नशील थे। संविधान में चित्रों की प्रेरणा भारत के विशाल इतिहास, भौतिक परिदृश्य, पौराणिक चित्र और स्वतंत्रता संग्राम में निहित है। भारत के संविधान का भाग 13 'भारतीय क्षेत्र में व्यापार, वाणिज्य और उनके परस्पर संबंधो' से संबंधित है। इस पृष्ठ पर दिया गया चित्रण महाबिलापुरम में स्मारकों के समूह का हिस्सा है जो यूनेस्को द्वारा अंकित विश्व धरोहर स्थल है। 'गंगा का अवतरण' एक बड़ी, खुली हवा में बनी चट्टान की नक्काशी वाली मूर्ति है जो स्वर्ग से धरती पर गंगा नदी के उतरने के कथा को पत्थर में दर्शाती है। नंदलाल बोस के हस्ताक्षर चित्र पर दिखाई देते हैं और जमुना सेन का नाम बॉर्डर के बाएं निचले कोने पर दिखाई देता है। भाग 3 जो मौलिक अधिकारों से संबंधित है, उसमें रामायण का एक दृश्य दिखाया गया है। इस पृष्ठ के बॉर्डर पर जमुना सेन के हस्ताक्षर हैं। भाग 4 जो राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों से संबंधित है, उसमें महाभारत का एक दृश्य दिखाया गया है। बानी पटेल और नंदलाल बोस के नाम दाईं ओर नीचे दिए गए चित्रण पर दिखाई देते हैं और विनायक शिवराम मसोजी का नाम बॉर्डर के बाएं कोने पर दिखाई देता है। संविधान का भाग 7 'पहली अनुसूची के भाग बी में शामिल राज्यों' से संबंधित है। इस खंड की शुरुआत में दिए गए चित्रण में सम्राट अशोक द्वारा बौद्ध धर्म के प्रसार को दर्शाया गया है। उन्हें हाथी पर सवार दिखाया गया है, जो सभी तरह के साज-सज्जा से सुसज्जित है और बौद्ध भिक्षुओं से घिरा हुआ है। यह चित्रण अजंता की शैली में है, जिसमें भिक्षुओं को शरीर के ऊपरी हिस्से को बिना वस्त्रों और आभूषणों के साथ दिखाया गया है। यह चित्रण नंदलाल बोस द्वारा किया गया था, जिनका काम अजंता भित्तिचित्रों में पाई जाने वाली कलात्मक परंपराओं से बहुत प्रभावित था। चित्रण के निचले बाएँ भाग पर ए. पेरुमल का नाम भी दिखाई देता है। बॉर्डर डिज़ाइन में ब्योहर राममनोहर सिन्हा के हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने प्रस्तावना और कई अन्य पृष्ठों को भी डिज़ाइन किया था। यहाँ उन्होंने हिंदी में राममनोहर के रूप में हस्ताक्षर किए हैं। यह संविधान के उन कुछ पन्नों में से एक है, जिस पर नंदलाल बोस और उनके सबसे वरिष्ठ छात्र ब्योहर राममनोहर सिन्हा दोनों के नाम हैं। भारत का संविधान इस मायने में अनूठा है कि यह मूल रूप से एक हस्तलिखित दस्तावेज़ था। इसे अंग्रेजी में प्रेम बिहारी रायज़ादा और हिंदी में वसंत के. वैद्य ने सुलेखित किया था। रायज़ादा ने प्रवाहपूर्ण इटैलिक शैली का इस्तेमाल किया और सुलेख की कला अपने दादा से सीखी। संविधान हॉल (जिसे अब कॉन्स्टिट्यूशन क्लब ऑफ़ इंडिया के नाम से जाना जाता है) के एक कमरे में काम करते हुए, उन्होंने छह महीने के दौरान दस्तावेज़ तैयार किया। उन्होंने इसे लिखते समय सैकड़ों पेन निब का इस्तेमाल किया। भारत के संविधान के अंग्रेजी संस्करण के सुलेखक प्रेम बिहारी नारायण रायज़ादा (प्रेम) के हस्ताक्षर दस्तावेज़ के हर पृष्ठ पर दिखाई देते हैं। राष्ट्रीय महत्व की इस परियोजना को शुरू करने के लिए उन्होंने यही एकमात्र अनुरोध किया था। भारत का संविधान एक मौलिक कला ग्रंथ है जो समय की कसौटी पर खरा उतरा है। भारतीय संविधान में कलात्मकता भारत के बहुस्तरीय इतिहास को दर्शाती है और सामाजिक सांस्कृतिक, पौराणिक, क्षेत्रीय, आध्यात्मिक, भौतिक परिदृश्य तथा अन्य कारकों के प्रति श्रद्धांजलि है जो भारत को एक अद्वितीय और जीवंत अनुभव बनाते हैं। यह एक ऐसे राष्ट्र की वास्तविकता को दर्शाता है जो अपने प्राचीन अतीत को स्वीकार करता है, विविधता में एकता का उत्सव मनाता है और भविष्य की ओर देखता है।

आलेख

कांग्रेस को वास्तविकता समझनी होगी

अजीत द्विवेदी

मीर तकी मीर का शेर है, %पत्ता पत्ता बूटा बूटा हाल हमारा जाने है, जाने न जाने गुल ही न जाने बाग तो सारा जाने है'। कांग्रेस का भी यही हाल है। उसका हाल सारी दुनिया को पता है। सारे पत्रकार और राजनीतिक विश्लेषक जानते हैं कि उसकी क्या कमी है। विपक्ष की दूसरी पार्टियां, जो उसके गठबंधन में हैं या नहीं हैं उन सबको भी पता है कि कांग्रेस की क्या कमजोरी है और भाजपा के शीर्ष नेता खास कर नरेंद्र मोदी और अमित शाह को तो उसकी हर नस के बारे में पता है। सिर्फ कांग्रेस है, जिसको अपने हाल की कोई खबर नहीं है। कांग्रेस नेतृत्व को अपनी कमजोरियों का पता नहीं है। गांधी परिवार अब भी इस मुगालते में है कि उसे सिर्फ मुख्य विपक्षी पार्टी बने रहना है, बाकी सारी चीजें अपने आप हो जाएंगी। जैसे 1977 में हारे तो 1980 में सत्ता में आ गए या 1989 में हारे तो 1991 में आ गए या 1996 में हारे तो 2004 में आ गए वैसे ही 2014 में हारे हैं तो क्या हो गया अगर मुख्य विपक्षी बने रहते हैं तो फिर अपने आप सत्ता में आ जाएंगे। कांग्रेस नेता इस बात से भी सबक नहीं ले रहे हैं कि लगातार दो चुनावों में लोकसभा में कांग्रेस को मुख्य विपक्षी पार्टी का दर्जा भी नहीं मिला था और एक एक करके वह राज्यों में भी यह दर्जा गंवाती जा रही है। क्या किसी ने सोचा है कि कितने बड़े राज्य हैं, जिनमें देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस मुख्य विपक्षी पार्टी भी नहीं है? जिन राज्यों में वह हाल के दिनों तक सत्ता में थी वहां से भी ऐसे उखड़ी है कि अब विपक्ष में भी जगह नहीं है। दिल्ली में लगातार तीन चुनाव जीतने के बाद वह 10 साल से शून्य पर है। आंध्र प्रदेश में दो चुनाव लगातार जीतने के बाद वह 10 साल से शून्य पर है। पश्चिम बंगाल में पिछली विधानसभा में उसके 40 विधायक थे और इस बार वह शून्य पर है। लगभग एक दर्जन राज्यों में उसका एक भी विधायक नहीं है। उसने गुजरात और महाराष्ट्र में मुख्य विपक्षी पार्टी का दर्जा गंवा दिया है। 403 विधायकों वाली उत्तर प्रदेश में उसके सिर्फ दो विधायक हैं। ये आंकड़े कांग्रेस के भविष्य की बहुत बुरी तस्वीर पेश कर रहे हैं लेकिन ऐसा लग रहा है कि कांग्रेस को इसकी या तो खबर नहीं है या परवाह नहीं है। लोकसभा चुनाव में अपेक्षाकृत बेहतर प्रदर्शन करने के बाद हरियाणा, जम्मू कश्मीर और महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव बुरी तरह से हारने के बाद कांग्रेस की बुनियादी समस्याओं को रेखांकित करने वाले सैकड़ों लेख लिखे गए हैं और हजारों नहीं, बल्कि लाखों सोशल मीडिया पोस्ट्स लिखी गई हैं। कांग्रेस के इकोसिस्टम के लोगों ने कई तरह से समझाया है कि कांग्रेस की असली समस्या क्या है और उसे कैसे दूर किया जा सकता है। पता नहीं कांग्रेस में किसी ने इनकी नोटिस ली या नहीं लेकिन कांग्रेस कार्य समिति की बैठक होने जा रही है। शुक्रवार, 29 नवंबर को कांग्रेस कार्य समिति की बैठक होगी, जिसमें हरियाणा और महाराष्ट्र के नतीजों की समीक्षा होगी। पता नहीं जम्मू कश्मीर के नतीजों की समीक्षा क्यों नहीं होगी, जहां कांग्रेस की सहयोगी नेशनल कॉन्फ्रेंस की सीटें 15 से बढ़ कर 40 हो गईं और कांग्रेस की संख्या 12 से घट कर सात रह गई? कांग्रेस को निश्चित रूप से इसकी भी समीक्षा करनी चाहिए। अगर वह नहीं करती है तो इसका मतलब है कि उसका इरादा ईमानदार समीक्षा करने का नहीं है, बल्कि औपचारिकता निभाने का है। बहरहाल, हरियाणा और महाराष्ट्र के चुनाव नतीजों के बाद कांग्रेस की जो समस्याएं उभर कर सामने आई हैं उनमें पहले नंबर पर यह है कि कांग्रेस सहयोगी पार्टियों की चिंता नहीं करती है। वह जरा सी ताकत मिलते ही धौंस दिखाने लगती है और बड़े भाई की भूमिका में आ जाती है। लगातार दो चुनाव हारने के बाद उसने लोकसभा में जरूर समझौता किया और कम सीटों पर लड़ी लेकिन प्रदर्शन सुधरते ही उसने सहयोगियों पर दबाव बनाना शुरू कर दिया। उसने हरियाणा में समाजवादी पार्टी की मांग ठुकराई तो आम आदमी पार्टी को अकेले लडऩे दिया। इसी तरह महाराष्ट्र में जब लोकसभा चुनाव में शिव सेना ज्यादा सीटों पर लड़ी थी और नतीजे महा विकास अघाड़ी के पक्ष में आए थे तो विधानसभा चुनाव में भी क्यों नहीं शिव सेना को ही बड़ी पार्टी के तौर पर लडऩे दिया गया? अगर शिव सेना ज्यादा सीटों पर लड़ती तो उद्धव ठाकरे के सीएम का चेहरा होने का संदेश जाता है और तब शिव सैनिक एकजुट हो सकते थे। अगर कांग्रेस ने आखिरी समय तक ज्यादा सीट की खींचतान में मामला नहीं लटकाए रखा होता तो तस्वीर कुछ और होती। कांग्रेस की दूसरी कमी यह उभर कर आई है कि वह गंभीरता से चुनाव नहीं लड़ती है।

इच्छा शक्ति से ही नियंत्रित हो सकेगा प्रदूषण

रजनीश कपूर

हम और आप जब भी कोई वाहन ख़रीदते हैं तो हम उस वाहन की क़ीमत के साथ-साथ रोड टैक्स, जीएसटी आदि टैक्स भी देते हैं। इन सब टैक्स देने का मतलब हुआ कि यह सब राशि सरकार की जेब में जाएगी और घूम कर जनता के विकास के लिए इस्तेमाल की जाएगी। परंतु रोड टैक्स के नाम पर ली जाने वाली मोटी रक़म क्या वास्तव में जनता पर ख़र्च होती है? बीते कुछ सप्ताह से दिल्ली एनसीआर और उत्तर भारत को प्रदूषण के बादलों ने घेर रखा है। इससे आम जीवन अस्त-व्यस्त हो चुका है। प्रदूषण की रोकथाम को लेकर सरकार ने कई तरह की पाबंदियाँ लगा दी हैं। इसके चलते असमंजस की स्थिति बनी हुई है। लोग इस बात को लेकर चिंतित हैं कि इन पाबंदियों के चलते कई रोजग़ारों पर भी असर पडऩे लगा है। निर्माण कार्य में लगे दिहाड़ी मज़दूर वर्ग इन पाबंदियों के चलते सबसे अधिक परेशान है। तमाम टीवी चैनलों पर प्रदूषण के बिगड़ते स्तर पर काफ़ी बहस हो रही है। परंतु क्या किसी ने हमारे देश में प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए सही व ठोस कदम उठाने की बात की है? क्या केवल निर्माण कार्यों और वाहनों पर प्रतिबंध से प्रदूषण के स्तर में कमी आएगी? ऐसे अनेकों कारण हैं जिन पर अगर सरकार ध्यान दे तो प्रदूषण में नियंत्रण पाया जा सकता है। सबसे पहले बात करें वाहन प्रदूषण की। इस बात पर इसी कॉलम में कई बार लिखा जा चुका है कि एक विशेष आयु या श्रेणी के वाहन को प्रतिबंध करने से क्या प्रदूषण में कमी आएगी? इसका उत्तर हाँ और नहीं दोनों ही है। यदि कोई वाहन, जो कि पुराने माणकों पर चल रहा है और उसके पास वैध पीयूसी प्रमाण पत्र नहीं है तो निश्चित रूप से ऐसे वाहन को प्रतिबंधित किया जाना चाहिए। परंतु यदि वही वाहन प्रदूषण के तय माणकों की सीमा में पाया जाता है तो उसे प्रतिबंधित करने का क्या औचित्य है? हम और आप जब भी कोई वाहन ख़रीदते हैं तो हम उस वाहन की क़ीमत के साथ-साथ रोड टैक्स, जीएसटी आदि टैक्स भी देते हैं। इन सब टैक्स देने का मतलब हुआ कि यह सब राशि सरकार की जेब में जाएगी और घूम कर जनता के विकास के लिए इस्तेमाल की जाएगी। परंतु रोड टैक्स के नाम पर ली जाने वाली मोटी रक़म क्या वास्तव में जनता पर ख़र्च होती है? क्या हमें अपनी महँगी गाडिय़ों को चलाने के लिए साफ़-सुथरी और बेहतरीन सड़कें मिलती हैं? टूटी-फूटी सड़कों की समय-समय पर मरम्मत होती है? क्या देश भर में सड़कों की मरम्मत करने वाली एजेंसियाँ अपना काम पूरी निष्ठा से करतीं हैं? इनमें से अधिकतर सवालों के जवाब आपको नहीं में ही मिलेंगे। टूटी-फूटी सड़कों पर वाहन अवरोधों के साथ चलने पर मजबूर होते हैं, नतीजा जगह-जगह ट्रैफ़िक जाम हो जाता है। ऐसे जाम में खड़े रहकर आप न सिर्फ़ अपना समय ज़ाया करते हैं बल्कि महँगा ईंधन भी ज़ाया करते हैं। जितनी देर तक जाम लगा रहेगा, आपका वाहन बंपर-टू-बंपर चलेगा और बढ़ते हुए प्रदूषण की आग में घी का काम करेगा। ऐसे में जिन वाहनों को पुराना समझ कर प्रतिबंधित किया जाता है, उनसे कहीं ज़्यादा मात्रा में नये वाहनों द्वारा प्रदूषण होता है। इसलिए लोक निर्माण विभाग या अन्य एजेंसियों की यह ज़िम्मेदारी होनी चाहिए कि वह सड़कों को दुरुस्त रखें जिससे प्रदूषण को बढ़ावा न मिले। इसके साथ ही ट्रैफ़िक नियंत्रण की समस्या भी एस समस्या है जिससे प्रदूषण को बढ़ावा मिलता है। मिसाल के तौर पर आपको आपके शहर में ऐसे कई चौराहे मिल जाएँगे जहां लाल-बत्ती की अवधि ज़रूरत और ट्रैफ़िक के प्रवाह के अनुसार मेल नहीं खाती। नतीजा, ऐसे चौराहों पर ट्रैफ़िक की लंबी क़तारें। ऐसा नहीं है कि पूरा दिन ही ऐसे चौराहों पर लंबी क़तारें लगती हैं। ज़्यादातर क़तारें ट्रेफिक के पीक घंटों में लगती हैं। यदि उस समय ट्रैफ़िक पुलिस द्वारा चुनिंदा चौराहों को नियंत्रित किया जाए तो जाम की समस्या पर आसानी से क़ाबू पाया जा सकता है। इसके लिए कुछ मामूली से ही परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। आज गूगल मैप पर आप घर बैठे ही हर गली नुक्कड़ का ट्रैफ़िक देख सकते हैं। यदि ्लान कर सकते हैं तो ट्रैफ़िक कंट्रोल रूम के अधिकारी, संबंधित इलाक़े के ट्रैफ़िक अधिकारी को इस समस्या के प्रति झकझोर क्यों नहीं सकते? ट्रैफ़िक को नियंत्रित करने के जैसे, ही प्रदूषण के अन्य कारकों पर भी लगाम कसी जा सकती है। ज़रूरत है तो इच्छा शक्ति की। यहाँ आपको याद दिलाना चाहूँगा कि 2010 में जब हमारे देश में कॉमनवेल्थ गेम्स का आयोजन हुआ था तो दिल्ली में एक ऐसी व्यवस्था बनाई गई थी कि ट्रैफ़िक जाम नहीं होते थे। जगह-जगह पर ट्रैफ़िक पुलिस के सिपाही ट्रैफ़िक पर पैनी नजऱ बनाए हुए थे। यानी डंडे के ज़ोर पर व्यवस्था को नियंत्रित किया जा रहा था। यदि एक ट्रैफ़िक की समस्या को डंडे के ज़ोर पर, किसी विशेष इंतज़ाम के लिए नियंत्रित जा सकता है तो आम दिनों में क्यों नहीं? अब बात करें दीपावली के बाद हर वर्ष होने वाली पराली जलाए जाने की। यह बात जाग-ज़ाहिर है कि पंजाब, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के किसान हर वर्ष इन्हीं दिनों पराली जलाते हैं। यह समस्या हर वर्ष प्रदूषण का कारण बनती है। हर वर्ष बड़ी-बड़ी बातें और घोषणाएँ की जाती हैं लेकिन इस समस्या के समाधान के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाए जाते। यदि कॉमनवेल्थ गेम्स का आयोजन हो या कोविड के दौरान लॉकडाउन लागू करना हो, जब इन्हें सख़्ती से लागू किया जा सकता है तो पराली को जलाने से क्यों नहीं रोका जा सकता? ठीक उसी तरह कारख़ानों से निकलने वाले धुएँ को भी नियंत्रित करना असंभव नहीं है। सरकार चाहे तो इस राह में ठोस कदम उठा कर प्रदूषण को नियंत्रण में ला सकती है। केवल नारों, घोषणाओं और प्रतिबंधों से नहीं इच्छा शक्ति से ही नियंत्रित हो सकेगा प्रदूषण। जहां चाह वहाँ राह!

बहुचर्चित राष्ट्रपति पद ट्रंप के राष्ट्रवाद की जीत

डा. अश्विनी महाजन

भारत को अपने आत्मनिर्भर भारत पहल के माध्यम से अपने घरेलू विनिर्माण को मजबूत करने का अवसर मिल सकता है। हालांकि, ट्रम्प के संरक्षणवादी रुख और टैरिफबढ़ाने के कारण भारत को निर्यात में नुकसान होने की चिंता हो सकती है संयुक्त राज्य अमेरिका के बहुचर्चित राष्ट्रपति पद के चुनाव में डोनॉल्ड ट्रंप अपनी प्रतिद्वंद्वी कमला हैरिस को पराजित कर राष्ट्रपति चुने जा चुके हैं। ऐसे में दुनिया भर में कयास लगाए जा रहे हैं कि अमरीका की आर्थिक और सामाजिक नीतियों में क्या बड़े बदलाव हो सकते हैं? पिछली बार भी जब ट्रम्प राष्ट्रपति बने थे तो उन्होंने नीतियों में बड़े फेरबदल किए थे। राष्ट्रवाद का उभार : वैश्वीकरण, आतंकवाद और धार्मिक उन्माद, युद्ध और आर्थिक उथल-पुथल के चलते पूरी दुनिया में राष्ट्रवाद उभार पर है। ड्डवर्तमान अमरीकी राष्ट्रपति चुनाव के नतीजे भी उसी तर्ज पर माने जा सकते हैं। गौरतलब है कि ट्रंप जब पहली बार राष्ट्रपति बने थे, तो उन्होंने चुनाव से पहले और चुनाव के बाद भी इस बात को बार-बार दोहराया था कि वे चीनी वस्तुओं के अंधाधुंध आयात के कारण जंग खाती फैक्ट्रियों को दोबारा शुरू करना चाहते हैं। वे अमरीका की अप्रवासी नीतियों में भी आमूलचूल परिवर्तन चाहते हैं ताकि अमरीकियों के रोजगार की रक्षा हो सके। उन्होंने तो यहां तक कहा कि वे मैक्सिको से हो रही गैर-कानूनी घुसपैठ को रोकने के लिए पूरी सीमा पर दीवार खड़ी करना चाहते हैं। उनका इस बात पर जोर रहा था कि अमरीका को दूरदराज के देशों में सशस्त्र दखल रोकना है, ताकि अमरीका को गैर जरूरी खर्चों से बचाया जा सके। रूस जैसे देश जिसके साथ अमेरिका के संबंध कभी भी मधुर नहीं रहे, उसके साथ भी ट्रंप ने दोस्ती का हाथ बढ़ाया और रूस के राष्ट्रपति पुतिन के साथ उनकी मित्रता भी काफी चर्चा में रही। अपनी इन्हीं नीतियों के कारण ट्रम्प बहुसंख्यक अमरीकियों में अपनी लोकप्रियता के चलते पुन: राष्ट्रपति बनने में सफल हो सके। अमेरिका प्रथम ट्रंप प्रशासन का मूल मंत्र रहा है। यानी कुल मिलाकर अमेरिका में ट्रंप के राष्ट्रवाद का जादू सिर चढक़र बोल रहा है। उधर यूरोप में भी राष्ट्रवाद पुन: उभार ले रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद यूरोपीय देशों में पहले उदारवाद और बाद में भूमंडलीकरण और यहां तक कि खुली अप्रवासी नीति भी अपनाई जाने लगी थी। लेकिन आज यूरोपीय देश राष्ट्रवाद पर सवार होकर अपनी अर्थव्यवस्था और समाज की चिंता कर रहे हैं। सबसे पहले ब्रिटेन ने ब्रेक्सिट के माध्यम से स्वयं को यूरोपीय समुदाय से अलग किया। हालांकि ब्रिटेन के अलावा यूरोपीय समुदाय के सभी देश भी समुदाय में बने हुए हैं, लेकिन सभी देशों में जहां पूर्व में उदारवादी सरकारों का बोलबाला था, अब राष्ट्रवाद का ज्वार बढ़ता दिख रहा है। छह प्रमुख यूरोपीय देशों इटली, फिनलैंड, स्लोवाकिया, हंगरी, क्रोएशिया और चेक गणराज्य में तो राष्ट्रवादी सरकारें पहले से ही स्थापित हो चुकी हैं, कई अन्य देशों में राष्ट्रवादी पार्टियां काफी ताकतवर हो रही हैं। स्वीडन में सरकार का अस्तित्व राष्ट्रवादी दल नेशनलिस्ट स्वीडेन डेमोक्रेट के समर्थन पर टिका है। नीदरलैंड में इस्लाम विरोधी ग्रीट वाइल्डर का दल सत्ता

में महत्वपूर्ण भूमिका में है। जर्मनी और फ्रांस में भी राष्ट्रवादी राजनीतिक दलों का प्रभाव अभूतपूर्व रूप से बढ़ रहा है, और वो सत्ता के काफी नजदीक पहुंच रहे हैं। इन सब बदलावों का असर यूरोपीय समुदाय के चुनावों पर भी दिख रहा है। पंथनिरपेक्षता के नाम पर जैसे जैसे अल्पसंख्यक समुदायों का तुष्टिकरण बढ़ा, और तुष्टिकरण के साथ ही साथ अतिवाद भी बढ़ा। साथ हाल ही में फ्रांस और इंग्लैंड में इस अतिवाद के भयानक दृश्य भी सामने आए। इन सब घटनाओं से भी यूरोप और अमरीका में ही नहीं पूरी दुनिया में जनमानस का मूड बदला है। राष्ट्रवाद की जीत के मायने : चाहे यूरोप हो या अमरीका, राष्ट्रवाद की जीत के कई निहितार्थ हैं। सबसे पहले समझना होगा कि यह अतिवादी ताकतों की एक बड़ी हार है। ट्रम्प ने अपने चुनावी भाषणों में हिंदुओं की भूरि-भूरि प्रशंसा की है और अमरीका में उनकी भूमिका को सराहा है, और यहां तक कि स्वयं को हिंदुओं का बड़ा प्रशंसक तक बताया है। इससे पहले किसी अमरीकी राष्ट्रपति ने ऐसा नहीं किया। उधर हालांकि ट्रम्प मुस्लिमों के खिलाफतो नहीं, लेकिन उन्होंने साफ-साफकहा है कि जो मुस्लिम अप्रवासी हमास का समर्थन करेंगे, वे उन्हें अमरीका से बाहर कर देंगे। यानी ट्रम्प किसी भी प्रकार के अतिवाद के विरोधी हैं। गौरतलब है कि बाईडेन प्रशासन ने अतिवादी ताकतों का समर्थन करने वाली कनाडा सरकार का समर्थन किया था। आने वाला ट्रम्प प्रशासन ऐसा नहीं करेगा। महत्वपूर्ण है कि जहां अतिवादी, वामपंथी, वोक, समलैंगिक मानवाधिकार समर्थक एक तरफखड़े दिखाई देते हैं, ट्रंप ने स्पष्ट रूप से अमरीकी राष्ट्रवाद (अमेरिका प्रथम) का जो नारा दिया और जीत हासिल की, वह इस बात का प्रमाण है कि ट्रंप की जीत एक प्रकार से अतिवादी, वामपंथी, वॉकिज़्म आदि ताकतों की भी हार है। एलन मस्क की भूमिका : अमेरिकी चुनावों में अमेरिका के एक बड़े उद्योगपति और अरबपति एलन मस्क की भूमिका भी अमेरिकी चुनावों में महत्वपूर्ण रही। समझना होगा कि एलन मस्क निजी तौर पर वॉकिज्म शिकार हुए हैं। अमेरिका खास तौर पर कैलिफोर्निया राज्य में विद्यालय वॉकिज़्म इस कदर शिकार हैं कि पांच वर्ष के बच्चे से भी कहा जाता है कि वो स्वयं के बारे में निर्णय करने के लिए स्वतंत्र है कि वो किस लिंग को अपनाना चाहता है। बच्चों को लिंग बदलने के लिए प्रेरित ही नहीं प्रोत्साहित भी किया जाता है। इसी प्रकार एलन मस्क के पुत्र को भी बरगलाया गया और एलन मस्क से भी धोखे से सहमति ले ली गई और उनके पुत्र को हार्मोन्स देकर बालिका में बदल दिया गया।

दैनिक
विश्व परिवार
रायपुर/धर्म समाज/देश
रायपुर, शुक्रवार 06 दिसम्बर 2024
www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी ने सुनाया अपना अनुभव, दिल्ली का अनुभव मेरे लिए सर्वश्रेष्ठ रहा

दिल्ली (विश्व परिवार)। राजधानी दिल्ली के कृष्णा नगर जैन मंदिर में हो रही है भावलिंगी संत आचार्य श्री विमर्श सागर जी महामुनिराज की अमृत वाणी की वर्षा। प्रभात - संध्या की पावन बेला में कृष्णा नगर में जिनागम पंथी श्रद्धालु भक्त समुदाय का लगा रहता है मेला। समाज के बाल वृद्ध श्रावक श्राविकाओं का कहना है कि - आचार्य भगवन ने कृष्णा नगर दिल्ली में चातुर्मास हमारे उद्धार करने के लिए किया है। आचार्य संघ का अनुशासन हम सभी को जीवन जीने की कला सिखाता है। परम पूज्य आचार्य श्री आसीम और अकृत्रिम वात्सल्य से प्रभावित होकर नवयुवक - युवतियां आत्मसर्मण करते हुए वैराग्य के आभूषणों से अपने जीवन को सुसज्जित कर रहे है। वास्तव में आचार्य गुरूदेव का यह राजधानी का चातुर्मास हम जैसे पाषाण आत्माओं को भगवान आत्मा बनाने के लिए हुआ है। आचार्य प्रवर गुरूवर विमर्शसागर जी महामुनिराज के हम सभी पर महान उपकार है जिन्हें हम सभी भी भुला नहीं सकते।

भक्त समुदाय के मध्य एक जिनागम पंथी गुरूभक्त ने संध्याकालीन टूडेज सोल्यूशन में एक प्रश्न पूछते हुए कहा - हे आचार्य भगवान आप दिल्ली आए है आपकों हमारे दिल्ली में कैसा लगा, कृपया अपना अनुभव हमें बताइए ?

भावलिंगी संत आचार्य श्री ने अकृत्रिम वात्सल्य की धारा बहाते हुए कहा जब तक हम दिल्ली नहीं आए थे तब तक हमारी धारणा थी कि दिल्ली नही जान क्योंकि दिल्ली में हमारी चर्या का पालन नही हो पायेगा। इसीकारण सन 2014 में हमने बडौत चातुर्मास किया और दिल्ली के बाहर से ही निकल गए किन्तु दिल्ली नहीं आये। जब 2022 में गाजियाबाद आना हुआ, तब हमारे ही अनुज आचार्य प्रज्ञसागर जी ने दिल्ली आगमन हेतु निवेदन किया था, हमसे कहा गया कि आपकी चर्या पूर्णत: पालन करायी जाएगी। ऐसे निवेदन पर हमारा संघ के साथ दिल्ली आना हुआ और यमुना पार के प्राचीन जिनालयों के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ समय बाद हम तो दिल्ली से ले गये किन्तु दिल्ली वालों ने हमें अपने दिल से नहीं जाने दिया। हम आपके दिलों में थे, इसीलिए आप सब मुझे अपने दिलों में नहीं जाने देंगे। वास्तव में दिल्ली आकर हमारी धारणायें बदली, आज भी दिल्ली जाने वाले गुरू भक्त जैन संतो की श्रेष्ठ चर्या पालन कराने में समर्थ है। दिल्ली में श्रावक-श्राविकों के अंदर धर्म और संतो क प्रति श्रद्धा - भक्ति समर्पण देखा है। दिल्ली वालों ने बढ़ - चढ़कर चातुर्मास में संघ की सेवा की एवं भगवती जिनदीक्षा महोत्सव के अविस्मरणीय अनुभवों को अपने जीवन की धरोहर बनाया। भक्तों का आत्मसर्पण देखकर कह सकता हूं- अंत तक का दिल्ली का अनुभव मेरा सर्वश्रेष्ठ रहा है।

धन्य है दिगंबराचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज और उनकी चर्या, बढ़ते कदम नांदणी की ओर

जावगल/कर्नाटक (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। आचार्य श्री विरागसागर महाराज जी के सुशिष्य, आध्यात्म योगी, चर्या शिरोमणी, वितरागी श्रमण - संस्कृति के आध्यात्मिक सदुरू दिगंबराचार्य का नाम है- श्री विशुद्धसागरजी महाराज। धन्य है निर्ग्रंथ योगी दिगंबराचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज और उनकी चर्या- नांदणी से श्रवणबेलगोला, श्रवणबेलगोला से जैनरगुत्ती, और अभी जैनरगुत्ती से नांदणी की ओर निरंतर विहार शुरु है फिर भी है चेहरे पर मुस्कान।

चर्या शिरोमणी आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी महाराज संसघ का मंगल विहार जैनरगुत्ति हासन (कर्नाटक) पंचकल्याणक महोत्सव संपन्न करके नांदणी (महाराष्ट्र) की ओर प्रारंभ हुआ है। आज 5 दिसम्बर की आहार चर्या जावगल में संपन्न हुई। आगामी पंचकल्याणक और महामस्तकाभिषेक महोत्सव नांदणी महाराष्ट्र में 1 जनवरी 2025 से 9 जनवरी 2025 तक संपन्न होगा। भारत कि पावन वसुंधरा पर अनेकों ऋषी मुनीयों ने अपनी पवन चरण धुलि से इस वसुमती को परम पवित्र किया है और समाज को एक नई दिशा प्रदान कि है। इसी शृंखला में इक्कीसवीं सदी के एक दूर-दृष्टा, युवाओं के प्रेरणा पुंज, आगमनुसार आचरण कर के जन - जन को सद्-बोध देने वाले आध्यात्मिक गुरू आचार्य श्री विशुद्धसागरजी महाराज द्वारा वर्तमान में कि गई धर्मप्रभावना समाज के समक्ष उपस्थित है। सत्य, अहिंसा, मैत्री, जियो और जिने दो के साथ आचार्य विरागसागर महाराज जी के चमकते सितारे आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी का मुख्य नारा नमोस्तु शासन जयवंत हो है।

चर्या शिरोमणी आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी सहित विहार में उनके संघ के 19 शिष्य- श्रमण मुनि श्री सुव्रतसागर जी, श्रमण मुनि श्री साम्य सागर जी, श्रमण मुनि श्री संजयंत सागर जी, श्रमण मुनि श्री यशोधर सागर जी, श्रमण मुनि श्री यत्न सागर जी, श्रमण मुनि श्री निर्ग्रन्थ सागर जी, श्रमण मुनि श्री निर्मोह सागर जी, श्रमण मुनि श्री निसंग सागर जी, श्रमण मुनि श्री निर्विकल्प सागर जी, श्रमण मुनि श्री जितेंद्र सागर जी, श्रमण मुनि श्री सुभग सागर जी, श्रमण मुनि श्री सिद्ध सागर जी, श्रमण मुनि श्री सिद्धार्थ सागर जी, श्रमण मुनि श्री सहर्ष सागर जी, श्रमण मुनि श्री सत्यार्थ सागर जी, श्रमण मुनि श्री सार्थक सागर जी, श्रमण मुनि श्री सार्थ सागर जी, श्रमण मुनि श्री समकित सागर जी, श्रमण मुनि श्री सम्यक सागर जी। श्रमण संस्कृती के प्रमुख आचार्यो में से एक चर्या शिरोमणी दिगंबर जैन आचार्य 108 श्री विशुद्धसागर महाराज जी। गुरुदेव के चरणो में कोटिश : नमन। नमोस्तु शासन जयवंत हो। **-अभिषेक अशोक पाटील**

श्रुतसंवेगी श्रमण श्री आदित्यसागर जी महाराज ने कहा- आपका सबसे अच्छा मित्र आपका आत्मविश्वास है

अशोकनगर (विश्व परिवार)। जयदु जिणिंदो महावीरों। श्री विशुद्धकुल गौरव, आध्यात्मिक महाद्युति, श्रुतसंवेगी श्रमण श्री 108 आदित्यसागर जी, श्रुतप्रिय श्रमण श्री 108 अप्रमितसागर जी महाराज, अशोकनगर गौरव सहजानंदी श्रमण श्री 108 सहजसागर जी महाराज एवं क्षुल्लक श्री 105 श्रेयससागर जी महाराज अशोकनगर में विराजमान है। मुनीत्रय की चरण धूलि से पावन हो रही है, अशोकनगर की वसुधा। नित्यम आदित्यम आनंदम। श्रुतसंवेगी श्रमण श्री आदित्यसागर महाराज जी ने कहा कि इस जीवन का हर पुरुषार्थ शांती स्थापित करने का हो। भले ही इसके लिये कितना भी बडा बलिदान क्यों न देना पडे। मानकषाय या Ego बडा नही है। शांती ज्यादा बडी है। सही बात है- बडा वो नहीं जिसकी बात मान ली गई। बडा तो वो हैं, जिसके द्वारा शांती स्थापित कि गई। यह सोचकर कभी परेशान न हों कि क्या गलत हुआ है। इस बात पर ध्यान दें कि आगे क्या करना है। अपनी ऊर्जा जवाब खोजने में लगायें। सवाल पैदा करने में न लगायें। सही बात है- समस्याओं कि नहीं, समाधानों कि खोज करें। आपका सबसे अच्छा मित्र, आपका आत्मविश्वास है। यदि आप खुद पर विश्वास रखते हैं, तो ही दुसरे लोग आप पर विश्वास रखेंगे। सही बात है- आत्मविश्वास ही सबसे बडी शक्ती है, आत्मविश्वाससे ही जीत कि अभिव्यक्ती है। नमोस्तु शासन जयवंत हो।

-अभिषेक अशोक पाटील

आचार्य श्री वर्धमान सागर जी ने पारसोला में दी आर्यिका दीक्षा, नूतन नाम श्री जिनेश मति हुआ

पारसोला (विश्व परिवार)। प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवती आचार्य श्री शांतिसागरजी की अक्षुण्ण मूल बाल ब्रह्मचारी पट्ट परम्परा के पंचम पट्टाधीश वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी वर्ष 2024 का वर्षायोग सम्पन्न पारसोला में कर पारसोला विराजित है।दिनांक 5 दिसंबर कोश्रीमती विमला देवी गोहाटी असम आर्यिका श्री जिनेश मति बनी बनी। श्रीमद् जैन धर्म की यही विशेषता है कि इस धर्म में सम्यक दर्शन सम्यक ज्ञान, सम्यक चारित्र को धारण कर कर सिद्ध अवस्था को प्राप्त किया जा सकता है। सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान के बाद चारित्र अर्थात साधु जीवन अपनाना जरूरी है चर्या में परिवर्तन करना ही दीक्षा है, संसार की दौड़ से दूर होना दीक्षा है।संसारी प्राणी इच्छाओं से ग्रसित है संसार रुलाता है दीक्षा लेकर शिष्य को गुरु संगति में रहना चाहिए।जैन धर्म तीर्थंकर भगवान द्वारा प्रतिपादित, अनुमोदित, धारित श्रमण धर्म है। प्रथमाचार्य श्री शांति सागर जी महाराज ने अपने संयम पुरुषार्थ से श्रमण परंपरा को पुनर्स्थापित किया।उत्तर भारत में चातुर्मास कर धर्म प्रभावना, धर्म जागृति, और सुप्त हो रही समाज को जागृत किया शिष्य को दीक्षा लेकर गुरु के प्रति कृतज्ञता को दिल में समर्पण भाव के साथ धारण करने से साधना में सफलता मिलती है। यह धर्म देशना आचार्य वर्धमान सागर जी ने दीक्षा के अवसर पर प्रकट की। राजेश पंचोलिया अनुसार आचार्य श्री ने उपदेश में बताया कि यह संसार प्रतिकूल है संयम से संसार को अनुकूल बनाया जाता है और इंद्रियों की दासता दूर की जाती है। शिष्य को गुरु को अपना जीवन समर्पित करना चाहिए ख्याति नाम यश पूजा से दूर रहना चाहिए साधु अपने जीवन में मृत्यु से भयभीत नहीं होता है साधु जीवन में साधना के बल पर मृत्यु पर विजय प्राप्त करता है। दिगंबर जैन दशा हूमड़ समाज एवं वर्षायोग समिति के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित दीक्षा समारोह कार्यक्रम सन्मति भवन सभागार में भगवान और पूर्वाचार्यों का चित्र अनावरण दीप प्रज्वलन दीक्षार्थी परिवार द्वारा किया गया। जयंतीलाल कोठारी अध्यक्ष एवं ऋषभ पचोरी अध्यक्ष चातुर्मास समिति ने बताया कि प्रथमाचार्य चारित्र चक्रवती आचार्य श्री शांति सागर जी एवम पूर्वाचार्यों को अर्ध्य समर्पित विभिन्न नगरों से पधारी समाज द्वारा किया गया। सौभाग्यशाली परिवार की 5 महिलाओं द्वारा चोक पूरण की क्रिया की गई।दीक्षार्थीयो ने आचार्य श्री ने दीक्षा की याचना की तथा आचार्य श्री एवम समस्त साधुओ दीदी भैया श्रावक श्राविकाओं तथा समाज से क्षमा याचना की।वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री वर्धमान सागर जी के पंचामृत से चरण प्रक्षालन का सौभाग्य दीक्षार्थी परिवार को मिला। इस बेला में आचार्य श्री के द्वारा दीक्षार्थी के पंच मुष्ठी केशलोच किये गए तथा दीक्षा संस्कार मस्तक तथा हाथों पर किये गए। इसके बाद आचार्य श्री ने नामकरण किया। विमला देवी का नाम दीक्षा के बाद आर्यिका 105 श्री जिनेश मति किया पुण्यार्जक परिवार द्वारा पिच्छी कमंडल शास्त्र एवम कपड़े भेंट किये गए। आज दीक्षार्थी के केशलोच हो रहे थे, तब सभी वैराग्यमयी पलों से सभी द्रवित हो रहे थे। परिजनों के दोनों नेत्रों में एक नेत्र में खुशी के आंसू दूसरे नेत्र में दुख के आंसू भी थे। भक्तों के भजनों से वातावरण वैराग्य मय हो रहा आचार्य श्री अन्य साधुओं ने दीक्षार्थी के केशलोचन किये।परिजनों एवम अन्य भक्त जिन्हें केशलोच झेलने का अवसर मिला। वह अपने को पुण्यशाली मान रहे थे।आज प्रात:काल आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज के दर्शन कर उनके चरणों का प्रक्षालन किया तत्पचात श्रीमती विमला देवी के केशलोचन साधुओं ने किया मंगल स्नान किया। आचार्य संघ सानिध्य में दीक्षार्थी ने श्री जी का पंचामृत अभिषेक किया।आचार्य वर्धमान सागर जी एवं साधुओं को आहार दिया साधुओं के आहार के बाद सन्मति भवन में आचार्य वर्धमान सागर द्वारा दीक्षा संस्कार प्रारंभ हुए। **-राजेश पंचोलिया**

परम पूज्य मुनि श्री नीरज सागर जी, मुनिश्री निर्मद सागर जी महाराज का आज दादाबाड़ी जैन नसिया में होगा मंगल प्रवेश

कोटा (विश्व परिवार)। दिनाक 6 दिसम्बर शुक्रवार 2024 परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज एवं परम पूज्य आचार्य श्री 108 समयसागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य परम पूज्य मुनिश्री 108 नीरजसागर जी महाराज एवं परम पूज्य मुनिश्री 108 निर्मदसागर जी महाराज मंगल प्रवेश पुण्योदय अतिशय क्षेत्र दादाबाड़ी नसिया जी में शुक्रवार को होगा। 6 दिसंबर शुक्रवार प्रात: 6:45 विज्ञान नगर जैन मंदिर से पुण्योदय अतिशय क्षेत्र दादाबाड़ी नसिया जी के लिए मुनि संघ का मंगल विहार होगा। पुण्योदय अध्यक्ष जम्बु जैन सराफ ने बताया की द्वय महाराज श्री का मंगल आगमन पर 51 तोरण द्वार बैंड बाजे के साथ बड़ी भव्यता एवं उल्लास के साथ होगा जगह जगह पर पांद पक्षालन कर मंगल आरती कर अगवानी की जाएगी। उन्होंने कहा कि कोटा क्षेत्र के श्रद्धालुओं में अपार उत्साह नजर आ रहा है। और बताया कि जैसे ही पुण्य क्षेत्र आगमन की सूचना भक्तों को मिली वैसे ही भक्तों में हर्ष की लहर दौड़ गई। पुण्योदय के निर्देश हुकम जैन काका ने बताया शांति धारा पुण्योदय अतिशय क्षेत्र दादाबाड़ी नसिया जी में महाराज जी के मुखारविंद से होगी एवं महाराज श्री संघ के मंगल प्रवचन होंगे। **अभिषेक जैन लुहाड़िया**

श्री दावड़ा यूनिवर्सिटी राज्य में घुड़सवारी प्रशिक्षण प्रदान करने वाला पहला निजी विश्वविद्यालय

रायपुर (विश्व परिवार)। आज दिनांक 3 दिसंबर 2024 को श्री दावड़ा यूनिवर्सिटी, रायपुर (छ. ग.) में हॉर्स राइडिंग (घुड़सवारी) की सुविधा का भव्य उद्घाटन किया गया। जिस हेतु यूनिवर्सिटी कैंपस में अस्तबल के निर्माण के साथ हॉर्स राइडिंग के लिए ट्रैक का भी निर्माण किया गया। इस कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के डायरेक्टर जनरल डॉ. चार्मी दावड़ा, निदेशक श्रीमती अंजलि यादव, मानद निदेशक श्री तुलसीदास संघानी, कुलसचिव श्री कुमार श्वेताभ, परीक्षा नियंत्रक डॉ. वरुण गंजीर, समिति के सदस्य, शिक्षकगण एवं छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत मुख्य अतिथि डॉ. चार्मी दावड़ा के द्वारा रिबन काटकर की गई। उसके पश्चात उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया कि श्री दावड़ा विश्वविद्यालय राज्य का पहला निजी विवि है, जहाँ विद्यार्थियों के घुड़सवारी प्रशिक्षण दिया जा रहा है। यह घुड़सवारी की सुविधा छात्रों, शिक्षकों व विश्वविद्यालय में कार्यरत सभी स्टाफ के लिए नि:शुल्क शुरू की गई है।

डायरेक्टर जनरल ने आगे अपने उद्बोधन में कहा, घुड़सवारी केवल एक खेल नहीं, बल्कि यह अनुशासन, धैर्य और आत्मविश्वास विकसित करने का साधन है। श्री दावड़ा यूनिवर्सिटी हमेशा से छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध रही है। इस अवसर पर छात्रों ने घुड़सवारी के शुरुआती प्रशिक्षण का आनंद लिया और इसे अपने लिए एक अद्वितीय अनुभव बताया।

नि:शुल्क घुड़सवारी की सुविधा विश्वविद्यालय में शुरू कराने हेतु विश्वविद्यालय के कुलसचिव व समस्त शिक्षकगण एवं छात्रों ने विश्वविद्यालय के संस्थापक श्री चिन्मय दावड़ा एवं डॉ चार्मी दावड़ा मैडम को धन्यवाद दिया।

अपने पैतृक गांव और पूर्वजों को कभी नहीं भूलना चाहिए : मुनि पुंगव श्री सुधासागर जी महाराज

सागर में दस दिसंबर से होगा पंच कल्याणक महोत्सव : विजय धुर्रा

सागर (विश्व परिवार)। सभी लोगों को अपने पैतृक गांव को नहीं छोड़ना चाहिए। जहां से तुम्हारे पूर्वजों की शुरुआत हुई है, वहां की बहुत बड़ी एनर्जी होती है। जब तुम माँ के गर्भ में थे तो माँ ने उन्ही भगवान के सामने प्रार्थना की थी कि मेरा बच्चा सकुशल हो, वे वर्गणाएँ वहाँ अभी भी विद्यमान है, जैसे ही तुम वहां पहुंचोगे, तैसे ही वे वर्गणाये तुम्हें वरदान सिद्ध हो जाएगी। आज सम्मेदशिखर से अजितनाथ भगवान को मोक्ष गए हजारों साल हो गए, फिर भी उनकी वर्गणाये आज भी विद्यमान है और उस पर से हमारे अंदर भी परिवर्तन आता है जब भी कोई कार्यक्रम हो, पहला श्रीफल अपने पैतृक गांव भेजो, मकान का नागल, गाड़ी की पूजा, अपने बच्चें का मुंडन वहाँ कराओ तो तुम्हें वही आशीर्वाद मिलेगा जो तुम्हारी पिता और दादाओ का मिलता था बाकी आस पास के सभी लोगों को मिलकर एक दिन उस गांव में जाना चाहिए, पूरे गांव में जुलूस निकालों, सामूहिक विधान करो, स्वयं भोज करो, शक्ति हो तो गांव वालों को कराओ, तुम्हारें पूर्वजों ने उसे मंदिर बनाया था, तुम्हारी इस परंपरा से वो एक दिन तीर्थ बन जाएगा उक्त आश्य केउद्गार वर्णी भवन मोराजी में जिज्ञासा समाधान को सम्बोधित करते हुए मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज ने व्यक्त किए।

दस दिसंबर से पंद्रह दिसंबर तक होगा पंच कल्याणक महा महोत्सव ङ्कविजय धुर्रा- सागर से लौटकर मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा ने बताया कि जैन युवा वर्ग प्रमुख सुलभ अखाई सचिन एन एस अभिषेक ठेकेदार आर जे जैन सुनील जैन घेलू आनंद ठेकेदार राजमल विजयपुरा सहित अन्य भक्तों ने श्री फल भेंट कर शुभ आशीर्वाद प्राप्त किया सागर में आगामी दस दिसंबर से भाग्योदय तीर्थ सागर में परम पूज्य आध्यात्मिक संत निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्रीसुधासागरजी महाराज के सान्निध्य में प्रतिष्ठा चार्य प्रदीप भ इया के निर्देशन में घटयात्रा के साथ पंच कल्याणक महा महोत्सव होगा इसके साथ ही भगवान का जन्म कल्याणक पर प्रभु को ऐरावत हाथी पर पांडूक शिला पर लेजाकर भगवान के कलशाभिषेक होंगे अगले दिनों में तप ज्ञान और प्रभु का निर्वाण कल्याणक महोत्सव मनाया जायेगा चौधरवाई मन्दिर में विराजमान 625 वर्ष प्राचीन जिनालय में स्थापित 550 वर्ष प्राचीन जिनबिम्बों का जीर्णोद्धार कर वज्रलेप उपरांत महोत्सव में प्रतिष्ठा के साथ कालोनी स्थित नवीन मन्दिर की प्रतिष्ठा होगी जितने गंधोदक की खपत हो उतना ही बनाना चाहिए।

उन्होंने कहा कि गंधोदक की जितनी खपत हो, उतना ही बनाना चाहिए, गंधोदक को विसर्जन करने का आगम में कोई उल्लेख नही, कितना पाप होता है जिसको तुम सिर पर धारण करते हो, उसको गमले में, माटी में, छत पर डालते हो, फिर भी बड़े कार्यक्रम में बचता है तो अच्छी मिट्टी आदि में जहाँ सुख जाए, डाल सकते हैं महिलाएं यही नियम ले ले तो वह अगली पर्याय, पुरुष पर्याय पायेंगी कि हम भोजन तभी करेंगे, जब हमारे घर के लोग भगवान का अभिषेक करके हमें गंधोदक देंगे।

सभी पापों में सापेक्ष का अर्थ है कि यह पाप उसने किसलिए किया है, यदि उसका अभिप्राय अच्छा है तो वह हिंसा भी ठीक है जैसे धर्म की रक्षा के लिए दुश्मन को मारना, गाय को बचाने के लिए झूठ बोलना। **-विजय धुर्रा**

जैन युवा वर्ग ने मुनि पुगंव श्री सुधासागर जी महाराज को श्रीफल भेंट किए

पश्चिमी सभ्यता हमारे ऊपर हावी है उसने हमारी भाषा, भूषा, भोजन और भावनाओं को बदल कर रख दिया है : मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज

इंदौर (विश्व परिवार)। पश्चिमी सभ्यता हमारे ऊपर हावी है उसने हमारी भाषा, भूषा, भोजन और भावनाओं को बदल कर रख दिया है, मात्र एक ढांचा ही शेष है जिसके अंदर का सारा सत्व खो गया है। उपरोक्त उद्गार मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज ने पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के चतुर्थ दिवस वृषभ सागर महाराज के दीक्षा कल्याणक पर प्रात:कालीन धर्मसभा में व्यक्त किये।

मुनि श्री ने कुलाचार, दुराचार, धर्माचार, सदाचार पर चर्चा करते हुये कहा कि आधुनिकता की अंधी दौड़ ने हमारे कुलाचार पर गहरा कुठाराघात किया है, आजकल आऐ दिन दुराचार की खबरें सामने आती है उसका मुख्य कारण है कुलाचार की उपेक्षा और आधुनिकता के नाम पर अपनी मौलिकता को खोना- मुनि श्री ने कहा कि अभी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव चल रहा है, धर्म का बातावरण है चारों ओर केसरिया नजर आ रहा है उसके बाद क्या होगा? मुनि श्री ने कहा अहिंसा के प्रति प्रतिवद्धता ही कुलाचार के प्रति-प्रतिवद्धता है।उन्होंने इंदौर शहर की एक पुरानी घटना सुनाते हुये कहा कि एक मां ने अपनी समस्त जमा पूंजी से बेटे को ट्रक दिलाया एक दिन मां जब ट्रक देखने को गई तो उसे वंहा एक पर्ची मिली जिसमें बकरियाँ और भेड़ों को किसी कत्लखानों में छोड़कर आना लिखा था।

मां ने जब उस पर्ची को देखा तो वह अंदर से हिल गई उसने बेटे से कहा कि बेटा यह क्या कर रहा है? बेटे ने मां को कहा कि हमारा काम तो इधर से उधर सामान पहुंचाने का होता है, और उसी से हमारी कमाई होती है, तो मां ने जबाव दिया बेटा हमें भूखे रहना पसंद है रुखी सूखी खाकर अपना पेट भर लेंगे लेकिन हिंसा की कमाई से कभी भी पेट भरना स्वीकार नहीं और उन्होंने बेटा को आदेश दिया कि तू इस गाड़ी को ही बेच दे जब तक तू गाड़ी नहीं बेचेगा तब तक मेरे अन्न जल का त्याग धन्य है बो मां और धन्य है वह बेटा जिसके अंदर कुलाचार के प्रति इतनी प्रतिवद्धता है कि उसने मां के चरणोंमें अपना शीश रखते हुये क्षमा याचना की और तुरंत उस गाड़ी को बेच दिया।मुनि श्री ने कहा कि घर परिवार में मां ही गुरु होती है, ऐसा वातावरण बनाओ कि आपको चिल्ला चोंट करना ही न पड़ेऔर एक उच्च आदर्श प्रस्तुत हो, उन्होंने कहा यदि तुम्हारे अंदर धर्माचार्य होगा तो ही तुम सदाचार की प्रेरणा देकर प्रेरक बनोगे, हम लोग बातें तो बहूत बड़ी बड़ी करते है, लेकिन आचरण में कमजोर नजर आते है, भूमी की उर्वरकता का पता फसल से ही लगता है ऐसे ही मनुष्य के कुल का पता उसके आचरण से लगता है। उन्होंने कहा आजकल अनुष्ठानों में भीड़ तो भारी भरकम नजर आती है लेकिन कुलाचार के मामले में सबके सब खोखले नजर आ रहे है, आजकल जो दुराचार बड़ रहा है उसका कारण है कुलाचार के पालन में कमी उन्होंने कहा कि जो लोग अपने आपको धर्मी समझते है वह तो कम से कम अपने कुलाचार का पालन करें, जिससे धर्माचार खंडित न होवे। उदाहरण देते हुये कहा कि कुछ लोग अपने आपको जैन नहीं बल्कि मार्डन जैन कहते है, उनके घर परिवार में जाकर देखो तो बाप बेटा दौनों एक साथ बैठकर शराब पी रहे है, यंहा तक कि अंडा आदि अभक्ष्य पदार्थों का सेवन चल रहा है क्या। ऐसे लोग जैन कहलाने के हकदार है? कुछ लोग पूरी तरह से दिखते तो धार्मिक है और अभक्ष्य भक्षण भी नहीं करते, पूजा पाठ करते शोध का भोजन करते है, लेकिन डंडी मारना, मिलाबट करना, अमानत में खयानत करना, चोरी चमारी करना अनैतिक सम्वंधों में संल्गन रहना क्या इनको आप सदाचारी कहोगे या दुराचारी? मुनि श्री ने चेतावनी देते हुये कहा कि आधुनिकता के नाम पर अपनी मौलिकता को खंडित मत करो, कुलाचार अपनाओगे तभी आप धर्मी कहलाने के सच्चे हकदार कहलाओगे। **-अविनाश जैन**

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

बस्तर संभाग

रायपुर शुक्रवार 06 दिसंबर 2024

संक्षिप्त समाचार

कोटपा एक्ट के तहत कार्यवाही

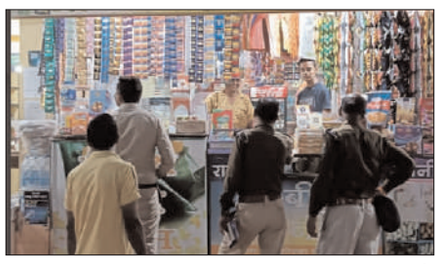

गरियाबंद (विश्व परिवार)। सिटी कोतवाली के अंतर्गत संचालित समस्त पान दुकानों में जर्दा युक्त गुटका सम्बन्धित चेतावनी न लगाने व सार्वजनिक रूप से धूम्रपान कराने साथ ही स्कूल कॉलेजो के पास ऐसी वस्तु कि बिक्री के विरुद्ध कार्यवाही करते हुए पुलिस ने चेतावनी देते हुए 21 कोटपा एक्ट के अंतर्गत कार्यवाही कि । जिसमे पहली बार समझाईस देते हुए चलानी कारवाही भी कि गई। बताते चले कि सार्वजनिक स्थानों में धूम्रपान करना कानूनी अवैध है किसी को इससे आपत्ति होनो पर भारी जुर्माने का प्रावधान है । साथ ही स्कूल कॉलेजो के पास तम्बाखू युक्त जर्दा या सिगरेट कि बिक्री पर पाबंदी लगाने कि बात पुलिस ने कि है बताया कि पहली बार चेतावनी दी गई है और आगे भी जांच व कार्यवाही होती रहेगी। इन स्थानों को तम्बाखू मुक्त क्षेत्र घोषित किया गया है।

एसईसीएल खदान में हादसा दो श्रमिकों की मौत

मनेन्द्रगढ़(विश्व परिवार)। मनेंद्रगढ़ जिले में एसईसीएल खदान में सिर पर पत्थर गिरने से दो श्रमिकों की मौत हो गई। यह घटना खदान के अंदर ड्रेसिंग के दौरान हुई है। हादसा छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश की सीमा पर स्थित राजनगर उपक्षेत्र के झिरिया अंडर ग्राउंड में हुआ ह्वै। हादसे के बाद खदान में कार्यरत श्रमिकों में भय का माहौल है । मिली जानकारी के अनुसार जिले के हसदेव क्षेत्र में एसईसीएल (साउथ ईस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड) की झिरिया अंडरग्राउंड कोयला खदान के अंदर ब्लास्टिंग के बाद ड्रेसिंग कार्य करते समय छत से पत्थर गिरने लगे और दो बड़े पत्थर श्रमिक लखन लाल और वॉल्टर तिर्की के सिर पर गिर गये जिससे दोनों श्रमिक गंभीर रूप से घायल हो गये। तत्काल दोनों को सेंट्रल हॉस्पिटल मनेन्द्रगढ़ पहुंचाया गया। जहां डॉक्टरों ने दोनों को मृत घोषित कर दिया। घटना के बाद छत को सपोर्ट देने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले रॉड और कैप्सूल की गुणवत्ता पर सवाल उठ रहे हैं। श्रमिकों का कहना है कि छत को सपोर्ट देने के लिए प्रयुक्त उपकरणों की गुणवत्ता सुनिश्चित करना प्रबंधन की प्राथमिक जिम्मेदारी है। इस हादसे की तत्काल और निष्पक्ष जांच होनी चाहिए और दोषी प्रबंधन अधिकारियों पर कार्रवाई की जानी चाहिए। यह दुर्घटना न केवल श्रमिक सुरक्षा मानकों की कमी को उजागर करती है, बल्कि खनन क्षेत्र में काम करने वाले श्रमिकों की सुरक्षा पर गंभीर सवाल भी उठाती है।

शराब कोचिया चढ़ा पुलिस के हत्थे

राजनांदगांव(विश्व परिवार)। पुलिस अधीक्षक मोहित गर्ग एवं अति पुलिस अधीक्षक राहुल देव शर्मा व सीएसपी महोदय राजनांदगांव पुष्पेन्द्र नायक के दिशा-निर्देश पर लालबाग पुलिस द्वारा क्षेत्र में लगातार गस्त-पेट्रोलिंग कर अवैध गतिविधियों, शराब कोचियों, सटोरियों, संदिग्ध व्यक्तियों, पॉकेटमार, चाकुबाज एवं अन्य असमाजिक तत्वों पर कड़ी निगरानी रखकर लगातार कार्यवाही की जा रही है इसी कड़ी में दिनांक 03/12/24 को थाना प्रभारी निरीक्षक नवरतन कश्यप के नेतृत्व पर थाना लालबाग स्टाफ जुर्म जरायम पतासाजी ग्राम भ्रमण पेट्रोलिंग पर देहात की ओर रवाना हुआ था की जरिये मुखवीर सूचना मिला कि सविंद्र सिंह अपने पंजाबी ढाबा के सामने लीटिया चौकी सुकुलदैहान में अवैध रूप से शराब रखकर बिक्री कर रहे है कि मुखबीर सूचना पर टीम रवाना होकर मौके पर जाकर समक्ष गवाहन घेराबंदी कर रेड कार्यवाही कर आरोपी सविंद्र सिंह पिता तेजपाल उम्र 30 वर्ष पता जीवन विहार अपार्टमेंट पाताल भैरवी मन्दिर के पीछे राजनादगांव के कब्जे से 05 नग बीयर बाटल 08 नग पौवा देशी प्लेन शराब बिक्री रकम 150 रु को जप्त किया गया। आरोपी के खिलाफ़ पर्याप्त साक्ष्य सबूत पाये जाने से थाना लालबाग में धारा 34(1) आबकारी एक्ट, कायम कर विवेचना कार्यवाही में लिया गया। सम्पूर्ण कार्यवाही में सऊनि शोभाराम बैरवंशी , आर संतराम साहु की सराहनीय भूमिका रही।

कलेक्टर ने ग्राम पंचायत आरा का किया निरीक्षण

जशपुरनगर(विश्व परिवार)। कलेक्टर श्री रोहित व्यास ने आज जशपुर विकासखण्ड के ग्राम पंचायत आरा का निरीक्षण किया और निर्माणधीन जगन्नाथ मंदिर में बाण्ड्रीवाल, गेट निर्माण, मौसी बाड़ी के पास बाण्ड्रीवाल, चबूतरा शेड, झारखण्ड और छत्तीसगढ़ सीमा में प्रवेश द्वार बनाने के संबंध में आर.ई.एस. विभाग के अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

धान खरीदी केंद्रों में बारदाना की पर्याप्त उपलब्धता करें सुनिश्चित-कलेक्टर हरिस

जगदलपुर(विश्व परिवार)। कलेक्टर कलेक्टर हरिस एस ने कहा कि धान खरीदी केंद्रों में बारदाना की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करें, साथ ही नए बारदाना, पीडीएस बारदाना और मिलर्स से प्राप्त बारदाना संकलन की स्थिति तथा उपलब्धता का आनलाईन एन्ट्री करवाने के निर्देश दिए। सभी जगहों से बारदाना के संकलन करवाकर आगामी सप्ताह तक खरीदी केन्द्रों में वितरण करवाना सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने खाद्य विभाग के अधिकारी से मिलर्स का पंजीयन और कस्टम मिलिंग हेतु अनुबंध की स्थिति, उठाव हेतु डीओ कटवाने, केंद्रों में गुणवत्तायुक्त धान को खरीदी करवाने के निर्देश दिए। मंगलवार को कलेक्टर हरिस जिला कार्यालय के प्रेरणा सभाकक्ष में समय-सीमा की बैठक ले रहे थे। उन्होंने बारिश की संभावना को देखते हुए खरीदी केंद्रों में धान को ढंकने हेतु निर्देशित किया। धान खरीदी में क्रॉप कटिंग एक्सपेरिमेंट का डाटा का मिलान कर धान खरीदी करें। साथ ही अवैध धान परिवहन के लिए बस्तर, बकावण्ड और जगदलपुर तहसील क्षेत्र में रात्रि कालीन गश्ती को बढ़ाने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि सीएसआर मद के अंतर्गत स्वीकृत कार्यों की प्रगति लाते हुए कार्य को समय-सीमा में पूर्ण करवाएं। बैठक में जल जीवन मिशन के कार्य की समीक्ष, वाहन स्क्रैपिंग की स्थिति, नियद नेल्लानार योजना के तहत ब्लॉक वाइज सर्वे की स्थिति, वन अधिकार मान्यता पत्र धारक किसानों का भूमि का गिरदावरी की स्थिति, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधी योजनांतर्गत नवीन पंजीयन की विकासखण्डवार प्रगति की समीक्षा और पीडीएस दुकानों खाद्यान्न भण्डारण की समीक्षा किए। उन्होंने रबी वर्ष 2024-25 किसान क्रेडिट कार्ड लक्ष्य के विरूद्ध प्रगति की समीक्षा किए। बैठक में तालाबों में मत्स्यपालन के लिए पट्टा देने पर चर्चा किया। जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण पत्र के लिए आवेदनों पर निराकरण करने और मुख्यमंत्री स्कूल जतन योजना के कार्यों का एंजेसीवार थर्ड पार्टी वेरीफिकेशन करवाने के निर्देश दिए। बैठक में टीबी नियंत्रण हेतु निक्षय पोषण योजना के क्रियान्वयन पर चर्चा किए, साथ ही टीबी बीमारी नियंत्रण हेतु शपथ भी लिया गया। निक्षय निरामय छत्तीसगढ़ 100 दिवसीय पहचान एवं उपचार अभियान का 07 दिसंबर 2024 से शुभारंभ किया जाना है। यह अभियान 7 दिसंबर 2024 से 24 मार्च 2025 तक चलाया जाना है। उक्त अभियान में टीबी के शंकास्पद मरीजों की खोज उच्च जोखिम समूहों वाले व्यक्तियों का चिन्हांकन, कुष्ठ शंकास्पद मरीजों की खोज (एल.सी.डी.सी.) वयोवृद्ध स्वास्थ्य संरक्षण कार्यक्रम अंतर्गत वयोवृद्ध की हेल्थ प्रोफाईल के साथ सूची तैयार किया जाना है। बस्तर संभाग के 7 जिलों में उपरोक्त अभियान के साथ मलेरिया मुक्त अभियान भी क्रियान्वित किया जाएगा। बैठक में कलेक्टर ने महिला एवं बाल विकास विभाग के कार्यों की समीक्षा करते हुए कहा कि आंगनबाड़ी केंद्रों को निर्धारित समय पर संचालित करें। पोषण ट्रेकर, महतारी वंदन योजना अंतर्गत हितग्राहियों, प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजनांतर्गत लाभांवित, आंगनबाड़ी प्रवेश लेने वाले बच्चों के जाति प्रमाण जारी करने की प्रगति की भी संज्ञान लिया।

बैठक लेकर धान के बदले दलहन-तिलहन की खेती को बढ़ावा देने पर दिया जोर

उत्तर बस्तर कांकेर(विश्व परिवार)। विकासखण्ड कांकेर के ग्राम कोलियारी में कृषकों को धान के बदले दलहन और तिलहन की खेती को बढ़ावा देने बैठक आयोजित किया गया। बैठक में रबी फसल पर विस्तार से चर्चा करते हुए कृषि अधिकारी ने घटते जल स्तर की गंभीरता पर किसानों को धान के बदले रूप में दलहन और तिलहन की खेती को प्रोत्साहित किया। बैठक के दौरान किसानों से परिचर्चा करते हुए बताया गया कि दलहन और तिलहन की खेती न केवल जल संरक्षण में सहायक है, बल्कि यह मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि करती है। इसके अतिरिक्त ये फसलें किसानों को आर्थिक रूप से मजबूत बनाने में भी सहायक हैं। उन्होंने बताया कि सरकार किसानों को तकनीकी सहायता, प्रशिक्षण और अनुदान प्रदान कर रही है, ताकि वे रबी में ग्रीष्मकालीन धान के फसलों के बदले दलहन और तिलहन की खेती की ओर आकर्षित हो सकें। इसके अलावा किसानों को उन्नत कृषि तकनीकों और फसल चक्र परिवर्तन के लाभ के बारे में जानकारी दी गई। इस अवसर पर दलहन की खेती को बढ़ावा देने के लिए टारगेटिंग राईस फेलो एरिया योजनान्तर्गत 40 कृषकों को 16 हेक्टेयर हेतु मसूर बीज का नि:शुल्क वितरण किया गया। ज्ञात हो कि सरकार द्वारा जल संरक्षण और कृषि क्षेत्र के विकास के लिए यह पहल एक महत्वपूर्ण कदम है। कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि वे टिकाऊ कृषि पद्धतियों को अपनाएं और अपने क्षेत्र में दलहन और तिलहन की खेती को बढ़ावा दें।

कृषक उन्नति योजना ने लोकेश की बेटी की शादी में लगा दिया चार चांद

किसान हितैषी विष्णु देव साय का दिल से किया धन्यवाद

धमतरी(विश्व परिवार)। बेटी की शादी करना एक पिता के लिए बहुत बड़ी जिम्मेदारी और चुनौति होती है। वह भी एक किसान परिवार में जन्मी बेटी की शादी में किसी तरह की कोई कसर ना रह जाए, इसकी चिंता बेटी की डोली घर से उठते तक पिता को सताती है। पर अब प्रदेश के मुखिया विष्णु देव साय ने ऐसे बेटियों के पिता की चिंता को दूर कर दिया। दरअसल जिले के ग्राम भटगांव के किसान लोकेश राम साहू की बिटिया की शादी के ठीक पहले उन्हें कृषक उन्नति योजना के तहत बोनस राशि मिली। वे बताते हैं कि कृषक उन्नति योजना ने उनकी बेटी की शादी में चार चांद लगा दिया है। उन्होंने कहा कि उनकी एक एकड़ 30 डिस्मिल जमीन है, जिस पर उपजाए लगभग 26 क्विंटल 80 किलोग्राम धान का विक्रय समर्थन मूल्य पर किया। उन्हें कृषक उन्नति योजना के तहत लगभग 25 हजार रूपये बोनस राशि मिली, वह भी तब जब उनकी बिटिया की शादी होने वाली थी। किसान लोकेश राम साहू खुश होकर प्रदेश के मुखिया विष्णु देव साय का धन्यवाद करते हुए कहते हैं कि किसान के हित में हमारे मुख्यमंत्री इतना अच्छा फैसला लिए हैं, जिससे उनकी बिटिया की शादी में चार चांद लग गए। कृषक उन्नति योजना के माध्यम से राज्य के किसानों से समर्थन मूल्य पर खरीदे गए धान में 19 हजार 257 रूपए प्रति एकड़ आदान सहायता राशि दी जा रही है। किसानों को धान के प्रति क्विंटल के मान से भुगतान की जा रही यह राशि देश में सर्वाधिक है। कृषि के क्षेत्र में सम्पन्नता से ही छत्तीसगढ़ की अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होगी और विकसित राज्य बनाने का सपना साकार होगा। इस बात को ध्यान में रखते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने किसान हितैषी कृषक उन्नति योजना आरंभ किया।

संपर्क केंद्र से रुखमणी कोशले को एक फोन पर मिला अंत्योदय राशन कार्ड

बलौदाबाजार(विश्व परिवार)। जिला प्रशासन की ओर से संचालित संपर्क केंद्र 92018-99925 के माध्यम से जरूरतमंदों की समस्याओं का त्वरित समाधान किया जा रहा है। भाटापारा नगर पालिका अंतर्गत वार्ड नंबर 09 दाऊ कृष्ण कुमार के निवासी रुखमणी कोशले ने 92018- 99925 में फोन के माध्यम से अपनी समस्या दर्ज की कराया। जिसे प्रशासन ने गंभीरता से लेते हुए तत्काल समाधान किया। श्रीमती ने बताया कि उनकी पति से तलाक हो चुका है और वे पिछले नौ दस वर्षों से अकेली रोजी मजदूरी कर जीवनयापन कर रही हैं। ऐसे में उन्होंने प्रशासन से अंत्योदय राशन कार्ड प्रदान करने की गुहार लगाई, ताकि वे अपने जीवनयापन को सरल बना सकें। उनकी इस समस्या को खाद्य विभाग ने प्राथमिकता देते हुए त्वरित कार्रवाई की और उन्हें अंत्योदय राशन कार्ड प्रदान किया। तत्काल राशन कार्ड मिलने पर रुखमणी कोशले ने संपर्क केंद्र की सराहना करते हुए कहा कि यह केंद्र हमारे जैसे जरूरतमंदों के लिए वरदान साबित हो रहा है।मुझे मेरी समस्या का तुरंत समाधान मिला,इसके लिए मैं जिला प्रशासन का आभारी हूं.कोशले ने राशन कार्ड सम्बंधित समस्या तत्काल निराकरण होने पर कलेक्टर के प्रति आभार व्यक्त किया है। साथ ही आम लोगो से अपील करते हुए संपर्क केंद्र का लाभ लेने का आग्रह किया है।

मेहनत से साधारण गृहिणी से सफल उद्यमी बनीं सुरेखा

महतारी वंदन योजना की राशि से भविष्य गढ़ने की कवायद

उत्तर बस्तर कांकेर(विश्व परिवार)। नरहरपुर ब्लॉक के सरोना गांव में रहने वाली सुरेखा साहू ने अपनी मेहनत और लगन से एक प्रेरणादायक मिसाल पेश की है। साधारण गृहिणी से लेकर एक सफल उद्यमी बनने तक का सफर सुरेखा ने अपने पति के सहयोग और अपने दृढ़ संकल्प से तय किया है। सुरेखा ने केवल 12वीं तक पढ़ाई की थी, लेकिन शिक्षा की अहमियत को समझते हुए उन्होंने अपने बच्चों को बेहतर भविष्य देने का संकल्प लिया। उनके परिवार में कुल छह सदस्य हैं, जिनमें उनके दो बच्चे भी शामिल हैं, जो अभी कक्षा 7वीं में पढ़ाई कर रहे हैं। सुरेखा के पति ने न केवल उन्हें पढ़ने-लिखने में मदद की, बल्कि फोटो फ्रेमिंग, फोटो एडिटिंग और फोटोग्राफी का हुनर भी सिखाया। दोनों ने मिलकर सरोना गांव में एक फोटो स्टूडियो की शुरुआत की। उनकी टीमवर्क और मेहनत का नतीजा है कि आज यह फोटो स्टूडियो उनकी आय का मुख्य स्रोत बन चुका है। सुरेखा और उनके पति की मेहनत का नतीजा है कि वे अपने फोटो स्टूडियो से हर महीने 20 से 25 हजार रुपये तक कमा लेते हैं। यह आय न केवल उनके परिवार का पालन-पोषण करती है, बल्कि उनके बच्चों की शिक्षा और भविष्य की तैयारी में भी मददगार है। सुरेखा महतारी वंदन योजना का भी लाभ ले रही हैं। उन्होंने बताया कि इस योजना के तहत समय पर राशि मिलती है, जिसे वह अपने व अपने परिवार के भविष्य को बेहतर बनाने के लिए उस राशि की बचत कर रही हैं। इसके लिए वह मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय का आभार व्यक्त करती हैं।

निष्पक्ष, पारदर्शी व शांतिपूर्ण निर्वाचन के लिए चुनाव आयोग कटिबद्ध : अजय सिंह

बस्तर संभाग के कलेक्टर-एसपी की बैठक लेकर बेहतर ढंग से चुनाव सम्पन्न कराने के दिए निर्देश

कांकेर(विश्व परिवार)। राज्य निर्वाचन आयुक्त अजय सिंह की अध्यक्षता में बुधवार को जिला पंचायत के सभाकक्ष में नगरीय निकायों एवं त्रिस्तरीय पंचायतों में आगामी आम/उप निर्वाचन अंतर्गत निर्वाचन कार्यों की तैयारियों के संबंध समीक्षा की गई। बैठक में बस्तर संभाग के संभाग आयुक्त डोमन सिंह, पुलिस महानिरीक्षक सुंदरराज पी., पुलिस विभाग के नोडल अधिकारी ओ.पी. पाल, आयोग के सचिव डॉ. सर्वेश्वर नरेन्द्र भुरे सहित संभाग के सभी जिला के कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक तथा उप जिला निर्वाचन अधिकारी शामिल हुए। इस दौरान राज्य निर्वाचन आयुक्त ने सभी अधिकारियों को बस्तर संभाग में पारदर्शिता, निष्पक्षता के साथ शांतिपूर्ण ढंग से निर्वाचन सम्पन्न कराने के निर्देश दिए। बैठक में उन्होंने कहा कि नगरीय निकायों में प्रति एक हजार मतदाता के लिए एक मतदान केन्द्र और पंचायतों में निर्वाचन के लिए 500 मतदाता हेतु एक मतदान केन्द्र बनाए जाने हेतु निर्देशित किया। साथ ही यह भी कहा कि सभी पात्र मतदाताओं के नाम निर्वाचक नामावली में अनिवार्य रूप से जोड़े जाएं। राज्य निर्वाचन आयुक्त ने बैठक में चुनाव के सुचारू रूप से संचालन हेतु चुनाव की तैयारी, सुरक्षा व्यवस्था, मतदान केन्द्रों की स्थिति और निर्वाचन प्रक्रिया से जुड़ी महत्वपूर्ण तैयारियों की समीक्षा की। इस अवसर पर उन्होंने यह भी कहा कि बस्तर संभाग के साथ ही प्रदेश के सभी संभागों में निर्वाचन की समीक्षा सम्पन्न हो गई है। आगामी समय में चुनाव की तैयारियों के संबंध में मुख्य सचिव और डीजीपी के साथ आयोग की संयुक्त रूप से बैठक की जाएगी, जिसके तहत चुनावी प्रक्रिया के दौरान होने वाली चुनौतियों और संभावित समस्याओं पर भी चर्चा की। उन्होंने अधिकारियों को चुनाव के दौरान शांतिपूर्ण माहौल बनाए रखने, मतदाता जागरूकता बढ़ाने और मतदान प्रक्रिया को पारदर्शी और निष्पक्ष बनाने के निर्देश दिए। साथ ही यह भी कहा कि 01 अक्टूबर 2024 की स्थिति में 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके सभी पात्र लोगों के नाम निर्वाचक नामावली में अनिवार्य रूप से होने चाहिए। राज्य निर्वाचन आयुक्त ने सुरक्षा उपायों और कानून-व्यवस्था को सुदृढ़ करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। उन्होंने मतदान केंद्रों पर सुविधाओं, कर्मचारियों की तैनाती और निर्वाचन सामग्री की उपलब्धता की भी समीक्षा की, ताकि किसी भी तरह की असुविधा न हो। बैठक में यह भी सुनिश्चित किया गया कि सभी संबंधित अधिकारियों के बीच समन्वय और सहयोग बना रहे ताकि चुनाव प्रक्रिया बिना किसी बाधा के पूरी हो सके। इस दौरान बैठक में बस्तर संभागायुक्त सिंह ने संभाग के सभी जिलों में की जा रही निर्वाचन की तैयारियों की संक्षिप्त जानकारी दी। पुलिस महानिरीक्षक बस्तर संभाग सुंदरराज ने निर्वाचन के दौरान की जाने वाली सुरक्षा व्यवस्था के संबंध जानकारी दी। साथ ही संभाग के सभी जिलों के कलेक्टर और पुलिस अधीक्षक ने पावर पॉइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से अपने-अपने जिलों के निर्वाचन संबंधी तैयारियों की अद्यतन स्थिति से आयोग को अवगत कराया।

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

दैनिक
विश्व परिवार

खेल-व्यापार

रायपुर, शुक्रवार 06 दिसंबर 2024

व्यापार समाचार

आरबीआई एमपीसी की तीन दिवसीय बैठक शुरू

नई दिल्ली(एजेंसी)। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) की तीन दिवसीय मौद्रिक नीति कमेटी (एमपीसी) की बैठक बुधवार से शुरू हो गई है। इस बैठक में केंद्रीय बैंक की कोशिश आर्थिक विकास और महंगाई दर में बैलेंस स्थापित कर देश की अर्थव्यवस्था की गति को तेजी से आगे बढ़ाने पर होगा। जानकारों कहा है कि बैठक में एक बार फिर फोकस रेपो दर पर है जो पिछली नौ एमपीसी बैठकों से 6.5 प्रतिशत पर स्थिर है। इस बार भी यथावत रहने की संभावना है। वित्त वर्ष 2025 की दूसरी तिमाही में सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में 5.4 प्रतिशत की वृद्धि हुई। वहीं, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (सीपीआई) अक्टूबर में 6.21 प्रतिशत था, जो आरबीआई के 4.8 प्रतिशत के अनुमान से अधिक था। एमके ग्लोबल फाइनेंशियल सर्विसेज ने अपने नोट में कहा कि आरबीआई के वृद्धि अनुमान में गिरावट और महंगाई दर के अनुमान में बढ़त होने की उम्मीद है। इस कारण रेपो रेट में कटौती की कोई संभावना नहीं है। बजाज ब्रोकिंग रिसर्च के अनुसार, आरबीआई का लक्ष्य आर्थिक प्रगति से समझौता किए बिना महंगाई पर नियंत्रण करना है. ब्रोकरेज ने कहा, भारत की जीडीपी मजबूत बनी हुई है। ऐसे में विकास और महंगाई के बीच नीतिगत संतुलन महत्वपूर्ण होगा और एक न्यूट्रल रुख एक संतुलित आर्थिक दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करेगा। आगे कहा कि इस बैठक के नतीजे पर बाजार और विश्लेषकों की बारीकी से नजर रहेगी, क्योंकि यह विकास और महंगाई की जटिल गतिशीलता के प्रबंधन के लिए आरबीआई के दृष्टिकोण पर और मार्गदर्शन प्रदान करेगा। वित्त वर्ष 25 के लिए यह पांचवीं एमपीसी बैठक है। पिछली बैठक के दौरान आरबीआई ने रेपो दर को 6.5 प्रतिशत पर बरकरार रखा और अपना रुख न्यूट्रल कर दिया था। आरबीआई द्वारा आखिरी बार रेपो रेट में बदलाव फरवरी 2023 में किया गया था। उस समय केंद्रीय बैंक ने रेपो रेट में 0.25 प्रतिशत की वृद्धि की थी। इसके बाद से रेपो रेट यथावत बना हुआ है।

रुपये क्रेडिट कार्ड से यूपीआई लेनदेन में जबरदस्त उछाल

नई दिल्ली(एजेंसी)। वित्त मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों के अनुसार, वित्त वर्ष 2025 के पहले 7 महीनों में रुपये क्रेडिट कार्ड पर यूपीआई के जरिए लेनदेन वित्त वर्ष 2024 की समान अवधि की तुलना में लगभग दोगुना हो गया है। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, इस साल अप्रैल-अक्टूबर तक 63,825.8 करोड़ रुपये की राशि के 750 मिलियन से अधिक ऐसे लेनदेन हुए। वहीं, वित्त वर्ष 2024 में, यूपीआई रुपये क्रेडिट कार्ड लेनदेन 362.8 मिलियन दर्ज किए गए, जिनका क्युमुलेटिव मूल्य 33,439.24 करोड़ रुपये था। वित्त वर्ष 2025 के पहले सात महीनों में बीते वर्ष की समान अवधि के मुकाबले दोगुना से ज्यादा लेनदेन हुए हैं। इसी के साथ माना जा रहा है कि वित्त वर्ष 2025 के लिए यह आंकड़ा काफी ज्यादा बढ़ने वाला है। रुपये क्रेडिट कार्ड पर यूपीआई लेनदेन की सुविधा को सरकार ने सितंबर 2022 में शुरू किया था। रुपये क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करने वाले यूजर्स यूपीआई ऐप की मदद से अपने लेन-देन कार्ड के जरिए कर सकते हैं। वित्त मंत्रालय के राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने संसद के ऊपरी सदन में पूछे गए एक सवाल के जवाब में कहा, टियर-2 और उससे नीचे के क्षेत्रों में फाइनेंशियल इंक्लूशन को बढ़ावा देने के लिए समय-समय पर कई पहल की गई हैं। ऐसी ही एक पहल यूपीआई से जुड़े रुपे क्रेडिट कार्ड की शुरुआत है, जो यूपीआई भुगतान करने वाले यूजर्स को क्रेडिट सुविधा के अतिरिक्त अवसर प्रदान करता है। छोटे व्यापारियों के लिए 2,000 रुपये तक के लेनदेन के लिए यूपीआई से जुड़े रुपे क्रेडिट कार्ड पर मर्चेंट डिस्काउंट रेट (एमडीआर) और इंटरचेंज शुल्क शून्य रहेगा। मर्चेंट डिस्काउंट रेट पेमेंट प्रोसेसिंग कंपनियों द्वारा व्यापारियों से किसी विशेष क्रेडिट या डेबिट को प्रोसेस करने पर लिया जाता है। यूजर्स के सेविंग अकाउंट से जुड़े यूपीआई लेनदेन पर शून्य एमडीआर नीति का पालन किया जाता है। इसके अलावा, यूपीआई के बढ़ते इस्तेमाल के साथ माना जा रहा है कि वित्त वर्ष 2025 में यूपीआई लेनदेन की संख्या 25 अरब प्रति माह तक पहुंच जाएगी।

भारतीय शेयर बाजार में दमदार तेजी, बीएसई का मार्केटकैप 450 लाख करोड़ के पार

मुंबई(एजेंसी)। भारतीय शेयर बाजार में चल रही तेजी के कारण बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) का मार्केट कैप एक बार फिर से 450 लाख करोड़ रुपये के ऊपर निकल गया है। पिछले तीन कारोबारी सत्रों से सेंसेक्स और निफ्टी दोनों करीब 4 प्रतिशत से अधिक का रिटर्न दे चुके हैं। इस दौरान बीएसई का मार्केटकैप 10 लाख करोड़ से भी ज्यादा बढ़ा है। मौजूदा समय में बीएसई पर सूचीबद्ध सभी कंपनियों का मार्केट कैप 454 लाख करोड़ रुपये से भी अधिक है। भारतीय शेयर बाजार में बुधवार के कारोबारी सत्र में भी तेजी देखी जा रही है। दोपहर 12:33 बजे सेंसेक्स 163 अंक या 0.20 प्रतिशत की तेजी के साथ 81,008 और निफ्टी 29 अंक या 0.13 प्रतिशत की बढ़त के साथ 24,487 पर था। एचडीएफसी बैंक, पर्सिस्टेंट सिस्टम्स, इन्फो एज (नौकरी), डिक्सन टेक्नोलॉजीज, ओबेरॉय रियल्टी, पीबी फिनटेक (पॉलिसीबाजार), कैप्लिन प्वाइंट लैबोरेटरीज, ईक्लर्क्स सर्विसेज, एफल (इंडिया), दीपक फर्टिलाइजर्स एंड पेट्रोकेमिकल्स और केनेस टेक्नोलॉजी इंडिया जैसे शेयर अपने ऑल-टाइम हाई के करीब कारोबार कर रहे हैं। बाजार में व्यापक तेजी बनी हुई है। बैंक निफ्टी इसका नेतृत्व कर रहा है। फिलहाल यह 361 अंक या 0.68 प्रतिशत की बढ़त के साथ 53,054 पर है। मार्केट एक्सपर्ट्स ने कहा, बाजार से संकेत थोड़े भ्रमित करने वाले हैं। बाजार ने दूसरी तिमाही के जीडीपी विकास में मंदी को नजरअंदाज कर दिया है। एफआईआई की भारी बिकवाली के बावजूद बाजार लचीला बना हुआ है। ट्रंप के राष्ट्रपति बनने के बाद कई संभावित बाधाएं हैं। निफ्टी के वित्त वर्ष 2026 की अनुमानित आय के 20 गुना के आसपास कारोबार कर रहा है, जो दिखाता है कि बाजार का वैल्यूएशन अधिक है। शेयर बाजार की शुरुआत तेजी के साथ हुई थी। सुबह करीब 9:36 बजे सेंसेक्स 248.37 अंक या 0.31 प्रतिशत की बढ़त के साथ 80,094.12 पर कारोबार कर रहा था, जबकि निफ्टी 76.90 अंक या 0.31 प्रतिशत की बढ़त के साथ 24,534.05 पर कारोबार कर रहा था। हालांकि, निफ्टी 24,500 के स्तर के ऊपर टिकने में कामयाब नहीं रहा।

बांग्लादेश ने 15 साल बाद वेस्टइंडीज में जीता टेस्ट मैच, सीरीज हुई बराबर

किंग्स्टन(एजेंसी)। बांग्लादेश ने 15 साल बाद वेस्टइंडीज में अपनी पहली टेस्ट जीत दर्ज की। सबीना पार्क में खेले गए दूसरे टेस्ट में बांग्लादेश ने मेजबान वेस्टइंडीज को 101 रनों से हराया। दूसरी पारी में जाकिर अली की शानदार 91 रनों की पारी ने वेस्टइंडीज को जीत के लिए 287 रनों का लक्ष्य दिया। इसके बाद बाएं हाथ के स्पिनर तैजुल इस्लाम ने घातक गेंदबाजी करते हुए 5 विकेट लेकर वेस्टइंडीज की टीम को 185 रनों पर ऑलआउट कर दिया। तैजुल इस्लाम 5-50 का शानदार प्रदर्शन करके मैच के हीरो बने। यह टेस्ट क्रिकेट में उनका 15वां पांच विकेट हॉल था। चौथे दिन तैजुल की गेंदबाजी ने बांग्लादेश को जुलाई 2009 के बाद कैरेबियन में पहली टेस्ट जीत दिलाई। तैजुल ने कहा, विदेश में टेस्ट मैच जीतना बहुत खास है, जो हम अक्सर नहीं कर पाते। सभी खिलाड़ियों ने जबरदस्त मेहनत की। इस जीत से बांग्लादेश ने दो मैचों की सीरीज 1-1 से बराबर कर ली और आईसीसी वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप रैंकिंग में आठवां स्थान हासिल किया। हालांकि तैजुल ने दूसरी पारी में 5/50 लेकर सुर्खियां बटोरीं, लेकिन इस जीत में उनके अन्य साथियों का भी बड़ा योगदान रहा। नवोदित तेज गेंदबाज नाहिद राणा ने पहली पारी में 5-61 लेकर अपने टेस्ट करियर का पहला पांच विकेट हॉल लिया। तेज गेंदबाज तास्किन अहमद ने लगातार अच्छी गेंदबाजी की और उन्हें सीरीज का संयुक्त सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया। वहीं, जाकिर अली ने महत्वपूर्ण 91 रन बनाकर वेस्टइंडीज के सामने 287 रन का लक्ष्य रखा। मेजबान टीम की ओर से कावेम हॉज (55) और कप्तान क्रैग ब्रैथवेट (43) ने संघर्ष किया, लेकिन तैजुल ने सही समय पर विकेट लेकर बांग्लादेश को चौथे दिन यह यादगार जीत दिलाई। इस हार के बाद वेस्टइंडीज के कप्तान क्रेग ब्रेथवेट ने कहा कि हम सकारात्मक होना चाहते थे और मुझे लगता है शुरुआत भी हमने ठीक की थी लेकिन निश्चित तौर पर हम आगे इसको जारी नहीं कर पाए और दिन के अंत में निराश करने वाला प्रदर्शन रहा।

शाहीन को टेस्ट में आराम, पाकिस्तान के दक्षिण अफ्रीका दौरे में सभी प्रारूपों में खेलेंगे

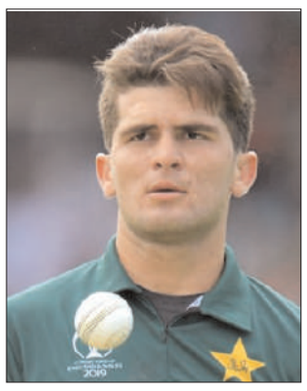

लाहौर(एजेंसी)। पाकिस्तान ने आगामी दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए टीम की घोषणा कर दी है, जिसमें बाबर आजम के साथ मोहम्मद रिजवान, सैम अयूब और सलमान अली आगा को तीनों टीमों में शामिल किया है। इस दौरे में तीन टी20, तीन वनडे और दो टेस्ट शामिल हैं, जो 10 दिसंबर से 7 जनवरी तक चलेगा। तेज गेंदबाज शाहीन शाह अफरीदी, जो इंग्लैंड के खिलाफ पिछले दो टेस्ट से भी चूक गए थे, उन्हें कार्यभार प्रबंधन के तहत सफेद गेंद के मैचों के लिए चुना गया है। नसीम शाह को टेस्ट और वनडे के लिए चुना गया है। चयन समिति के सदस्य और अंतरिम सफेद गेंद हेड कोच आकिब जावेद ने कहा, शाहीन शाह अफरीदी को टेस्ट टीम से बाहर करना एक रणनीतिक फैसला है, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वह आईसीसी चैंपियंस ट्रॉफी 2025 के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तरोताजा रहें। इसी तरह, फखर जमान के नाम पर विचार नहीं किया गया, क्योंकि वह अभी फॉर्म और मैच फिटनेस हासिल नहीं कर पाए हैं। तेज गेंदबाज मोहम्मद अब्बास भी टेस्ट टीम में वापसी कर रहे हैं, जिन्होंने आखिरी बार अगस्त 2021 में जमैका में खेला था। इंग्लैंड के खिलाफ आखिरी दो टेस्ट से चूकने के बाद नसीम को भी चार सदस्यीय तेज गेंदबाजी आक्रमण में शामिल किया गया है। पिछले महीने श्रीलंका ए के खिलाफ पाकिस्तान शाहीन्स के लिए 15 विकेट लेने वाले तेज गेंदबाज खुर्रम शहजाद को भी टेस्ट टीम में शामिल किया गया है। 15 सदस्यीय टेस्ट टीम में चौथे तेज गेंदबाज मीर हमजा हैं। जावेद ने कहा, इंग्लैंड के खिलाफ शानदार प्रदर्शन के बावजूद साजिद खान को बाहर रखना एक बहुत ही कठिन और मुश्किल फैसला था।

कप्तान हार्दिक पांड्या नहीं खेल पाएंगे पहला मैच, मुंबई इंडियंस को बड़ा झटका

नई दिल्ली(एजेंसी)। आईपीएल 2025 के मेगा ऑक्शन से पहले मुंबई इंडियंस ने साफ कर दिया था कि अपकमिंग सीजन में भी टीम की कमान हार्दिक पांड्या के हाथों में ही होगी. लेकिन, इससे पहले मुंबई के लिए एक बुरी खबर सामने आई है. टीम के कप्तान हार्दिक अगले सीजन का पहला मैच नहीं खेल पाएंगे, क्योंकि बीसीसीआई ने उनपर बैन लगा दिया है. तो आइए आपको उस वजह के बारे में बताते हैं, जिसके चलते कैप्टन पर ये बैन लगा है. आईपीएल 2025 को शुरू होने में अभी टाइम है, लेकिन इससे पहले मुंबई इंडियंस को बड़ा झटका लगा है. उनके कप्तान यानी हार्दिक पांड्या अपकमिंग सीजन का पहला मैच मिस करने वाले हैं. बात कुछ ऐसी है कि कप्तान हार्दिक के ऊपर स्लो ओवर रेट की वजह से बैन लगाया गया है. नियम के मुताबिक आईपीएल के एक सीजन में 3 बार स्लो ओवर रेट पाए जाने पर टीम के कप्तान पर 1 मैच का बैन लगा दिया जाता है और आईपीएल 2024 में मुंबई 3 बार स्लो ओवर रेट की दोषी पाई गई. यही वजह है कि अब आईपीएल 2025 में हार्दिक पहला मैच नहीं खेल पाएंगे. अब जब हार्दिक पांड्या पहला मैच नहीं खेल पाएंगे, तो सवाल उठता है कि आखिर उनकी गैरमौजूदगी में मुंबई इंडियंस की कप्तानी कौन करेगा? वैसे तो मुंबई के पास कप्तानी विकल्पों की कमी नहीं है. हार्दिक पांड्या, रोहित शर्मा और सूर्यकुमार यादव में से कोई भी खिलाड़ी ये जिम्मेदारी बखूबी संभाल सकता है. मगर, रिपोर्ट्स की मानें, तो हार्दिक की गैरमौजूदगी में आईपीएल 2025 में सूर्या टीम की कप्तानी करते नजर आ सकते हैं.

फोनपे ने लॉन्च किया 59 रुपये प्रति वर्ष पर डेंगू और मलेरिया के लिए किफायती बीमा प्लान

नई दिल्ली(एजेंसी)। फोनपे ने मंगलवार को डेंगू और मलेरिया के लिए एक नया और किफायती बीमा प्लान लॉन्च किया है, जिसकी शुरुआत सिर्फ 59 रुपये प्रति वर्ष से होती है। यह स्वास्थ्य बीमा प्लान डेंगू, मलेरिया और अन्य वायु व मच्छर जनित बीमारियों के लिए एक लाख रुपये तक का कवर प्रदान करता है। खासतौर पर टियर-2 और टियर-3 शहरों में रहने वाले लोग इस बीमा के जरिए सालभर किसी भी अप्रत्याशित मेडिकल खर्च से बच सकते हैं। यह प्लान 10 से अधिक बीमारियों को कवर करता है, जैसे मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया, फाइलेरिया, जापानी इंसेफेलाइटिस, स्वाइन फ्लू, बर्ड फ्लू, टाइफाइड, पल्मोनरी ट्यूबरक्लोसिस और मेनिन्जाइटिस। इसमें अस्पताल में भर्ती, टेस्ट और आईसीयू में इलाज का खर्च भी शामिल है। अन्य बीमा योजनाओं की तरह यह प्लान केवल मानसून तक सीमित नहीं है। यह साल भर सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे फोनपे उपयोगकर्ता किसी भी समय बीमा का लाभ ले सकते हैं। इस प्लान को फोनपे ऐप पर तुरंत खरीदा, प्रबंधित और क्लेम किया जा सकता है। 100 डिजिटल प्रोसेस होने के कारण क्लेम जल्दी और आसानी से सुलझाए जाते हैं। यहां तक कि जिनके पास पहले से कॉर्पोरेट स्वास्थ्य बीमा है, वे भी इस प्लान को अतिरिक्त सुरक्षा के लिए चुन सकते हैं। फोनपे बीमा ब्रोकिंग सर्विसेज के सीईओ, विशाल गुप्ता ने कहा, हमारा उद्देश्य बीमा को हर किसी के लिए सुलभ और किफायती बनाना है। यह नया प्लान उपयोगकर्ताओं को पूरे साल व्यापक सुरक्षा प्रदान करने के हमारे संकल्प को दर्शाता है। इससे लोग स्वास्थ्य संबंधी जोखिमों को बेहतर तरीके से संभाल सकते हैं और आर्थिक बाधाओं से बच सकते हैं। उन्होंने आगे कहा, हम डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग कर देश के लोगों को उनकी जरूरतों के हिसाब से बीमा समाधान प्रदान करना चाहते हैं, ताकि हर भारतीय को मानसिक शांति मिल सके। यह बीमा फोनपे ऐप पर इंश्योरेंस सेक्शन में जाकर और डेंगू और मलेरिया विकल्प चुनकर खरीदा जा सकता है।

एचडीएफसी बैंक का 16वां वार्षिक रक्तदान अभियान 6 दिसंबर 2024 को

मुंबई, : भारत का अग्रणी निजी क्षेत्र का बैंक एचडीएफसी बैंक अपनी प्रमुख सीएसआर पहल, परिवर्तन के तहत अपने राष्ट्रव्यापी रक्तदान अभियान के 16वें संस्करण का आयोजन करने जा रहा है। 6 दिसंबर, 2024 को सुबह 9:30 बजे से शाम 5:30 बजे तक चलने वाला यह अभियान भारत भर के 1100 से अधिक शहरों में चलाया जाएगा।

इस साल, एचडीएफसी बैंक को पिछले साल की तुलना में अधिक भागीदारी की उम्मीद है और इस रक्त अभियान के तहत 6 लाख यूनिट से अधिक रक्त एकत्र करने की उम्मीद हैइस साल, एचडीएफसी बैंक को पिछले साल की तुलना में अधिक भागीदारी की उम्मीद है और इस रक्त अभियान के तहत 6 लाख यूनिट से अधिक रक्त एकत्र करने की उम्मीद है। प्रतिभागियों में एचडीएफसी बैंक के कर्मचारी, ग्राहक, कॉर्पोरेट, रक्षा बलों के सदस्य, छात्र और सामान्य समुदाय के सदस्य शामिल होंगे। यह पहल समुदाय कल्याण के लिए बैंक की प्रतिबद्धता पर जोर देती है और भारत की रक्त आपूर्ति चुनौतियों का समाधान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

एचडीएफसी बैंक के उप प्रबंध निदेशक श्री कैजाद भरुचा ने कहा, एचडीएफसी बैंक में, हम समुदाय द्वारा संचालित पहलों की परिवर्तनकारी शक्ति में दृढ़ता से विश्वास करते हैं।

कार्यालय कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खंड, बालोद (छ.ग.)

निविदा क्र. 42 से 46/ले.शा./ज.जी.म/ का.अ. / लो.स्वा.यां. खण्ड / 2024 बालोद, दिनांक: 03-12-2

ई-प्राक्योरमेंट द्वितीय निविदा आमंत्रण सूचना

ऑनलाईन निविदाएं प्रपत्र-ए में प्रतिशत दर पर नीचे उल्लेखित कार्य के लिये कार्यपालन अभियंता लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बालोद द्वारा के एकीकृत पंजीयन व्यवस्था ई-रजिस्ट्रेशन की सक्षम श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से आनलाईन निविदा आमंत्रित की जाती है।

कार्य का विवरण-बालोद जिले के वि.खं. डौण्डी, डौण्डीलोहारा तथा गुरूर के विभिन्न ग्रामों में जल जीवन मिशन अंतर्गत नलकूप खनन का कार्य।

	नि.सू.क्र./ सिस्टम नं.	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत (लाख रूपये)
1	42/162242	विकासखंड डौण्डी के विभिन्न ग्रामों में 09 नग।	रु. 9.99 लाख
2	43/162243	विकासखंड डौण्डी के विभिन्न ग्रामों में 09 नग।	रु. 11.07 लाख
3	44/162244	विकासखंड डौण्डीलोहारा के विभिन्न ग्रामों में 10 नग।	रु. 12.30 लाख
4	45/162245	विकासखंड डौण्डीलोहारा के विभिन्न ग्रामों में 10 नग।	रु. 12.30 लाख
5	46/162246	विकासखंड डौण्डीलोहारा तथा गुरूर के विभिन्न ग्रामों में 11 नग।	रु. 12.21 लाख

1. बिड सबमिशन प्रारंभ की तिथि - 05/12/2024
2. बिड सबमिशन की अंतिम तिथि - 17/12/2024

उपरोक्त कार्यों की निविदा की सामान्य शर्तें, धरोहर राशि, विस्तृत निविदा विज्ञप्ति, निविदा दस्तावेज व अन्य जानकारी ई-प्रोक्योरमेंट वेब पोर्टल http://eproc.cgstate.gov.in दिनांक 05/12/2024 से एवं कार्यालयीन समय पर कार्यालय में देखे जा सकते है।

कार्यपालन अभियंता
लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी खण्ड बालोद
जिला-बालोद (छ.ग.)

जी- 242504309/4

सैमसंग की टीवी की क्लाउड टेक्नोलॉजी ने भारत में होम एंटरटेनमेंट के अनुभव को और बेहतर बनाया

गुरुग्राम: - भारत के सबसे बड़े कंज्यूमर इलेक्ट्रॉनिक्स ब्रांड सैमसंग ने सैमसंग टीवीकी क्लाउड टेक्नोलॉजी को लॉन्च किया है जोकि टीवी देखने के अनुभव में बड़ा बदलाव लेकर आएगी। यह उद्योग का पहला सॉल्यूशन है जो आपको सेट-टॉप बॉक्स के बिना लाइव टेलीविजन देखने की सुविधा देता है। नागराविजन के साथ मिलकर विकसित की गई यह नई टेक्नोलॉजी उपभोक्ताओं को पारंपरिक सेट-टॉप बॉक्स के बिना शानदार मनोरंजन का आनंद उठाने का मौका देती है। टीवीकी क्लाउड के साथ लाइव टीवी के भविष्य को सरल बनाते हुए, यूजर अब एक ही सैमसंग स्मार्ट टीवी रिमोट का उपयोग करके अपने सभी पसंदीदा लाइव और ऑन-डिमांड सामग्री को एक्सेस कर सकते हैं। यह अतिरिक्त केबल और हार्डवेयर को कम करने, स्वच्छ, आधुनिक और अत्यधिक सहज विजुअल अनुभव मुहैया कराने की दिशा में एक प्रमुख उपलब्धि है। यह टेक्नोलॉजी सैमसंग के 2023 और 2024 कनेक्टेड टीवी मॉडल के साथ कॉम्पैटिबल है, जिसमें अल्ट्रा एचडी, ओएलईडी, क्यूएलईडी और नियो क्यूएलईडी शामिल हैं। यह अत्याधुनिक टेक्नोलॉजी सेवा प्रदाता के ग्राहकों को टीवीकी की अनूठी ऑन-चिप सिक्योरिटी का उपयोग करके प्रीमियम सामग्री तक पहुंचने की अनुमति देती है, जिससे उच्च स्तर का कॉन्टेंट प्रोटेक्शन मिलता है। एसआरआई-बेंगलुरू के मैनेजिंग डायरेक्टर दीपेश शाह ने कहा, डिजिटल इंडिया को सशक्त बनाने की दिशा में इनोवेशन की श्रृंखला में टीवीकी क्लाउड टेक्नोलॉजी सैमसंग की बिल्कुल नई टेक्नोलॉजी है। यह केबल और सैटेलाइट टीवी प्रोवाइडर्स को सुरक्षित और उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री प्रदान करने में मदद करती है ताकि उपभोक्ता सैमसंग टीवी पर अपनी पसंदीदा सामग्री का बिना किसी परेशानी के आनंद ले सकें। यह नई टेक्नोलॉजी भारत के टेलीविजन उद्योग में नया मानक स्थापित करेगी। चाहे यह शुद्ध ब्रॉडकास्ट हो, हाइब्रिड ब्रॉडकास्ट-ओटीटी, या ओटीटी-केबल सेवाएं, टीवीकी क्लाउड सर्विस मुहैया कराने वाले को उनके सेट-टॉप बॉक्स कार्यक्षमता के साथ सीधे टीवी पर उच्च गुणवत्ता वाले कॉन्टेंट वितरित करने की अनुमति देता है। यह कॉन्टेंट कन्वर्जेंस सुनिश्चित करता है कि उपभोक्ता सर्वोच्च सुरक्षा के साथ बेहतरीन मनोरंजन का आनंद लें। कनेक्टेड टीवी के चिपसेट में सीधे एंबेडेड, यह आधुनिक सिक्योरिटी फीचर्स बौद्धिक संपदा को सुरक्षित रखते हुए प्रीमियम सामग्री प्रदान करती है। इससे यह भी सुनिश्चित होता है कि कॉन्टेंट प्रोवाइडर्स अपने दीर्घकालिक कॉन्टेंट इन्वेस्टेमेंट की सुरक्षा कर सकते हैं।

दैनिक
विश्व परिवार
महानगर

www.dainikvishwapariwar.com
vishwapariwarraipur@gmail.com

रायपुर, शुक्रवार 06 दिसम्बर 2024

मुख्यमंत्री ने बाबा साहब अम्बेडकर की पुण्यतिथि पर किया नमन

रायपुर (विसं)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने भारत रत्न बाबा साहब डॉ. भीमराव अम्बेडकर की 6 दिसम्बर को पुण्यतिथि पर उन्हें नमन किया है। श्री साय ने कहा है कि बाबा साहब बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। अनेक भाषाओं के जानकार होने के साथ ही वे विधिवेत्ता, अर्थशास्त्री, समाज सुधारक और कुशल राजनीतिज्ञ भी थे। उन्होंने सामाजिक भेदभाव और छूआ-छूत के विरूद्ध अभियान चलाया और सबके लिए समान अधिकार, स्वतंत्रता और व्यवहार की वकालत की। बाबा साहब का देश की उन्नति के लिए दिया गया अतुलनीय योगदान हमेशा याद किया जाएगा।

संक्षिप्त समाचार

सेना में अग्निवीर के लिए भर्ती रैली 351 युवाओं ने की दौड़ पास

रायगढ़ (विश्व परिवार)। अग्निवीर भर्ती रैली के दूसरे दिन छत्तीसगढ़ के 07 जिलों सक्ती, कोरबा, मुंगेली, रायगढ़, बीजापुर, गरियाबंद और सरगुजा के युवाओं ने अपना कौशल दिखाया। आज, कुल 1063 उम्मीदवारों ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। उम्मीदवारों ने एक दूसरे से प्रतिस्पर्धा करने में बहुत उत्साह और शारीरिक दृढ़ता दिखाई और इसमें से 351 युवाओं ने दौड़ पास की है। दौड़ पास उम्मीदवारों को इसके बाद शारीरिक प्रवीणता, कागजी कार्यवाही और मेडिकल जांच की प्रक्रिया से गुजरना होगा। गौरतलब है कि छत्तीसगढ़ प्रदेश के 33 जिलों के लिए आयोजित सेना भर्ती के लिए 8556 युवाओं ने सीईई परीक्षा पास की थी। जिला प्रशासन रायगढ़ और सेना भर्ती कार्यालय रायपुर के संयुक्त सहयोग से भर्ती प्रक्रिया सुचारू रूप से चल रही है तथा युवाओं में इस रैली भर्ती के प्रति अपार उत्साह देखा जा रहा है। भारतीय सेना में चयन निष्पक्ष, पारदर्शी केवल योग्यता के आधार पर होती इसलिए सेना भर्ती कार्यालय ने अनाधिकृत व्?यक्तियों से सावधान रहने की अपील की है।

नगरीय प्रशासन विभाग ने निर्माण कार्यों के लिए मंजूर किए तीन करोड़ से अधिक की राशि

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य शासन के नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने सूरजपुर नगर पालिका में विभिन्न निर्माण कार्यों के लिए तीन करोड़ एक लाख 80 हजार रुपए स्वीकृत किए हैं। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव के अनुमोदन के बाद विभाग ने अधोसंरचना विकास के 45 कार्यों के लिए राशि मंजूरी का आदेश जारी किया है। इनमें सूरजपुर नगर पालिका के विभिन्न वार्डों में सीसी रोड निर्माण के 28, नाली निर्माण के 12, सीसी रोड बाइडिंग के दो तथा योगा शेड निर्माण, रिटेनिंग वाल निर्माण एवं फ्लड लाइट स्थापना के एक-एक कार्य शामिल हैं। नगरीय प्रशासन विभाग ने सूरजपुर नगर पालिका के मुख्य नगर पालिका अधिकारी से प्राप्त प्रस्तावों के आधार पर चालू वित्तीय वर्ष 2024-25 में अधोसंरचना मद से तीन करोड़ एक लाख 80 हजार रुपए का यह अनुदान स्वीकृत किया है। विभाग ने सीसी रोड निर्माण के 28 कार्यों के लिए एक करोड़ 55 लाख 64 हजार रुपए, नाली निर्माण के 12 कार्यों के लिए 83 लाख 42 हजार रुपए और सीसी रोड बाइडिंग के दो कार्यों के लिए 15 लाख तीन हजार रुपए मंजूर किए हैं। सूरजपुर नगर पालिका के वार्ड क्रमांक-4, कृष्ण कुंज में योगा शेड निर्माण के लिए 11 लाख 59 हजार रुपए और कृष्ण कुंज मार्ग में रिटेनिंग वाल के निर्माण के लिए 22 लाख 71 हजार रुपए स्वीकृत किए गए हैं। विभाग ने वार्ड क्रमांक-12 में फ्लड लाइट की स्थापना के लिए 13 लाख 41 हजार रुपए की मंजूरी दी है।

सांस्कृतिक विविधता हमें समृद्ध और शक्तिशाली बनाती है : राज्यपाल रमेन डेका

राजभवन में रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया 5 राज्यों एवं केंद्र शासित प्रदेशों का स्थापना दिवस

रायपुर (विश्व परिवार)। राजभवन में ''एक भारत श्रेष्ठ भारत'' कार्यक्रम के तहत आज छत्तीसगढ़ सहित 05 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों का स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर राज्यपाल श्री रमेन डेका ने कहा कि सांस्कृतिक विविधता हमें समृद्ध और शक्तिशाली बनाती है। राजभवन में राज्यपाल रमेन डेका के मुख्य आतिथ्य में भारत के राज्यों क्रमशः छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, पंजाब, हरियाणा और केंद्र शासित प्रदेश चंडीगढ़ का स्थापना दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की पहल पर शुरू की गई केन्द्र सरकार के एक भारत-श्रेष्ठ भारत कार्यक्रम के तहत विविधता में एकता की भावना को बढ़ावा देने के लिए सभी राज्य एक-दूसरे राज्यों का स्थापना दिवस मना रहे हैं। इसी कड़ी में राजभवन में यह कार्यक्रम आयोजित किया गया था। जिसमें छत्तीसगढ़ में निवास करने वाले इन राज्यों के लोगों ने उत्साह के साथ भाग लिया।

कार्यक्रम में राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम का उद्देश्य केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है। यह कार्यक्रम हमारे देश के विभिन्न राज्यों में बसे निवासियों को एक सूत्र में पिरोने का अद्भुत प्रयास है, जिससे भारत की एकता और अखंडता और अधिक मजबूत होगी।

श्री डेका ने कहा कि हर राज्य का स्थापना दिवस उस राज्य के इतिहास में और विकास की यात्रा का महत्वपूर्ण दिन होता है। राज्य की समृद्धि और विकास का गवाह यह दिन, हमें अपने राज्य की स्थापना के मूल उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा करने और लोगों की आकांक्षाओं को पूरा करने का रास्ता दिखाता है।

श्री डेका ने सभी राज्यों की विशिष्टताओं का उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ का प्राकृतिक वातावरण और भौगलिक स्थिति अदभुत है। यहां पर्यटन की बहुत संभावनाएं है। उन्होंने कहा कि असम और छत्तीसगढ़ राज्य के बीच पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए प्रयास किया जायेगा। उन्होंने छत्तीसगढ़ के चावल की भी प्रशंसा की। आजादी की लड़ाई में मध्यप्रदेश की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए, वहां के वीर सेनानियों को याद किया। पंजाब राज्य के लोगों की दान शीलता का जिक्र किया। पंजाब का इतिहास बलिदानों से भरा हुआ जिस पर हर देशवासी को गर्व है। पंजाब और हरियाणा राज्य ने हरित क्रांति के माध्यम से देश को एक नई ऊर्जा दी।

श्री डेका ने कहा कि इन सभी राज्यों ने भारत के विकास में अपना अभूतपूर्व योगदान दिया है। चाहे वह कृषि का क्षेत्र हो, उद्योग, कला खेलकूद, शिक्षा या पर्यटन का क्षेत्र हो, सभी क्षेत्रों में, इन राज्यों का योगदान सराहनीय है। हम सब को मिलकर अपने राज्यों को न केवल आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है बल्कि सांस्कृतिक समृद्धि, सामाजिक सद्भाव और आपसी भाईचारे का भी ध्यान रखना है।

भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा होटल कोर्टयार्ड बॉय मैरियट रायपुर में पूर्वी क्षेत्रीय हॉलामार्किंग बैठकों का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। भारतीय मानक ब्यूरो द्वारा दिनांक 05 दिसंबर 2024 को होटल कोर्टयार्ड बॉय मैरियट, रायपुर में पूर्वी क्षेत्रीय हॉलामार्किंग बैठकों का आयोजन किया। इस बैठक में छत्तीसगढ़ एवं निकटवर्ती राज्यों से 170 से अधिक परख और हालमार्किंग केंद्रों के प्रतिनिधी एवं ज्वेलर्स शामिल रहें। इस बैठक का आयोजन हॉलमार्किंग में उपभोक्ताओं के संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए हुई नई पहल एवं दिशानिर्देशों पर चर्चा करने के लिए किया गया। इस बैठक की अध्यक्षता श्री दिब्येन्दु चक्रवर्ती, उपमहानिदेशक, पूर्वी क्षेत्र एवं श्रीमती चित्रा गुप्ता, उपमहानिदेशक (हॉलमार्किंग) द्वारा की गई। इस अवसर पर श्री एस. सी. दास, वैज्ञानिक-ई एवं प्रमुख (हॉलमार्किंग), श्री सुमित कुमार, वैज्ञानिक-ई/निदेशक एवं प्रमुख, रायपुर शाखा कार्यालय, श्री मनोदीप बाग, वैज्ञानिक-डी (हॉलमार्किंग), श्री अक्षय कौशिक, वैज्ञानिक-सी, (हॉलमार्किंग) एवं रायपुर शाखा कार्यालय के समस्त अधिकारीगण सम्मिलित रहें। इस बैठक में हॉलमार्किंग आभूषणों को परखने के लिए इस्तेमाल होने वाले XRF तकनीक के उपर निर्धारित मानक IS 15820: 2023 पर चर्चा हुई। इस दौरान संसदीय स्थायी समिति की हॉलमार्किंग संबंधित सिफारिशों पर चर्चा की भी गई। इस अवसर पर जिला- रायपुर, राजनांदगांव, बलौदाबाजार, बालोद एवं दुर्ग के सराफा, संगठन के अध्यक्षों को सम्मानित किया भी गया।

बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने वेतन पैकेज के लिए छत्तीसगढ़ पुलिस के साथ समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर किए हस्ताक्षर

रायपुर (विश्व परिवार)। बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने छत्तीसगढ़ पुलिस के साथ वेतन पैकेज के लिए एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौते को 04 दिसंबर, 2024 को छत्तीसगढ़ राज्य के माननीय मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय, उपमुख्यमंत्री एवं गृह मंत्री श्री विजय शर्मा, श्री गुरु खुशवंत साहेब विधायक आरंग, श्री मनोज कुमार पिंगुआ, अतिरिक्त मुख्य सचिव गृह, श्री अशोक जुनेजा डीजीपी छत्तीसगढ़ पुलिस, श्री प्रदीप गुप्ता एडीजी छत्तीसगढ़ पुलिस की उपस्थिति में औपचारिक रूप दिया गया।

इस अवसर पर बैंक ऑफ़ बड़ौदा के मुख्य रक्षा बैंकिंग सलाहकार, लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) रणबीर सिंह सलारिया, पी वीएसएम, वी एस एम और श्री दिवाकर प्रसाद सिंह, महाप्रबंधक और जोनल प्रमुख, रायपुर जोनने छत्तीसगढ़ पुलिस की ओर से श्री एसआरपी कल्लूरी आईपीएस (आईजीपी-एडमिन) के साथ समझौता पत्र एक दूसरे को साझा किया। इस कार्यक्रम में श्री किसलय प्रसाद, डीजीएम और क्षेत्रीय प्रमुख, बैंक ऑफ बड़ौदा, रायपुर और बैंकएवं छत्तीसगढ़ पुलिस विभाग के कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। बैंक ऑफ़ बड़ौदा ने इस पैकेज के साथ पुलिस जवानों के लिए 10 लाख रुपये का इनबिल्ट लाइफ इंश्योरेंस कवर और 130 लाख रुपये तक का एक्सीडेंटल इंश्योरेंस ऑफ़र सहित मृतक के बच्चों की शिक्षा के लिए विशेष सहायता का प्रावधान किया है।

रामकृष्णा केयर अस्पताल, रायपुर में सफल अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण और कोड रेड मॉक ड्रिल का आयोजन

रायपुर (विश्व परिवार)। रामकृष्णा केयर अस्पताल रायपुर ने दिनांक 29/11/2024 अपने परिसर में अग्नि सुरक्षा की महत्वपूर्ण ट्रेनिंग और कोड रेड मॉक ड्रिल का सफल आयोजन किया। इस मॉक ड्रिल में टिकरापारा फायर ब्रिगेड टीम द्वारा अग्नि सुरक्षा प्रशिक्षण प्रदान किया गया, जिसमें अस्पताल के सभी कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया।

फायर ब्रिगेड की टीम ने प्रशिक्षण के दौरान आग से बचने के उपाय, सुरक्षा की महत्वपूर्ण जानकारी, और आग से संबंधित विभिन्न घटनाओं के दौरान सावधानी बरतने के तरीके बताए। इसके अलावा, टीम ने प्रैक्टिकल डेमो भी दिया, जिसमें आग बुझाने की सही तकनीकों और उपकरणों का उपयोग करके कर्मचारियों को वास्तविक परिस्थितियों में त्वरित प्रतिक्रिया करने का तरीका बताया।

मॉक ड्रिल के दौरान, ब्लॉक की तीसरी मंजिल के निजी वार्ड में एक कमरे के अंदर सुरक्षित सावधानि पूर्वक आग जलाई गई थी। जैसे ही आग की घटना की सूचना अस्पताल के स्टाफ को मिली, तत्काल अस्पातल इमरजेंसी नंबर पर कॉल किया और कोड रेड का अनाउंसमेंट किया गया, जिसके बाद कोड रेड टीम सक्रिय हुई। चार टीमों का गठन किया गया, जिनमें अग्नि बुझाने वाली टीम, अग्नि बचाव टीम, क्षतिग्रस्त संपत्ति को बचाने वाली टीम (साल्वेज) टीम और प्राथमिक उपचार (फर्स्ट एड) टीम शामिल थीं।

अग्नि बुझाने वाली टीम ने तत्काल आग पर काबू पाया, जबकि अग्नि बचाव टीम ने दो मरीजों को सुरक्षित रूप से आग के क्षेत्र से बाहर निकाला और उन्हें अस्पताल के आपातकालीन विभाग में आगे के उपचार के लिए भेजा। सुरक्षा गार्डों ने फायर हाइड्रेट और होज़ रील का संचालन किया, और मरीजों को इवैक्यूएशन रेस्क्यू स्ट्रेचर के माध्यम से सुरक्षित स्थान पर पहुंचाया। इस मॉक ड्रिल के दौरान सभी टीमों ने अपनी जिम्मेदारी पूरी तत्परता से निभाई और अस्पताल के कर्मचारियों ने इसे एक सफल अग्नि सुरक्षा अभ्यास मानते हुए सराहना की। यह ड्रिल रामकृष्णा केयर अस्पताल के कर्मचारियों की तत्परता और उनके पेशेवर प्रशिक्षण को प्रदर्शित करती है, जिससे अस्पताल में अग्नि दुर्घटनाओं की स्थिति में त्वरित और प्रभावी प्रतिक्रिया सुनिश्चित की जा सकती है।

इस आयोजन के माध्यम से, अस्पताल ने अग्नि सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को भी पुन: व्यक्त किया है और भविष्य में ऐसी और मॉक ड्रिल आयोजित करने का संकल्प लिया है।

एचडीएफसी बैंक की 31वीं शाखा स्टेशन रोड रायपुर में स्थापित

छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कामर्स एंड इंडस्ट्रीज के कार्यकारी अध्यक्ष एवं रायपुर मशीनरी मर्चेन्ट एसोसियेशन के अध्यक्ष एवं राजेन्द्र जग्गी के करकमलों से बैंक का उद्घाटन

रायपुर (विश्व परिवार)। रायपुर मशीनरी मर्चेन्ट एसोसियेशन के सचिव अनिल दुग्गड़ ने बताया कि आज 5 दिसम्बर 2024 को स्टेशन रोड, रायपुर में एचडीएफसी बैंक की 31वीं शाखा का उद्घाटन छत्तीसगढ़ चेम्बर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्रीज के कार्यकारी अध्यक्ष एवं रायपुर मशीनरी मचेन्ट एसोसियेशन के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र जग्गी के करकमलों से बैंक का विधिवत् उद्घाटन फीता काटकर किया गया।

इस अवसर पर श्री जग्गी ने हर्ष व्यक्त करते हुए एचडीएफसी बैंक की उत्तरोत्तर प्रगति की कामना करते हुए कहा कि स्टेशन रोड में बैंक की शाखा खुलने से आसपास के व्यापारियों एवं आम नागरिकों को बैंक में लेन-देन की सुविधा सुचारू रूप से होगी एवं व्यापारियों को समय-समय पर चिल्हर एवं नई करेंसी नोट आसानी से उपलब्ध हो सकेगी। एचडीएफसी बैंक के रीजनल हेड इकबाल सिंह ने बताया कि यह छत्तीसगढ़ में रायपुर की 31वीं ब्रांच है व्यापारियों के लिए यह ब्रांच सुविधाजनक होगी रोज के व्यापारीक ट्रांजैक्शन करने में आसानी होगी। उन्होंने व्यापारियों के लिए समस्त बैंकिंग सर्विसेज एवं सरकार की योजनाओं को हर व्यापारी तक पहुंचाने का वादा किया। उद्घाटन अवसर पर बैंक के सर्किल हेड विकास गोयल, क्लस्टर हेड सुनील राम पाटकी, ब्रांच हैड पबीत्र पंडी एवं रायपुर मशीनरी मर्चेंट एसोसिएशन के सचिव अनिल दुग्गड़, कोषाध्यक्ष अमित अग्रवाल, उपाध्यक्ष मनोज जैन, हरसुख पटेल, सह सचिव हंसाराम चैधरी, सोयब अंसारी, वरिष्ठ सुशील सराफ, गिरीश संघवी, मंगल शाह, पवन लूनिया, राजेंद्र खटवानी, कुलदीप जैन, मनोज पंजवानी, हेमंत जैन आदि विशेष रूप से उपस्थित थे।

सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से भारत को सशक्त करना, सीएससी और कैट ने मिलाया हाथ : अमर पारवानी

रायपुर (विश्व परिवार)। देश के सबसे बड़े व्यापारिक संगठन कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष अमर पारवानी, चेयरमेन मगेलाल मालू, अमर गिदवानी, प्रदेश अध्यक्ष जितेन्द्र दोशी, कार्यकारी अध्यक्ष विक्रम सिंहदेव, परमानन्द जैन, वाशु माखीजा, महामंत्री सुरिन्द्र सिंह, कार्यकारी महामंत्री भरत जैन, एवं कोषाध्यक्ष अजय अग्रवाल ने बताया कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के लोगों को सामाजिक सेवा योजनाओं से सशक्त बनाने के विजन के तहत, आज नई दिल्ली स्थित कॉन्स्टीट्यूशन क्लब में अयोजित एक समारोह के दौरान इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी मंत्रालय के अंतर्गत सीएससी ई-गवर्नेंस सर्विसेज इंडिया लिमिटेड और कन्फेडरेशन ऑफ ऑल इंडिया ट्रेडर्स (कैट) के बीच एक समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए। इस साझेदारी का उद्देश्य देश भर में अंतिम छोर तक लाभार्थियों की अधिकतम भागीदारी सुनिश्चित करना है।

कैट के राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री अमर पारवानी एवं प्रदेश अध्यक्ष श्री जितेन्द्र दोशी ने बताया कि यह रणनीतिक साझेदारी भारत भर के व्यापारियों और नागरिकों को केंद्र सरकार की सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के तहत लोगों को पंजीकरण में सहायता प्रदान कर सशक्त करेगी जिनमें मुख्य रूप से- 1. राष्ट्रीय पेंशन योजना (एनपीएस) 2. प्रधानमंत्री श्रम योगी मान-धन योजना 3. अटल पेंशन योजना 4. प्रधानमंत्री स्वनिधि योजना 5. लखपति दीदी और डिजी सखी योजना 6. प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना 7. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, और अन्य अनेक योजनाएं।

श्री पारवानी एवं श्री दोशी ने आगे बताया कि इस पहल के तहत, सीएससी कैट के साथ साझेदारी करते हुए बड़ी मात्र में शिविरों का आयोजन करेगा, जिससे इन योजनाओं को सीधे व्यापारियों और आम जनता तक पहुंचाया जाएगा। इसका उद्देश्य लाखों लोगों के वित्तीय भविष्य को सुरक्षित करना और सरकारी कल्याणकारी योजनाओं तक उनकी पहुंच को सरल बनाना है। सीएससी एसपीवी, जो डिजिटल इंडिया मिशन का एक प्रमुख हिस्सा है, पूरे देश में लगभग 6 लाख सीएससी केंद्र संचालित करता है। ये केंद्र डिजिटल और वित्तीय रूप से समावेशी भारत की रीढ़ के रूप में कार्य करते हैं और सरकारी योजनाओं को दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कैट, जो 48, 000 से अधिक व्यापारी एसोसिएशन तथा फेडरेशन के माध्यम से देशभर के 9 करोड़ से अधिक व्यापारियों का प्रतिनिधित्व करता है, व्यापारिक समुदाय और अन्य व्यावसायिक लाभार्थियों के कल्याण और विकास के प्रति समर्पित है। यह समझौता ज्ञापन व्यापारियों और अन्य वर्गों के लिए व्यापक सामाजिक और वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने के कैट के मिशन के साथ मेल खाता है और उनकी आर्थिक भूमिका को और मजबूत करता है। इस अवसर पर, कैट के राष्ट्रीय महामंत्री एवं चांदनी चौक से सांसद श्री प्रवीन खंडेलवाल ने कहा की यह समझौता ज्ञापन भारत के व्यापारिक समुदाय को सशक्त बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। छोटे व्यापारी लंबे समय से भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ रहे हैं।

राज्य में आरक्षण की कार्यवाही समय सीमा में सुनिश्चित करें : राज्य निर्वाचन आयुक्त

नगर पालिकाओं एवं त्रिस्तरीय पंचायतों के आम निर्वाचन 2024-25 : स्थानीय निकायों के आम निर्वाचन की तैयारियों के संबंध में समीक्षा बैठक आयोजित

रायपुर (विश्व परिवार)। राज्य निर्वाचन आयुक्त अजय सिंह की अध्यक्षता में नगर पालिका एवं त्रिस्तरीय पंचायत के आम निर्वाचन 2024-25 हेतु शासन स्तर पर किए जाने वाले कार्यों के संबंध में सामान्य प्रशासन विभाग,नगरीय प्रशासनएवं पंचायत विभाग के वरिष्ठ अधिकारिओं की बैठक आयोजित की गई। यह बैठक अटल नगर नवा रायपुर स्थित आयोग कार्यालय के सभा कक्ष में संपन्न हुई। बैठक में पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग की प्रमुख सचिव निहारिका बारिक सिंह, सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव अविनाश चंपावत, नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग के सचिव श्री बसवराजू एस, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग के विशेष सचिव तारण सिन्हा प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

राज्य निर्वाचन आयुक्त अजय सिंह ने राज्य में आरक्षण की कार्यवाही समय सीमा में सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि परिसीमन और आरक्षण की प्रक्रियाएं चुनाव के लिए बेहद महत्वपूर्ण होती है, जिससे समय पर और निष्पक्ष चुनाव कराया जा सके। आगामी स्थानीय निकाय चुनावों को सुचारू और पारदर्शी ढंग से कराने के लिए तैयारियों का मूल्यांकन किया गया। मतदान दलों के मानदेय एवं उनके परिवहन हेतु वाहनों के किराये के संबंध में समीक्षा की गई।

बैठक में चुनाव से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर गहन चर्चा की गई, जिसमें राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री अजय सिंह ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि सभी विभाग आपसी समन्वय से काम करें, ताकि चुनाव के दौरान किसी प्रकार की अव्यवस्था न हो। आयुक्त श्री सिंह ने कहा कि चुनावी प्रक्रिया के प्रत्येक चरण की नियमित समीक्षा की जाएगी और जरूरत पड़ने पर तत्काल सुधारात्मक कदम उठाए जाएंगे। राज्य निर्वाचन आयुक्त श्री अजय सिंह ने कहा कि निर्वाचन कार्य की आवश्यकता को देखते हुए आयोग एवं जिलों में डिप्टी कलेक्टर के रिक्त पदों तथा जिलों में मुख्य नगरपालिका अधिकारी, मुख्य कार्यपालन अधिकारी-जनपद पंचायत एवं तहसीलदार/नायब तहसीलदार के रिक्त पदों की पूर्ति हो।

प्रकाशक, मुद्रक, स्वामी प्रियेश कुमार जैन द्वारा मे. विश्व परिवार इंडस्ट्रीज, प्लॉट नं.-421 सेक्टर-सी, सड़क नं.-7 उरला इंडस्ट्रीयल एरिया उरला, रायपुर (छ.ग.) से मुद्रित एवं ओलंपस जिम के पीछे, सेक्टर-1, शंकर नगर रायपुर (छ.ग.) से प्रकाशित। संपादक : प्रदीप कुमार जैन, फोन नं. : 0771- 4017966, मो.- 9981924252 RNI.NO.CHHHIN/2013/50354